निवेदन

उस पारब्रह्म परमात्मा जिनेश्वर भगवानको अनेकानेक धन्य-वाद है जिनकी असीम कृपासे यह "हजारीमल माल्लू ग्रन्थमाला" का द्वितीय पुष्प पूर्ण सौरभके साथ आप लोगोंके करकमलोंमें शोभित हुआ है।

उक्त ग्रन्थ मालाको प्रकाशित करनेका अभिप्राय स्वर्गीय पूज्य पिता श्री हजारीमलजी माल्लूकी स्मृतिको चिरस्थायी बनाये रखना तथा सहयोगी जैन बन्धुओंको स्वधर्ममें प्रीति बनाये रखनेके लिये आचार्य मुनियों श्रावकों द्वारा लिखित सुन्दर पद्योंका संग्रह करना है।

ग्रन्थमालाके इस द्वितीय पुष्पका सौरभ पराग भक्तमन भ्रमर ही जान सकेंगे। हमने इस पुस्तकमें पूज्य पिताजीके संग्रहीत पद्यों मेंसे कितने ही पद्य इस संक्षिप्त संग्रहमें दिये हैं।

दृष्टि दोषसे यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो सज्जन वृन्द सुधार कर पढ़ेंगे।

किमधिकम्।

भवदीय—

मङ्गलचन्द माल्लू।

विषय सूचीपत्रम्

विषय — पृष्ठसंख्या

चौबीसी पद

ॐ

समर्पण

सतसंगमें रत रहत जो अरु दया पालत ज्ञानते ।
भक्ति है जिन धर्म की अरु विरत ज्ञान-गुमानतें ॥
चरचा करे नित शास्त्र की सद्धर्म में रति मानते ।
'मंगल' उन्होंके कर कमल अर्पण करे सम्मानते ॥

मंगलचन्द मालू
बीकानेर (राजपूताना)

मुद्रक:—
दुलीचन्द परवार
मालिक—जिनवाणी प्रेस,
८० लोअर चितपुर रोड, कलकत्ता ।
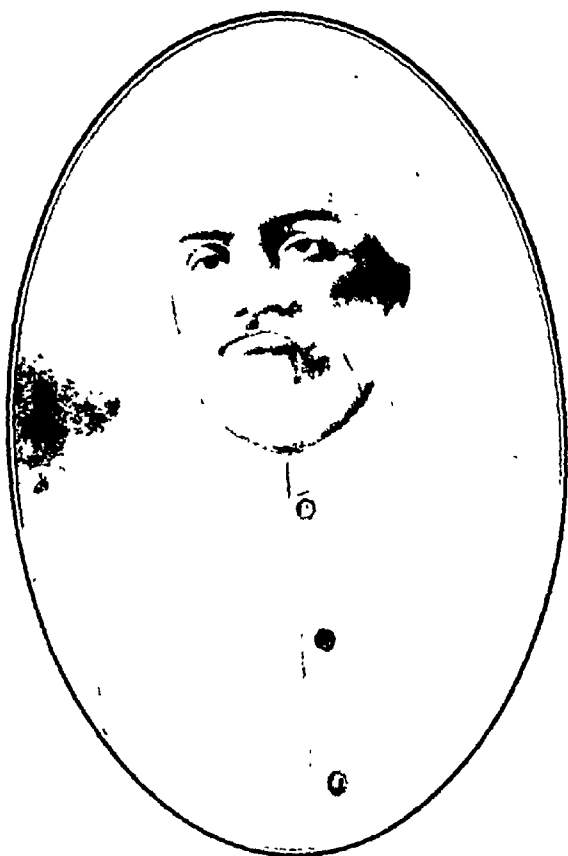
स्व० श्री० पूज्य पिताजी हजारीमलजी मालू

जन्म आश्विन कृ० ८ सं० १८३१ वि०

निर्वाण मि० भाद्रपद शु० १४ सं० १८८६ वि०

॥ श्री मद्वीतरागायनमः ॥

॥ दोहा ॥

कर्म्म कलंक निवारिने, थया सिद्ध महाराज ।
मन वचन काये करी, वंदु तेने आज ॥

१-श्रीआदिनाथजीका स्तवन

॥ ढाल ॥ उमादे भटियाणी ॥ ए देशी ॥

श्री आदीश्वर स्वामी हो । प्रणमू सिरनामी
तुम भणी ॥ प्रभू अंतर जामी आप । मोपर म्हैर

करीजै हो। मेटीजै चिन्ता मनतणी। म्हारा काटो पुरङ्कित पाप॥ श्री आदीश्वर स्वामी हो॥टेर॥६॥ आदि धरमकी कीधी हो। भर्तक्षेत्र सर्पणी काल मैं। प्रभु जुगला धरम निवार। पहिला नरवर १ मुनिवर हो २। तिर्थंकर ३ जिनहूवा ४ केवली ५। प्रभु तीरथ थाप्या चार॥ श्री० २॥ मामरु दिव्या थारी हो। गज हौदे मुक्ति पधारिया। तुम जनम्या ही परमाण। पिता नाभ म्हाराजा हो। भव देव तणो कर नर थया। प्रभू पाम्या पद निरवाण॥ श्री० ३॥ भरतादिक सौ नंदन हो। बे पुत्री ब्राह्मी सुंदरी॥ प्रभू ए थारा अंग जात। सगला केवल पाया हो। समाया अविचल जोत में। केइ त्रिभुवन में विख्यात॥ श्री० ४॥ इत्यादिक बहू तारया हो। जिन कुलमें प्रभु तुम ऊपना। केइ आगममें अधिकार। और असंख्या तारया हो। ऊधारया सेवक आपरा। प्रभू सरणा ही आधार॥श्री०॥५॥ अशरण शरण कहीजै हो।

प्रभू विरद् विचारो सायबा । केइ अहो गरीब निवाज । शरण तुम्हारी आयो हो । हूं चाकर निज चरना तणो । म्हारी सुणिये अरज अवाज ॥ श्री० ६ ॥ तू करुणा कर ठाकुर हो ॥ प्रभु धरम दिवाकर जग गुरू । केइ भव दुषदुकृत टाल । विनयचंदने आपो हो । प्रभू निजगुण संपतसास्वती प्रभू दीनानाथदयाल ॥ श्री० ७ ॥ इति ॥

२-श्रीअजितनाथजीका स्तवन

॥ ढाल कुविसन मारग माथे रे धिग ॥ ए देशी ॥

श्री जिन अजित नमौ जयकारी । तुम देवनको देवजी । जय शत्रु राजाने विजिया राणी कौ । आतम जात तुमेवजी । श्री जिन अजित नमौ जयकारी ॥ टेर ॥ १ ॥ दूजा देव अनेरा जगमें, ते मुझ दाय न आवेजी ॥ तह मन तह चित्त हमनैं एक, तुहीज अधिक सुहावैजी ॥ श्री० २ ॥ सेव्या देव घणा भव २ में । तो पिण गरज न

सारी जी ॥ अबकै श्री जिनराज मिल्यौ तूं । पूरण पर उपकारी जी ॥ श्री० ३ ॥ त्रिभुवनमें जस उज्वल तेरौ, फैल रह्यो जग जानें जी ॥ बंदनीक पूजनीक सकल लोकको । आगम एम बखानें जी ॥ श्री० ४ ॥ तू जग जीवन अंतर-जामी । प्राण आधार पियारो जी ॥ सब बिधिला-यक संत सहायक । भगत वछल बृध थारो जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अष्ट सिद्धि नव निद्धिको दाता । तो सम अवर न कोई जी ॥ बधै तेज सेवकको दिन दिन जेथ तेथ जिम होई जी ॥ श्री० ६ ॥ अनंत ग्यान दर्शण संपति ले ईश भयो अविकारी जी ॥ अविचल भक्ति विनयचंद कूं देवो । तौ जाणू रिझवारीजी ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥

३-श्रीसम्भवनाथजीका स्तवन

॥ ढाल ॥ आज म्हारा पारसजी नै चालो वंदन जइए ॥ ए देशी ॥

आज म्हारा संभव जिनके । हित चितसूं

गुणगास्यां । मधुर २ स्वर राग अलापी। गहरे शब्द गुंजास्यां राज ॥ आज म्हारा संभव जिनके हित चितसूं गुण गास्यां ॥ आ० १ ॥ नृप जितारथ सेन्या राणी। तासुत सेवकथास्यां ॥ नवधा भक्त भावसौ करने । प्रेम मगन हुई जास्यां राज ॥ आ० २ ॥ मन बच कायलाय प्रभू सेती। निसदिन सास उसास्यां ॥ संभव जिनकी मोहनी मूरति । हिये निरन्तर ध्यास्यां राज ॥ आ० ३ ॥ दीन दयालदीन बंधव कै । खाना जाद कहास्यां ॥ तनधन प्रान समरपी प्रभूकों । इन पर बेग रिझास्यां राज ॥ आ० ४ ॥ अष्ट कर्म दल अति जोरावर ते जीत्या सुख पास्यां ॥ जालम मोहमार कै जगसे । साहस करी भगास्यां राज ॥ आ० ५ ॥ कुमट पंथ तजी दुरगतिको । शुभगति पंथ समास्यां ॥ आगम अरथ तणे अनुसारे । अनुभव दशा अभ्यास्यां राज ॥ आ० ६ ॥ काम क्रोध मद लोभ कपट तजि । निज गुणसूं लवलास्यां ॥ बिनैचंद

संभव जिन तूठौ। आवा गवन मिटास्यां राज ॥ आ० ७ ॥ इति ॥

४-श्रीअभिनन्दन स्वामीजीका स्तवन

॥ ढाल ॥ आदर जीव क्षिम्या गुण आदर ॥ ए देशी ॥

श्री अभिनंदन, दुःख निकन्दन, घन्दन पूजन योगजी ॥ श्री० १ ॥ संघर राय सिधारथ राणी। जेंहनों आतम जात जी। प्रान पियारो साहिब सांचौ। तुही जौ मातानें तातजी ॥ श्री० २ ॥ कैइयक सेव करैं शङ्करकी। कैइयक भजै मुरारी जी ॥ गणपति सूर्य उमा कैई सुमरै। हूँ सुमरू अविकारजी॥ श्री० ३ ॥ दैव कृपा संपामें लक्ष्मी। सौ इन भवको सुक्ख जी ॥ तो तूठां इन भव पर भवमें। कदी न व्यापै दुःख जी ॥ श्री० ४ ॥ जदपी इन्द्र नरिन्द्र निवाजें। तदपी करत निहाल जी ॥ तूं पुजनीक नरिन्द्र इन्द्रको। दीन दयाल कृपाल जी ॥ श्री० ५ ॥ जब लग आवागमन न

छूटे। तब लग करूं अरदासजी ॥ सम्पति सहित ज्ञान समकित गुण। पाऊं दृढ़ विसवासजी ॥ श्री० ६ ॥ अधमउधारन वृद्ध तिहारो। जोवो इण संसारजी लाज विनयचन्दकी अब तोनें, भव निधि पार उतारजी ॥ श्री० ७ ॥ इति ॥

५-श्रीसुमतिनाथजीका स्तवन

॥ ढाल ॥ श्रीसीतल जिन साहिबाजी ॥ ए देशी ॥

सुमति जिणेसर साहिबाजी। मगरथ नृप नौ नंद ॥ सुमंगला माता तणो जी। तनय सदां सुखकंद। प्रभू त्रिभुवन तिलोंजी ॥ १ ॥ सुमति सुमति दातार ॥ महा महि मानिलोजी ॥ प्रणमूं वार हजार ॥ प्रभू त्रिभुवन तिलो जी ॥ २ ॥ मधुकर नौ मन मोहियोजी ॥ मालती कुसुम सुवास ॥ त्यूं मुजमन मोह्या सही ॥ जिन महिमा कहि न जाय ॥ प्रभु० ३ ॥ ज्यूं पङ्कज सूरज मुखी जी। विकसे सूर्य्य प्रकाश। त्यूं मुज मनड़ो गह

गहै ॥ कवि जिन चरित हुलास ॥ प्रभु० ४ ॥ पपइयोपीउ पीउ करेजी ॥ जान वर्षाऋतु जेह । त्यूं मोमन निस दिन रहै ॥ जिन सुमरन सूं नेह ॥ प्रभु० ५ ॥ काम भोगनी लालसा जी ॥ थिरता न धरे मन्न ॥ पिण तुम भजन प्रतापथी ॥ दाझे दुरमति बन्न ॥ प्रभु० ६ ॥ भवनिधि पार उतारिये जी । भगत वच्छल भगवान ॥ विनैचंदकी वीनती मानो कृपानिधान ॥ प्रभु० ७ ॥ इति ॥

६-श्रीपद्मप्रभु स्वामीजीका स्तवन

॥ ढाल ॥ स्याम कैसे गजका फन्द छुड़ायो ॥ ए देशी ॥

पद्म प्रभू पावन नाम तिहारो । प्रभू पतित उद्धारन हारो ॥ टेर ॥ जदपि धीमर भील कसाई । अति पापिष्ठ जमारो । तदपि जीव हिंसा तज प्रभू भज ॥ पावै भवदधि पारो ॥ पद्म० १ ॥ गौ ब्राह्मण प्रमदा बालककी ॥ मोटी हित्याच्यारो ॥ तेह नो करण हार प्रभू भजन ॥ होत हित्यासूं

न्यारो ॥ पद्म० २॥ वेश्या चुगल चंडाल जुवारी ॥ चोर महा भट मारो । जो इत्यादि भजे प्रभू तोने ॥ तो निवृतें संसारो ॥ पद्म० ३ ॥ पाप परालको पुञ्ज बन्यौ अति ॥ मानो मेरू अकारो ॥ ते तुम नाम हुताशन सेती ॥ सहज्या प्रजलत सारो ॥ पद्म० ४ ॥ परम धर्मको मरम महारस ॥ सो तुम नाम उचारो या सम मंत्र नहीं कोई दूजो । त्रिभुवन मोहन गारो ॥ पद्म० ॥५॥ तो सुमरण विन इण कलयुगमें । अवरनको आधारो ॥ मैं बलि जाऊँ तो सुमरन पर ॥ दिन २ प्रीत बधारो ॥ पद्म० ६ ॥ कुसमा राणीको अंग जात तूं ॥ श्रीधर राय कुमारो ॥ विनैचन्द कहे नाथ निरञ्जन । जीवन प्रान हमारो ॥ पद्म०॥७॥ इति ॥

७-श्रीसुपार्श्वनाथ प्रभुका स्तवन.

॥ ढ़ाल ॥ प्रभुजी दीन दयाल सेवक सरण आयो ॥ ए देशी ॥

श्री जिनराज सुपास । पुरो आस हमारी ॥टेर॥
प्रातष्ट सैन नरेश्वर कौ सुत । पृथवी तुम महतारी
सगुण सनेही साहिब सांचौ । सेवकने सुखकारी
॥ श्रीजिन० ॥१॥ धर्म काज धन मुक्त इत्यादिक ।
मन वांछित सुखपूरो ॥ बार बार मुझ विनती
येही ॥ भव २ चिंता चूरो ॥ श्रीजिन०॥२॥ जगत्
शिरोमणि भगति तिहारी कलप वृक्ष सम जाणू ॥
पूरण ब्रह्म प्रभू परमेश्वर । भव भव तुम्हें पिछाणू ॥
श्रीजिन० ॥३॥ हूँ सेवक तु ं साहिब मेरो ॥ पावन
पुरुष विज्ञानी ॥ जनम २ जित तिथ जाऊँ तो ।
पालो प्रीति पुरानी ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥ तारण
तरण अरु असरण सरणको । बिरद इसो तुम
सोहे ॥ तो सम दीनदयाल जगतमें ॥ इन्द्र
नरिन्द्र नको है ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥ सम्भू रमण
बड़ो समुद्रोमें ॥ सेल.. सुमेर बिराजै ॥ तू ठाकुर

त्रिभुवन में मोटो ॥ भगत किया दुख भाजै ॥ श्रीजिन० ॥ ६ ॥ अगम अगोचर तू अविनाशी अलप अखंड अरूपी ॥ चाहत दरस बिनैचन्द तेरौ । सत चित आनन्द स्वरूपी ॥श्रीजिन० ॥७॥

॥ इति ॥

८-श्रीचन्द्र प्रभुजीका स्तवन

॥ ढाल चौकनी देशी ॥

मुझ म्हेर करो । चन्द प्रभूजग जीवन अन्तरजामी ॥ भव दुःख हरो ॥ सुणिये अरज हमारी त्रिभुवन स्वामी ॥ टेर ॥ जय जय जगत् सिरोमणी । हूँ सेवकने तूं धणी ॥ अब तौसूं गाढ़ी बणी ॥ प्रभू आशा पूरो हमतणी ॥ मुझ० ॥ १ ॥ चन्दपुरी नगरी हती ॥ महासैन नामा नरपति । तसु राणी श्रीलषमा सती ॥ तसु नन्दन तूं चढ़ती रती ॥ मुझ० ॥२॥ तूं सरवज्ञ महाज्ञाता ॥ आतम अनुभवको दाता ॥ तो तूठां लहिये सुखसाता ॥

धन २ जे जगमें तुम ध्याता ॥ सुम्फ० ॥ ३ ॥ सिव सुख प्रार्थना करसूं । उज्वल ध्यान हिये धर सूं ॥ रसना तुम महिमा करसूं ॥ प्रभू इम भवसागरसे तिरसूं ॥ सुम्फ० ॥ ४ ॥ चन्द चकोरनके मनमें ॥ गाज अवाज होवे घनमें ॥ पिय अभिलाषा ज्यों त्रियतनमें ॥ त्यों बसियो ते मो चित मनमें ॥ सुम्फ० ॥ ५ ॥ जो सू नजर साहिम तेरी ॥ तो मानो विनती मेरी काटो भरम करम वेरी ॥ प्रभु पुनरपि नहिं परूं भव फेरी ॥ सुम्फ० ॥ ६ ॥ आतम ज्ञान दसा जागी ॥ प्रभु तुम सेती मेरी लौ लागी । अन्य देव भ्रमना भागी । बिनैचन्द तिहारा अनुरागी ॥ सुम्फ० ७ ॥ इति ॥

६-श्रीसुविधनाथजीका स्तवन

॥ ढाल ॥ बुढापो वेरी आविया हो ॥ एदेशी ॥

श्रीसुविध जिणेसर वंदिये हो ॥टेर॥ काकंदी नगरी भली हो। श्री सुग्रीव नृपाल । रामा तसु

पट रागनी हो ॥ तस सुत परम कृपाल॥श्रीसु०॥१॥ त्यागी प्रभुता राजनी हो । लीधो संजम भार । निज आतम अनुभाव थी हो ॥ पाम्या प्रभु पद अविकारी ॥ श्री० ॥२॥ अष्ट कर्म नोराजवी हो । मोह प्रथम क्षय कीना ॥ सुध समकित चारित्रनो हो । परम क्षायक गुणलीन ॥ श्री० ॥ ३ ॥ ज्ञानावरणी दर्शणावरणी हो अन्तरायके अन्त ॥ ज्ञान दरशण बल ये त्रिहूं हो प्रगट्या अनन्ता अनन्त ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अबा बाह सुख पामिया हो । वेदनी करम क्षपाय । अवगाहण अटल लही हो । आयु क्षै करनैं श्री जिनराय ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नाम करम नौ क्षै करी हो । अमूर्तिक कहाय । अगुर लघुपण अनुभव्यौ हो। गोत्र करम मुकाय ॥श्री०॥ ६ ॥ आठ गुणा कर ओलख्या हो । जात रूप भगवंत । विनैचन्दके उरबसौ हो । अह निस प्रभु पुष्पदंत ॥ श्री० ७ ॥ इति ॥

१०-श्रीशीतलनाथजीकी स्तुति

॥ ढाल ॥ जिंदवारी देशी ॥

जय जय जिन त्रिभुवन धणी ॥ टेर ॥

श्री दृढ़रथ नृपतो पिता। नंदा थारी माय॥ रोम रोम प्रभू मो भणी सीतल नाम सुहाय॥ जय॥ १॥ करुणा निध करतार॥ सेव्यां सुर तरु जेहवो॥ वांछित सुख दातार॥ जय० ॥ २॥ प्राण पियारो तू प्रभू पनि वरता पति जैम॥ लगन निरंतर लग रही॥ दिन दिन अधिको प्रेम॥ जय० ३॥ सीतल चन्दननी परें जपता निस दिन जांप॥ विषै कषाय ना ऊपनै मैटौ भव दुख ताप॥ जय० ४॥ आरत रुद्र प्रणाम थी उपजै चिन्ता अनेक। ते दुख काटो मानसी। आपौ अचल विवेक॥ जय० ॥५॥ रोगादिक क्षुधा त्रिषा। सब शस्त्र अस्त्र प्रहार सकल सरीरी दुख हरौ॥ दिल सूं विरुद्ध विचार ॥जय०॥६॥ सुप्रसन होय शीतल प्रभु तू आसा विसराम॥ विनै चन्द कहै मो भणी दीजै मुक्ति मुकाम॥ जय ७॥ इति॥

११-श्री आसप्रभुकी स्तुति

॥ढाल॥ राग काफी देशी होरीकीं ॥

श्रीअंस जिनन्द सुमररे ॥ टेर ॥

चेतन जाण कल्याण करनेको । आन मिल्यो अवसररे ॥ शास्त्र प्रमान पिछान प्रभू गुन ॥ मन चंचल थिर करेरे ॥ श्री० ॥१॥ सास उसास विलास भजनको ॥ दृढ़ बिस्वास पकररे ॥ अजपा भ्यास प्रकाश हिये विच ॥ सो सुमरन जिनवररे ॥श्री०॥२॥ कंद्रप क्रोध लोभ मद माया ॥ यह सबही पर हररे ॥ सम्यक दृष्टि सहज सुख प्रगटै ॥ ज्ञान दशा अनुसररे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ झूंठ प्रपंच जीवन तन धन अरु ॥ सजन सनेही घररे ॥ छिनमें छोड़ चले पर भवकूं । बंध सुभासुभ थिररे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ मानस जनम पदारथ जिनकी ॥ आसा करत अमररे ॥ तें पूरब शुकृत कर पायो । धरम मरम दिल भररे ॥ श्री० ॥५॥ विश्नसैन नृप विस्नाराणीको । नंदन तू न विसररे ॥ सहज

मिटै अज्ञान अविद्या । मुक्त पंथ पग धररे ॥श्री६॥ तू अविकार विचार आतम गुन ॥ जंजालमें न परे ॥ पुद्गल चाय मिटाय विनैचन्द ॥ तू जिनते न अवररे ॥ श्री० ॥७ ॥ इति

१२-श्रीबासुपूज्यजीकी स्तुति

॥ ढाल ॥ फूलसी देह पलकमें पलटे ॥ ए देशी ॥

प्रणमू बासु पूज्य जिन नायक ॥ सदा सहायक तू मेरो ॥ विषमी वाट घाट भय थानक ॥ परमासय सरना तेरा ॥ प्रणमू० ॥ १ ॥ खल दल प्रबल दुष्ट अति दारुण । चौतरफ दिये घेरो ॥ तौ पिण कृपा तुम्हारी प्रभुजी ॥ अरियन भी प्रगटै चैरौ ॥ प्रणमू० २ ॥ विकट पहार उजार विचालै । चोर कुपात्र करै हेरौ । तिण विरियाँ करिये तो सुमरण । कोई न छीन सकै डेरौ ॥ ॥ प्रणमू० ३ ॥ राजा बादशाह कोइ कोपै अति । तकरार करै छेरौ । तदपी तू अनुकूल हूवै तो ॥ छिनमें छुट जाय केरौ ॥ प्रणमू ४ ॥ राक्षस भूत

पिसाच डांकिनी ॥ संकनी भय न आवौ नेरौ ॥ दुष्ट मुष्ट छल छिद्र न लागै॥ प्रभू तुम नाम भज्यां गहरौ ॥प्रणमू० ५ ॥ विष्फोटक कुष्टादिक सङ्कट । रोग असाध्य मिटै देहरौ ॥ विष प्यालो अमृत होय प्रगमें ॥ जो विश्वास जिनन्द केरौ ॥ प्रणमू ॥ ६॥ मात जया वसु नृपके नंदन ॥ तत्व जथा-रथ बुध प्रेरौ वे कर जोरि विनैचन्द विनवे ॥ वेग मिटे मुझ भव फेरौ ॥ प्रणमू० ७ ॥ इति

१३–श्रीविमलनाथ स्वामीका स्तवन

॥ ढाल ॥ फूलसी देह पलकमें पलटे ॥ एदेशी ॥

विमल जिनेस्वर सेविये ॥ थारी बुध निर्मल हो जायरे ॥ जीवा ॥ विषय विकार विसार नै ॥ तूं मोहनी करम खपायरे ॥ जीवा विमल जिनेश्वर सेविये ॥ १ ॥ सूक्ष्म साधारण पणे । परतेक वनसपती मांयरे ॥ जीवा ॥ छेदन भेदन तेसही ॥ मर मर ऊपज्यो तिण कायरे ॥ जीवा ॥ वि० ॥ २ ॥ काल अनन्त तिहागम्यो ॥ तेहना दुख

आगम थी संभालरे ॥ जीवा ॥ पृथ्वी अप्प तेउ वायुमें ॥ रह्यो असंख्या २ तो कालरे ॥ जीवा ॥ वि० ॥३॥ एकेन्द्री सूं बेंद्री थयो ॥ पुन्याई अनंती वृधरे ॥ जीवा ॥ सन्नीपचेंद्री लगें पुनबंध्या ॥ अनन्ता २ प्रसिद्ध रे ॥ जीवा ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव नरक तिरयंच में ॥ अथवा माणस भवनीचरे ॥ जीवा ॥ दीन पणें दुख भोगव्या । इणपर चारों गति बीचरे ॥ जीवा ॥ बि० ॥ ५ ॥ अबके उत्तम कुल मिल्यो ॥ भेट्या उत्तम गुरू साधुरे ॥जीवा॥ सुण जिन बचन सनेहसे ॥ समकित व्रत शुद्ध आराधरे ॥ जीवा ॥ बि० ॥ ६ ॥ पृथ्वी पति कीरति भानु को ॥ सामाराणी को कुमाररे ॥ जीवा ॥ विनैचंद कहै ते प्रभु ॥ सिर सेहरो हिवडारो हाररे ॥ जीवा ॥ बि० ॥७॥ इति ॥१३॥

१४—श्री अनंतनाथजीका स्तवन

॥ ढाल ॥ वेगा पधारोरे म्हेल थी ॥ एदेशी ॥

अनंत जिनेश्वर नित नमो ॥ अदभुत जोत

अलेष ॥ ना कहिये ना देखिये। जाके रूप न रेख ॥ अनंत ॥ १ ॥ सुक्षमथी सुक्षम प्रभू ॥ चिदानन्द चिद्रूप। पवन शब्द आकाशथीं ॥ सुक्ष्यम ज्ञान सरूप ॥ अनन्त ॥ २ ॥ सकल पदा- रथ चितवूं ॥ जेजे सुक्षम जोय ॥ तिणथी तू सुक्षम महा ॥ तो सम अवर न कोय ॥ अनन्त ॥ ३ ॥ कवि पण्डित कह कह थके ॥ आगम अर्थ विचार। तौ पिण तुम अनुभव तिको ॥ न सके रसना उवार ॥ अनन्त ॥ ४ ॥ प्रभूने श्रीमुख सरस्वती। देवी आपौ आप ॥ कहि न सकै प्रभू तुम अस्तुती ॥ अलख अजपा जाप॥ अनन्त ॥५॥ मन बुध वाणी तो विषै ॥ पहुंचे नहीं लगार। साक्षी लोकालोकनी ॥ निरविकल्प निराकार ॥ अनन्त ॥ ६ ॥ मातु जसा सिंहरथ पिता ॥ तसु सुत अनन्त जिनन्द ॥ बिनैचंद अब ओलख्यो। साहिब सहजा नन्द ॥ अनन्त ॥ ७ ॥ इति ॥१४॥

१५—श्री धर्मनाथजीका स्तवन

॥ ढाल ॥ आज नहें जोरं दीसे नाहलो ॥ एदेशी ॥

धरम जिनेश्वर मुज हिवडै वसो। प्यारो प्राण समान ॥ कबहूं न विसरूं हो चितारूं सही। सदा अखंडित ध्यान ॥ धरम० ॥ १ ॥ ज्यूं पनिहारी कुम्भ न वीसरै ॥ नट वो चरित्र निदान ॥ पलक न विसरै हो पद्मनि पियु भणी। चकवी न विसरेरे भान ॥ धरम० ॥ २ ॥ ज्यूं लोभी मन धनकी लालसा ॥ भोगीके मन भोग ॥ रोगी के मन माने औषधी ॥ जोगीके मन जोग ॥ धरम ॥ ३ ॥ इणपर लागी हो पूरण प्रीतडी ॥ जाव जीव परियंत ॥ भव भव चाहूं हो न पडे आंतरो। भय भंजन भगवन्त ॥ धरम० ॥ ४ ॥ काम क्रोध मद मच्छर लोभ थी ॥ कपटी कुटिल कठोर ॥ इत्यादिक अवगुण कर हूं भर्यो ॥ उदै कर्म केरे जोर ॥ धरम० ॥ ५ ॥ तेज प्रताप तुमारो प्रगटै ॥ मुज हिवड़ा मेरे आय ॥ तो हूं आतम निज गुण

संभालनै अनन्त बली कहिवाय ॥ धरम० ॥ ६ ॥ भानू नृप सुव्रत्ता जननी तणो ॥ अंगजात अभिराम ॥ विनै चंद नैरे वल्लभ तू प्रभू ॥ सुध चेतन गुण धाम ॥ धरम० ॥ ७ ॥ इति ॥ १५ ॥

१६--श्री शांतिनाथ स्वामीका स्तवन

॥ ढाल ॥ प्रभूजी पधारो हो नगरी हमतणी ॥ एदेशी ॥

शांति जिनेश्वर साहिब सोलमों शान्तिदायक तुम नाम हो ॥ सोभागी ॥ तन मन वचन सुध कर ध्यावता । पूरै सघली आस हो ॥ सोभागी ॥ १ ॥ विश्व सैन नृप अचला पटरानी ॥ तसु सुत कुल सिणगार हो ॥ सोभागी ॥ जन मति शांति करी निज देसमें ॥ मरी मार निवार हो ॥ सोभागी ॥ २ ॥ विघनं न व्यापे तुम सुमरन कियां । नासै दारिद्र दुःख हो ॥ सोभागी ॥ अष्ट सिद्धि नव निद्धि मिलै ॥ प्रगटै सघला सुक्ख हो ॥ सौभागी ॥ ३ ॥ जेहने सहायक शान्ति जिनंद तूं ॥ तेहनै कमीयं न काय हो ॥

सोभागी ॥ जे जे कारज मनमें चढ़े ॥ ते ते सफला थाय हो ॥ सोभागी ॥ ४ ॥ दूर दिशावर देश प्रदेश में ॥ भटके भोला लोक हो ॥ सोभागी ॥ सानिधकारी सुमरन आपरों सहजे मिटै सहू सोक हो ॥ सोभागी ॥ ५ ॥ आगम साख सुणी छै एवही ॥ जो जिण सेवक होय हो ॥ सोभागी ॥ तेहनी आसा पूरै देवता ॥ चौसठ इन्द्रादिक सोय हो । सोभागी ॥ ६ ॥ भव भव अन्तरयामी तुम प्रभू ॥ हमने छै आधार हो । सोभागी ॥ बेकर जोड़ विनैचन्द विनवै । आपो सुख श्रीकार हो ॥ सोभागी ॥ शान्ति ॥ ७ ॥ इति ॥ १६ ॥

१७—श्री कुंथुनाथ स्वामीका स्तवन

॥ ढाल ॥ रेखता ॥

कुंथ जिणराज तूं ऐसो ॥ नहीं कोई देवतूं जैसो ॥ त्रिलोकी नाथ तूं कहिये ॥ हमारी बांह दृढ़ गहिये ॥ कुंथ० ॥१॥ भवोदधि डूबतो तारो ॥ कृपानिधि आसरो थारो ॥ भरोसा आपका भारी

बिचारो बिरध उपकारी ॥ कुंथ० ॥ २ ॥ उमाहूँ मिलनको तोसे ॥ न राखो आतरा मोसे ॥ जैसी सिद्ध अवस्था तेरी ॥ तैसी चेतन्यता मेरी ॥ कुंथ० ॥ ३ ॥ करम भ्रम जालको दपट्यो । विषे सुख ममत में लपट्यो ॥ भ्रम्यौ हूँ चिहूँ गति माहीं ॥ उदैकर्म भ्रमकी छांहीं ॥ कुंथ० ॥ ४ ॥ उदैको जोर है जौलूं न छूटै विषै सुख तौलूं ॥ कृपा गुरुदेवकी पाई ॥ निजातम भावना आई ॥ कुंथ० ॥ ५ ॥ अजब अनुभूति उरजागी ॥ सुरति निज सूर्यमें लागी ॥ तुम्हें हम एक तो जाणू ॥ द्वितिय भ्रम कल्पना मानूं ॥ कुंथ० ॥ ६ ॥ श्री देवी सूर-नृप नन्दा ॥ अहो सरवज्ञ सुख कन्दा ॥ बिनैचंद लीन तुम गुनमें । न व्यापे अविद्या उनमें ॥ कुंथ० ॥ ७ ॥ इति ॥ १७ ॥

१८—श्रीअर्हन्नाथ स्वामीजीका स्तवन

॥ ढाल मञ्जी गिरानी ॥ एदेशी ॥

अरह नाथ अविनासी शिव सुख लीधो ॥

विमल विज्ञान विलासी ॥ साहिब सीधौ० ॥ १ ॥
तू चेतन भज अरह नाथने ते प्रभु त्रिभुवन राय ॥
तात श्रीधर सुदर्शण देवी माता ॥ तेहनों पुत्र
कहाय ॥ साहिब सीधौ० ॥ २ ॥ कोड़ जतन
करता नहीं पामें ॥ एहवी मोटी माम ॥ तै जिन
भक्ति करी नै लहिये ॥ मुक्ति अमोलक ठाम ॥
साहिब० ॥ ३ ॥ समकित सहित किया जिन
भगती ॥ ज्ञान दरसन चारित्र ॥ तप वीरज उप-
योग तिहारा प्रगटै परम पवित्र ॥ साहिब० ॥ ४ ॥
सो उपयोगी सरूप चिदानन्द जिनवरने तू एक ।
द्वैत अविद्या विभ्रम मेटौ ॥ वाधै शुद्ध विवेक ॥
साहिब० ॥५॥ अलप अरूप अखण्डित अविचल ।
अगम अगोचर आपे ॥ निर विकल्प निकलंक
निरंजन ॥ अदभुद जोति अमापै ॥ साहिब ॥ ६ ॥
ओलख अनुभव अंमृत याकौ ॥ प्रेम सहित नित
पीजै ॥ हूँ तू छोड़ विनैचन्द अंतस ॥ आतम राम
रमीजै ॥ साहिब सीधौ ॥ ७ ॥ इति ॥ १८ ॥

१६—श्रीमल्लिनाथ स्वामीजीका स्तवन

॥ ढाल लावणी ॥

मल्लि जिन बाल ब्रह्मचारी ॥ कुम्भ पिता पर भावती मइया तिनकी कूंवारी ॥ टेर ॥ मानी कूंख कंदरा मांही उपना अवतारी। मालती कुसुम मालनी वांछा जननी उरधारी ॥ म० ॥ १ ॥ तिणथी नाम मल्लि जिन थाप्यो ॥ त्रिभुवन प्रिय कारी ॥ अदुभुत चरित तुम्हारा प्रभुजी वेद धर्‍यो नारी ॥ म० ॥ २ ॥ परणन काज जान सज आए। भूपति छैः भारी। मिहिला पुरी घेरि चौतरफा। सेना विस्तारी ॥ म० ॥ ३ ॥ राजा कुम्भ प्रकाशी तुम पै। बीतक विधिसारी छहुं नृप जान सजी तों परनन आया अहंकारी ॥ म० ॥ ४ ॥ श्री मुख्ख बीरप दीधि पिताने। राख्यौ हुशियारी ॥ पुतली एक रची निज आकृत। थोथी ढकवारी ॥ म० ॥ ॥ ५ ॥ भोजन सरस भरी सा पुतली ॥ श्रीजिण सिणगारी ॥ भूपति छहूँ बुलाया मन्दिर ॥ बिच

बहु दिना पारी ॥ म० ॥ ६ ॥ पुतली देख छहूँ नृप मोह्या अवसर बिचारी ॥ ढाक उघार लीनो पुतली को ॥ भभक्यो अतिभारी ॥ म० ॥ ७ ॥ दुसह दुर्गन्ध सही न जावे, ऊठ्या नृपहारी ॥ तब उप-देश दियो श्रीमुख सूं, मोह दसा टारी ॥ म० ॥ ८ ॥ महा असार उदारक देही ॥ पुतली इब प्यारी ॥ संग किया पटकै भव दुःखमें, नारि नरक बारी ॥ म० ॥९॥ नृप छैहूँ प्रति बोधे मुनि होय ॥ सिधगति संभारी ॥ बिनैचन्द चाहत भव भवमें ॥ भक्ति प्रभू थारी ॥ म० ॥ १० ॥ इति ॥ १९ ॥

२०—श्रीमुनिसुव्रतस्वामीका स्तवन

॥ ढाल ॥ चेतरे चेतरे मानवी एदेशी ॥

श्रीमुनिसुव्रत साहिबा । दीन दयाल देवाँ तणा देव के ॥ तारण तरण प्रभु तो भणी । उज्वल चित्त सुमरूं नितमेव कै ॥ श्री मुनि सूव्रत साहिबा ॥ १ ॥ हूँ अपराधी अनादिको ॥ जनम जनम गुना किया भरपूर कै ॥ लूटिया प्राण छै

कायना ॥ सेविया पाप अठार करूंरकै ॥ श्रीमुनि० ॥ २ ॥ पूरव अशुभ करतव्यता ॥ ते हमना प्रभू तुम न बिचारकै ॥ अधम उधारण बिरुद छे ॥ शरण आयो अब कीजिये सारकै ॥ श्रीमुनि० ॥ ३ ॥ किंचित पुन्य परभावथी ॥ इण भव ओलिख्यो श्रीजिन धर्मकै॥ निवृतूं नरक निगोद थी ॥ एहवी अनुग्रह करो परब्रह्मकै ॥ श्रीमुनि० ॥ ४ ॥ साधु-पणौ नहिं संग्रह्यो ॥ श्रावक व्रत न कीया अंगी-कारकै ॥ आदरथा तो न अराधिया ॥ तेह्थी रुलियो अनन्त संसारकै ॥ श्रीमुनि० ॥ ५ ॥ अब समकित व्रत आदस्यो ॥ तदपि अराधक उतरूं भव पारकै ॥ जनम जीतब सफलौ हुवे । इणपर बिनवूं बार हजारकै ॥ श्रीमुनि० ॥ ६ ॥ सुमति नराधिप तुम पिता ॥ धन धन श्री पद्मावती मायकै ॥ तसु सुत त्रिभुवन तिलक तूं । बंदत बिनैचंद सीस नवाय कै ॥ श्रीमुनि० ॥ ७ ॥

२१-श्रीनेमनाथजीका स्तवन

॥ ढाल ॥ सुणियोरे बाबा कुटिल मझारी तोता ले गई ॥

सुज्ञानी जीवा भजले जिन इक बीसमों ॥टेर॥
बिजय सैन नृप यिप्राराणी। नेमी नाथ जिन जायो ॥ चौसठ इन्द्र कियो मिल उत्सव । सुर नर आनंद पायोरे ॥ सुज्ञानी० १ ॥ भजन किया भव भवना दुष्कृत । दुकाल दुभाग मिट जावे ॥ काम क्रोध मद मच्छर त्रिसना । दुरमत निकट न आवैरे ॥ सु० ॥ २ ॥ जीवादिक नव तत्व हिये धर । ज्ञेय हेय समुझीजै ॥ तीजी उपादेय ओलखने । समकित निरमल कीजैरे ॥ सुज्ञा० ॥ ३ ॥ जीव अजीव धंध एतीनूं । ज्ञेय जथा-रथ जानौ ॥ पुन्य पाप आश्रव पर हरिये । हेय पदारथ मानोंरे ॥ सुज्ञानी० ॥ ४ ॥ संवर मोक्ष निर्जरा निज गुण । उपादेय आदरिये ॥ कारण कारज समझ भली बिधि । भिन भिन निरणो करियेरे ॥ सुज्ञानी० ॥ ५ ॥ कारण ज्ञान सरूपी

जियको । कारज क्रिया पसारो ॥ दोनूं की साखी सुध अनुभव ॥ आपो खोज निहारो रे ॥ सुज्ञानी० ॥ ६ ॥ तू सो प्रभू प्रभू सो तू है । द्वैत कलपना मेटो ॥ शुध चेतन आनंद षिनैचंद । परमातम पद भेटोरे सुज्ञानी० ॥ ७ ॥

२२-श्रीअरिष्टनेम प्रभुका स्तवन

॥ढाल॥ नगरी खूब वणी छे जी ॥ ए देशी ॥

श्री जिनमोहन गारो छै । जीवन प्राण हमारा छै ॥ टेर ॥ समुद्र बिजै सुत श्री नेमीश्वर । जादव कुलको टीको ॥ रतन कुक्ष धारनी सेवा देवी ॥ जेहनो नंदन नीको ॥ श्री० ॥ १ ॥ सुन पुकार पशुकी करुणा कर ॥ जानिजगत सुख फीकौ ॥ नव भव नेह तज्यो जोबनमें ॥ उग्रसैन नृप धीको ॥ श्री० ॥ २ ॥ सहस्र पुरुष सो संजम लीधो । प्रभुजी पर उपकारी ॥ धन धन नेम राजु-लकी जोड़ी महा बालब्रह्मचारी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ बोधानंद सरुपानंद में ॥ चित एकाग्र लगायो ॥

आतम अनुभव दशा अभ्यासी। शुक्ल ध्यान निज ध्यायो ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पूर्णानंद केवली प्रगटे। परमानंद पद पायो ॥ अष्टकर्म छेदी अलवेसर। सहजानंद समायो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नित्यानंद निराश्रय निश्चल। निर्विकार निर्वाणी ॥ निरातंक निरलेप निरामय। निराकार वरणानी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ एहवोज्ञान समाधि संयुक्तो। श्री नेमीश्वर स्वामी ॥ पूरण कृपा जिनैचंद प्रभूकी। अबते ओलखपामी ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥

२३-श्रीपार्श्वनाथजीका स्तवन

॥ ढाल ॥ जीवरे सील तणो कर सङ्ग ॥ ए देशी ॥

जीवरे तू पार्श्व जिनेश्वर वन्द ॥ टेर ॥ अश्वसेन नृप कुल तिलोरे ॥ वामा दे नौनंद ॥ चिंतामणि चित्तमें वसै तो दूर टले दुख द्वन्द ॥ जीवरे० ॥ १ ॥ जड़ चेतन मिश्रित पणैरे ॥ करम शुभाशुभथाय ॥ ते विभ्रम जग कलपनारे ॥ आतम अनुभव न्याय ॥ जीवरे० ॥ २ ॥ वैहमी भय माने

जथारे। सूने घर बैताल ॥ त्यों मूरख आतम विषैरे। माड्यो जग भ्रम जाल ॥ जीवरे० ॥ ३ ॥ सरप अंधारै रासडीरे। रूपो सीप मझार ॥ मृग तृषना अम्बुज मृषारे। त्यों आतम संसार ॥जी० ॥ ४ ॥ अग्नि विषै ज्यों मणि नही रे। सींग शशै सिर नाहिं। कुसुम न लागै व्यौम मेरे। ज्यूं जग आतम मांहि ॥ जी० ॥ ५ ॥ अमर अजौनी आतमारे। है निश्चौ तिहुं काल ॥ धिनैचांद अनुभव जागीरे। तू निज रूप सम्हाल ॥ जीवरे० ॥ ६ ॥ इति ॥ २३ ॥

२४--श्रीमहावीर प्रभुका स्तवन

॥ ढाल ॥ श्रीनवकार जपो मन रंगे ॥ ए देशी ॥

धन २ जनक सिद्धारथ राजा। धन त्रसलादे मातरे प्राणी। ज्यां सुत जायो गोद खिलायो। वर्धमान विख्यातरे प्राणी ॥ श्री महावीर नमो वरनाणी। शासन जेहनो जाणरे ॥ प्रा० ॥ १ ॥ प्रवचन सार विचार हियामें। कीजै अरथ प्रमा-

णरे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ २ ॥ सूत्र विनय आचार तपस्या । चार प्रकार समाधिरे ॥ प्रा० ॥ ते करिये भव सागर तरिये । आतम भाव अराधिरे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ ज्यों कञ्चन तिहुं काल कहीजै । भूषण नाम अनेकरे ॥ प्रा० ॥ त्यों जगजीव चराचर जोनी । है चेतन गुन एकरे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ॥ ४ ॥ अपणो आप विषै थिर आतम सोहं हंस कहायरे ॥ प्रा० ॥ केवल ब्रह्म पदारथ परिचय ॥ पुद्गल भरम मिटायरे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ शब्द रूप रस गंध न जामें, ना सपरस तप छाहीरे ॥ प्रा० ॥ तिमर उद्योत प्रभा कछु नाहीं । आतम अनुभव माहिरे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ सुख दुख जीवन मरन अवस्था ॥ ऐ दस प्राण संघातरे ॥ प्रा० ॥ इनथी भिन्न विनैचन्द रहिये ॥ ज्यों जलमें जलजातरे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ कलश ॥

चौबीस तीरथ नाम कीरति,
गावतांमन गह गहे ।
कुमट गोकुलचन्द नन्दन,
विनैचन्द इणपर कहैं ॥
उपदेश पूज्य हमीर मुनिको,
तत्व निज उरमें धरी ।
उगणीस सौ छैः के छमच्छर,
चतुर्विंशति स्तुति इम करी ॥

अथ स्तवन

धम्मो मंगल महिमा निलो, धर्म समो नहिं कोय । धर्म थकी नमें देवता, धर्में शिव सुख होय॥ ध० ॥ १ ॥ जीव दया नित पालिये, संयम सतरे प्रकार । बारा भेदें तप तपे, धर्म तणो ये सार ॥ ध० ॥ २ ॥ जिम तरुवरने फूलड़े, भ्रमरो रस

ले जाय। तिम सन्तोषे आतमा, फूलने पीड़ा न थाय ॥ ध० ॥ ३ ॥ इण विध विचरे गोचरी, बहोरे सूजतो अहार। ऊंच नीच मध्यम कुलें, धन्य ते अणगार ॥ ध० ॥४॥ मुनिवर मधुकर सम कह्या, नहिं तृष्णा नहिं लोभ। लाधो भाडो दिये देहने, अण लाधा संतोष ॥ ध० ॥ ५ ॥ अध्ययन पहले दुम्म पुप्फिए, सखरा अर्थ विचार ॥ पुण्य कलश शिष्य जेतसी, धर्मे जय जयकार ॥ ध०॥६॥

अथ सोले जिन स्तवन लिख्यते

श्रीनवकार मन्त्रीजीरो ध्यानधरो ॥ एहीज देसी ॥ श्रीरिषब अजीत सम्भव स्वामी, वन्दु अभिनन्दन अन्तरजामी। राग द्वेषदोयखय करणा, वन्दु सोलेह जिन सोवन वरणा ॥वंदु०॥१॥ सुमत नाथजीने सु पासो, प्रभु मुगत गया मेट्या गरभावासो। मेट दिया जनम ने मरणा ॥ वन्दु०॥ २ ॥ शीतल श्रीअंशजिन दोई, प्रभु चौदे राज रह्या

जोई। विमल मत निरमल करणा ॥ वन्दु० ॥ ३ ॥
अनन्तनाथ अनन्त ज्ञानी, जासुं मनडारी बात
नहिं छानी ॥ धर्म नाथजीको ध्यान हृदय धरणा
॥ वन्दु० ॥ ४ ॥ सन्तनाथ साताकारी, कुंथुनाथ
स्वामीरी जाउं बलिहारी। अरियनाथ आतम उद्ध-
रणा ॥ व० ॥ ५ ॥ महिमा घणी हो नमीनाथ तणी,
महावीरजी हुवा सासणरा भणी ॥ मे धरिया प्रभु-
थारां चरणा ॥ वन्दु० ॥ ६ ॥ तीन लोकमें रूप प्रभु
पायो, एसो मायडी पुत्र बीजो नहिं जायो। चौसठ
इन्द्र भेटे चरणा ॥ वन्दु० ॥ ७ ॥ शरीर संप्रदा
सुन्दर सोहै, निरखंतारा नयन तुरन्त मोहे।
चतुरारातो चित्त हरणा ॥ वन्दु० ॥ ८ ॥ जगमग
दीप रही देही, ज्यांने सुरनर निरख रह्या केई ॥
ज्यारी आखां जाणे अमी ठरणा ॥ वन्दु० ॥ ९ ॥
पग नख सूं मस्तक तांई, ज्यांरो शरीर बखाण्यो
सूतर माही ॥ च्यारुई संघ लेवे सरणा ॥ वन्दु० ॥
१० ॥ समचेई अरज सुणो सोले, रिष रायचन्द

जी अणपरे बोले। म्हारी आवागमन दुःख दुरे हरणा ॥ बन्दु० ॥ ११ ॥ संमत अठारे छत्तीसे वरसे, कियो नागोर चौमासो भाव सरसे ॥ भजन किया भव सागर तरणा ॥ बन्दु० ॥ १२ ॥

इति।

अथ श्रीनवकार मन्त्र स्तवन

प्रथम श्रीअरिहन्त देवा, ज्यांरी चौसठ इन्द्र करे सेवा ॥ मारग ज्यांरो सुध खरो, श्रीनवकार मन्त्र जीरो ध्यान धरो ॥श्री०॥१॥ चौतीस अतिसे पैंतीस वाणी, प्रभु सगलारा मनरी जाणी। कर जोड़ी ज्यांसुं विनती करो। श्री० ॥ २ ॥ भवजीवाने भगवन्त तारे, पछे आप मुगत माहे पाउधारे। सकल तीर्थंकरनो एकसिरो ॥ श्री० ॥ ३ ॥ पनरे भेदेसिद्ध सिधा, ज्यां अष्टकर्माने खय कीधा ॥ शिव रमणीने वेग वरो ॥ श्री० ॥ ४ ॥ चौदेई

राजरे ऊपर सही, जठे जनम जरा कोई मरण नहीं॥ज्यांरो भजन कियां भवसागर तीरो ॥श्री०॥ ॥ ५ ॥ तीजे पद आचारज जाणी, जिणरी बल्लभ लागे अमृत वाणी ॥ तन मन सुं ज्यांरी सेव करो ॥ श्री० ॥ ६ ॥ संघ माहे सोभे स्वामी, जिके मोक्ष तणा हुए रह्या कांमी ॥ ज्याने पुज्या म्हारो पाप भरो ॥ श्री० ॥ ७ ॥ उपाध्याजीरी बुद्धि भारी, ज्यां प्रति बुज्या बहु नर नारी । सूत्र अरथ जे करे सखरो ॥ श्री० ॥ ८ ॥ गुण पंच बीसे कर दिपे, ज्यांसु पाखंडी कोई नहीं जीपे ॥ दूर कियो ज्यां पाप परो ॥ श्री० ॥ ९ ॥ पंचमें पद साधुजीने पुजो, यां सरीखो नजर न आवे दूजो ॥ मिटाय देवे ते जनम जरो ॥ श्री० ॥ १० ॥ जो आत्मारा सुख चावो, तो थें पांच पदांजीरा गुण गावो । क्रोड़ भवारा करम हरो ॥ श्री० ॥ ११ ॥ पूज्य जेमल जीरे प्रसादे जोड़ी, सुणतां तुटे करमारी कोडी । जीव छकायारा जतन करो ॥ श्री० ॥१२॥

शहरे बीकानेर चौमासो, रिषरायचन्द्रजी इम भासो। मुक्ति चाहो तो भरम करो ॥ श्री० ॥ १३

अथ भरत बाहुबलनी सज्झाय लिख्यते

राज तणारे अति लोभिया, भरत बाहू बल झुंजेरे ॥ मूठ उपाडी मारवा, बाहुबल प्रति बुझेरे॥ वीरां म्हारा गज थकी उतरोरे, गज चढ्यां केवल न होसीरे ॥ बंधव गज थकी उतरोरे ॥ वी० ॥१॥ ब्राह्मी सुन्दरी इम भाषेरे। रिषब जिणेश्वर मोकली, बाहुबल तुम पासेरे ॥ वी० ॥ २ ॥ लोच करी संजम लियो, आयो वलि अभिमानोरे॥ लघु बन्धव बान्दु नहीं, काउ सग्ग रह्या, सुभ ध्यानोरे ॥ वी० ॥ ३ ॥ वरस दिवस काउ सग्ग रह्या, वेलड़ियां विटाणा रे ॥ पक्षीमाला मांडिया, सीत ताप सुकरणा रे ॥ वी०॥ ४ ॥ साधवी वचन सुणीकरी, चमंक्या चित्त मझारो रे। हय गय रथ पायक तज्या, पिण चढियो अहंकारो रे॥

बी० ॥ ५ ॥ वैरागे मन वालियो, मुक्यो निज अभिमानो रे। चरण उठायो वांदवा । पाम्या केवल ज्ञानो रे ॥ बी० ॥ ६ ॥ पहुता केवली परखदा, बाहूबल रिषरायो रे । अजर अमर पदवी लही, समय सुन्दर बंदे पायो रे ॥ बी० ॥ ७ ॥

छ संवरणी सज्झाय लिख्यते

श्रीवीर जिणेश्वर गौतमने कहे, संबर धरतारे सहुजन सुख लहे (त्रोटक छन्द)सुख लहे संवर, कहें जिनवर, जीव हिंस्सा टालिये। सुक्षम बादर त्रस थावर सर्व प्राणी पालिए ॥ मन बचन काया धरी समता ममता कछु न आणिए ॥ सुन बछ गोयम बीर जंपे, प्रथम संबर जाणिए ॥ १ ॥ बीजे संबर जिणवर इम कहे, साचो बोलयारें सहु जन सुख लहे (त्रो० छ०) सुखलहे साचो सुजस सगले, सत्य वचन संभारिये ॥ जहां होय हिंसा जीव केरी, तेह भाषा टालिए ॥ असत्य

टाली सत्य आगममन्त्र नवकार भाषिए ॥ सुण वछ गोयम वीर जंपे, जीभ जतन कर राखिए ॥ २ ॥ तीजे संबर घर वाहेर सही, अदत्त परा- योरे लेतां गुण नहीं (ओ० छ०) गुण नहीं लेतां अदत जोतां दूर परायो परिहरो । निज राज दण्डे लोक भण्डे, इसो भंडण कांई करोजी । इसो जाण मन विवेक आणो, संच्योज लाधे आपणो । सुण वछ गोयम बीर जंपे, नहीं लीजे पर थापणो ॥ ३ ॥ चौथेसंबर चौथो व्रत धरो, सियल सघलेरे अंगे अलंकरो, (ओ० छ०) आलंकरो अंगे सियल सघले, रंग राचो एसही ॥ जुगमाहे जोतां एह जालम और उपमाको नहीं ॥ एसो जाण तुम नार पराई, रिखेज निरखो नेणसुं ॥ सुन वछ गोयम वीर जंपे, कछु न कहिए वेणसुंजी ॥ ४ ॥ पंचमें संवर परिग्रह परिहरो, मूरख मायारे ममता मत करो (ओ० छ०) मत करो ममता दिन रेण कलतां, जोय तमासो एवडो ॥ मणी रत्न कंचन

क्रोड़ हुवे तो तृपत न थाए जीवडो। होय जहां तहां लाभ बहुलो, लोभ वाद्दे अति बुरो ॥ सुण वछ गोयम वीर जंपे, असणा घेटी परिहरो ॥५॥ छट्ठे संबर छट्ठो व्रत धरो, रात्रि भोजन भवियण परिहरो (ओ० छ०) परिहरो भोजन रयणी केरो, प्रत्येक पातिक एहुनो। संसार रुलसी दुःख सहसी, सुख टलसी देहनो। इसो जाण संवेग श्रावक, मूल गुण व्रत आदरो। सुण वछ गोयम वीर जंपै, शिव रमणी वेगी वरो ॥ ६ ॥

अथ कामदेव श्रावकनी सज्झाय लिख्यते

श्रावक श्री वीरना चम्पानो वासीजी ॥ ए आंकड़ा ॥ एक दिन इन्द्र प्रशंसियोजी, भरिये सभारे माय ॥ दढ़ताई कामदेवनीजी, कोई देव न सके चलाय ॥ श्रावक० ॥ १ ॥ सरधो नही एक देवताजी, रूप पिशाच बनाय ॥ कामदेव श्रावककनेजी, आयो पोषदसालरे माय ॥ श्रा० ॥

२ ॥ रूप पिशाचनो देखनेजी, डर्यो नहीं रे लिगार ॥ जाण्यो मिथ्याती देवताजी, लियो शुद्ध मम ध्यान लगाय ॥ आ० ॥ ३ ॥ अंभोरे काम-देवजी, तोने कल्पे नहीं छे कोय ॥ थारो भर्मना छोड़णोजी, पिणहुं छुड़ास्युं तोय ॥ आ० ४ ॥ हस्तीनो रूप वेकरे कियोजी, पिशाच पणो कियो दूर ॥ पोषद्द शालामें आयनेजी, बोले वचन करूर ॥ आ० ॥ ५ ॥ मन माहें नहिं कंपियोजी हस्ती सुण्डमें झाल ॥ पौषद शाला वारे लेईजी, दियो अकाशे उछाल ॥ आ० ॥ ६ ॥ दन्त सुलमे झेलने जी, कांचलनीपरे रोल । उजल वेदना उपनी जी, नहिं चलियो ध्यान अडोल ॥ आ० ॥ ७ ॥ गजपणो तज सर्प भयोजी, कालो महा विकराल ॥ डंक दियो कामदेवने जी, क्रोधी महा चण्डाल ॥ आ० ॥ ८ ॥ अतुल वेदना उपनीजी, चलियो नहीं तिल मात ॥ सूर तहां प्रगट थयो जी, देवता रूप साक्षात ॥ आ० ॥ ९ ॥ कर जोड़ीने इम

कहेजी, थांरा सुरपति किया है वखाण ॥ म्हें नहिं सरध्यो मूढ़ मतीजी, थांने उपसर्ग दीनो आण ॥ श्रा० ॥ १० ॥ तन मन कर चलिया नहींजी, थे धर्म पायो परमाण ॥ खमजो अपराध ते माहरोजी, इम कहि गयो निज ठाण ॥ श्रा० ॥११॥ वीर जिणन्द समोसख्या जी, कामदेव वन्दण जाय ॥ वीर कहे उपसर्ग दियोजी, तोने देव मिथ्याती आय ॥ श्रा० ॥१२ ॥ हन्ता सामी सांच छे जी, तद समणा समणी बुलाय ॥ घर वेठ्यां उपसर्ग सह्योजी, इस परशंसे जिनराय ॥ श्रा० ॥ १३ ॥ वीस वरस लग पालियोजी, श्रावकना व्रत वार ॥ पहिले सरगे उपनाजी, चवजासी भवपार ॥ श्रा० ॥ १४ ॥ आ दृढ़ताई देखनेजी, पालो श्रावक धर्म ॥ कामदेव श्रावकनी परेजी, थे पामो शिव सुख पर्म ॥ श्रा० ॥ १५ ॥ मुरधर देश सुं आएनेजी, जैपुर कियो है चौमास ॥ अष्टादश छियासीयेजी रिष षुसालचन्दजी कियो प्रकाश ॥ श्रा० ॥१६ ॥

अथ पंच तीर्थनो स्तवन

तुम तरण तारण, भव निवारण भविकमन आनन्दनं ॥ श्रीनाभिनन्दन, जगतवन्दन, श्रीआदि नाथ निरंजनं ॥ १ ॥ श्रीआदिनाथ अनाद सेऊँ, भाव पद पूजा करूं ॥ कैलाश गिरि पर रिषव जिनवर, चरण कमल हिवडै धरूं ॥ २ ॥ ध्यान धुपे मन पुष्पे, अष्ट करम-विनाशनं ॥ क्षमा जाप सन्तोष सेवा, पूजूं देव निरंजनं ॥३॥ तुम अजित नाथ अजीत जीते, अष्ट कर्म महा बली ॥ प्रभु विरद सुण कर शरण आया, कृपा कीजै नाथ जी ॥४॥ तुम चन्द्र पूरणचन्द्र लंछन, चन्द्रपुरी परमेश्वरं ॥ महासेन नन्दन जगत वन्दन, चन्द्रनाथ जिणेश्वरं ॥ ५ ॥ तुम बाल ब्रह्म विवेकसागर भविक मन आनन्दनं ॥ श्री नेमिनाथ पवित्र जिनवर, तिमिर पाप बिनाशनं ॥ ६ ॥ जिन तजी राजुल राज कन्या, काम सेना वश करी ॥ चारित्र रथपर चढे दूलह, -शाम शिव सुन्दर वरी ॥ ७ ॥ कंदर्प दर्प

सुसर्प लंछन, कमठ संठ निरगल कियो ॥ श्री पार्श्वनाथ सपूज्य जिनवर, सकल शीघ्र मंगल कियो ॥ ८ ॥ तुम कर्म घाता मोक्ष दाता, दीन जान दया करो ॥ सिद्धार्थ नंदन जगत-वन्दन महावीर मया करो ॥ ६ ॥

अथ चार सर्णाको स्तवन

हिरदै धारीजे, हो भवियण, मंगलीक सरणा च्यार ॥ ए टेक ॥ पो हो उठी नित समरीजे, हो भवियण । मंगलीक शरणा चार, आपदा टले सम्पदा मिले, हो भवियण दौलतना दातार ॥१॥ अरिहन्त सिद्ध साधु तणा ॥ हो भवि० ॥ केवली भाषित धरम, ए चांरु जपतां थकां ॥ हो भ० ॥ तुटे आठई करम ॥ हिरदै० ॥ २ ॥ ए शरणा सुख कारीया ॥ हो भ० ॥ ए शर्णा मंगलीक ॥ ए शर्णा उत्तम कह्या ॥ हो भ० ॥ ए शरण तह-तीक ॥ हिरदै० ॥ ३ ॥ सुखसाता वरते घणी ॥

हो भ० ॥ जे ध्यावे नर नार । पर भव जातां जीवने ॥ हो भ० ॥ एह तणो आधार ॥ हिरदै० ॥ ४ ॥ डाकण साकण भूतणी ॥ हो भ० ॥ सिंह चीताने सूर । बैरी दुश्मन चोरटा ॥ हो भ० ॥ रहे सदाई दूर ॥ हिरदै० ॥ ५ ॥ निशि दिन थाने ध्यावतां ॥ हो भ० ॥ पामें परम आनन्द, कमी नहीं कीणी वातरी ॥ हो भ० ॥ सेव करै सुर इन्द्र ॥ हि० ॥ ६ ॥ गेले घाटे चालंता ॥ हो भ०॥ रात दिवस मझार ॥ गावां नगरां विचरतां ॥ हो भ० ॥ विघन निवारण हार ॥ हि० ॥ ७ ॥ इन सरिसा सरणा नहीं ॥ हो भ० ॥ इण सरिसी नहि नाव ॥ इण सरिसो मन्त्र नहीं ॥ हो भ० ॥ जपतां वाधे आव ॥ हि० ॥ ८ ॥ राखों शरणारी आसता ॥ हो भ० ॥ नेड़ोन आवे रोग ॥ वरते आणन्द जीवने ॥ हो भ० ॥ एह तणो संयोग ॥ हि० ॥९॥ मन चिन्त्या मनोरथ फले ॥ हो भ० ॥ निश्चय फल निरवाण ॥ कुमी नहि देवलोकमें ॥

हो भ० ॥ मुक्त तणा फल जाण ॥ हि० ॥ १० ॥ संवत अठारे बावन्ने ॥ हो भ० ॥ पाली सेखे काल ॥ रिष चौथमल जी इम कहे ॥ हो भ० ॥ सुणजो बाल गोपाल ॥ हि० ॥ ११ ॥ इति ॥

चित्त संभूतीकी सज्झाय

चित्त कहै ब्रह्मरायने, कछु दिल माहि आणो हो ॥ पूरव भवरी प्रीतड़ी, तुमे मूल न जाणो हो ॥ बंधव बोल मानो हो ॥ १ ॥ कतवारीरा सूत ज्यों, सांधो दे आणो हो ॥ जाती समरण ज्ञान थी, पूर्व भवजाणो हो ॥ बं० ॥ २ ॥ देश देशाथण राजा घरे, पहले भव दासे हो ॥ बीजे भव कालिंजरे, थया मृग वन वासे हो ॥ बं० ॥३॥ तीजे भव गंगा तटे, आपे हंसला हुता हो ॥ चौथे भव चण्डालरे, घर जन्म्यापूता हो ॥ बन्धव० ॥४॥ चित्त संभूत दोनों जिणा गुण बहुला पाया हो ॥ शरणे आयो आपणे, तिण पंडित पढ़ाया हो ॥

वन्ध० ॥ ५ ॥ राजा नगरी थी काढ़िया, आपे मरणा मंडिया हो ॥ वन माहें गुरू उपदेश थी, आपां घर छाड़िया हो ॥ वं० ॥ ६ ॥ संयमले तपस्या करी, लब्धधारी हूता हो। गावां नगरां विचरता, हस्तीनापुर पहूंता हो ॥ वं० ॥ ७ ॥ निमुचि ब्राह्मण ओलख्या नगरी थी कंढाव्या हो ॥ कोप चढ्या वेहूं जिणा, संथारा ठाया हो ॥ बंधव ॥ ८ ॥ धुवोंथें कीधो लब्ध थी, नगरी भय पाया हो ॥ चक्रवर्त्ती निज परिवार सुं आवि तुरत खमाव्या हो ॥ वं० ॥ ९ ॥ रत्ना राणी रायनी, आवी शीश नमायो हो पग पुज्यां केसांथकी थांरे मन भाया हो ॥ वं० ॥ १० ॥ निहाणे तुमे किया, तपनो फल हारयो हो। म्हें थांने वन्धव वरजियो, तुमे नाही विचारयो हो ॥ वं० ॥ ११ ॥ ललनी गुलनी वीमाणमें भव पांचमें थया हो। तिहां थी चवी करी कपिलापुर आया हो ॥ वं० ॥ १२ ॥ हम तिहां थी चवी करी, गाथापती थया हो। संयम भार

लेई करी ॥ तांसु मिलणने आया हो ॥ वं०॥१३॥
चक्रवर्त्त पद्वी थें लीबी, रिद्ध सगली पाईहो ॥
किधो सोई पामियो, हिवे कमीयन काईं हो ॥वं०
॥ १४॥ समरथ पद्वी पामिया, हिवे जनम सुधारो
हो ॥ संसारना सुख कारमा, विखियां रसवारो
हो ॥ वं०॥१५॥ राय कहै सुण साधुजी, कछु और
बताओ हो ॥ आरिद्ध तो छुटै नहीं, पछे थें पीस-
तासो हो ॥ वं० ॥ १६ ॥ थें आवो म्हारा राजमें,
नर भव सुख माणो हो ॥ साध पणा मांही छे की
सो, नीत मांगने खाणो हो ॥ वं० ॥ १७ ॥ चित्त
कहै सुणो रायजी, इसडि किम जाणे हो ॥ म्हे
रिद्ध तो छोड़ी घणी, गिणती कुण आणे हो ॥
वं० ॥ १८ ॥ हूं आया थांने केणने, आरिद्ध तुमे
त्यागो हो ॥ वैरागे मन वालने, धर्म मार्ग लागो
हो ॥ वं० ॥ १६ ॥ भिन्न भिन्न भाव कह्या घणा,
नहि आयो वैरागे हो ॥ भारी करमा जीवड़ा, ते
किण विध जागे हो ॥ वं० ॥ २० ॥ निहाणो तुमे

कियो, खट खंडज केरो हो । इण करणी सो जाण जो, थारा नरके डेरा हो ॥ वं० ॥ २१ ॥ पांचु भव भेला किया, आपे दोनो भाई हो ॥ हिवे मिलणो छे दोहिलो, जिम पर्वत राई हो ॥ वं० ॥ २२ ॥ ब्रह्मदत्त पहुंतो नरक सप्तमी, चित्त मुक्त मझारी हो ॥ कर जोड़े कविपण कहे, आवागमण निवारी हो ॥ वं० ॥२३॥

अथ जीवापात्री सीरी सज्झाय लिख्यते

जीवा तुं तो भोलोरे प्राणी, इम रुलियोरे संसार ॥ मोहो मिथ्यातकी नींदमें, जीवा सूतो काल अनन्त ॥ भव भव माहे तु भटकियो, जीवा ते साम्भल विरतंत ॥ जी०॥१॥ ऐसा केई अनन्त जिन हुआ, जीवा उतकृष्टो ज्ञान अगाध॥ इण भव थी लेखो लियो, जीवा कुण बतावे थांरी याद ॥ जी० ॥ २ ॥ पृथ्वी पाणी अग्निमें, जीवा चोथी-वाऊ काय ॥ एक एक काया मध्यें, जीवा काल

असंख्याता जाय ॥ जी० ॥ ३ ॥ पंचमी काय वनस्पती, जीवा साधारण प्रत्येक ॥ साधारणमें तुं वस्यो, जीवा ते सांभली सुविवेक ॥ जी० ॥ ४ ॥ सुई अग्र निगोदमें, जीवा श्रेण असंख्याती जाण असंख्याता प्रतर एक श्रेणमें, जीवा ईम गोला असंख्याता प्रमाण ॥ जी० ॥ ५ ॥ एक एक गोला मध्ये, जीवा शरीर असंख्याता जाण । एक एक शरीरमें, जीवा जीव अनन्ता प्रमाण ॥जी० ॥६॥ ते माथी अनादी जीवड़ा, जीवा मोक्ष जावे घीग चाल ॥ एक शरीर खाली न हुवे, जीवा न हुवे अनन्ते काल ॥ जी० ॥ ७ ॥ एक २ अभवी संगे, जीवा भव अनंता होय । वली विसेखो जाणिये, जीवा जन्म मरण तू जोय ॥ जी० ॥ ८ ॥ दोय घड़ी काची मध्ये, जीवा पैंसठ सहससो पांच । बत्तीस अधिका जाणज्यो, जीवा ए कर्मानी खांच ॥ जीवा० ॥ ९ ॥ छेदन भेदन वेदन वेदना, जीवा नरके सही बहु वार । तीण सेती निगोदमें, जीवा

अणन्त गुणी विचार ॥ जी० ॥ १० ॥ एकेन्द्री माह्य थी निकल्यौ, जीवा इन्द्री पाम्यो दोय । तव पुन्याई ताहारी, जीवा तेथी अनन्ती होय ॥ जी० ॥ ११ ॥ इम तेरन्द्री चोरन्द्री जीवमा, जीवा वे वे लाख ए जात । दुःख दिठा संसारमें, जीवा सुणता अचरज बात ॥ जी० ॥ १२ ॥ जलचर थलचर खेचरु, जीवा उरपुर भुजपुर जात । शीत ताप तृषा सहि, जीवा दुःख सह्या दिनरात ॥ जी० ॥ १३ ॥ इम भमन्तो जीवड़ो, जीवा पाम्यो नर भव सार । गरभावासमें दुख सह्या, जीवा ते जाणे करतार ॥ जी० ॥ १४ ॥ मस्तक तो हेठो हुवे, जीवा उपर रहे बाहु पाय ॥ आंख्यां आडी मुष्टी वेहुं, जीवा इम रह्या भिष्टा घर माय ॥ जी० ॥ १५ ॥ वाप वीरज माता रुद्र, जीवा इसडो लियो थे आहार । भूल गयो जन्म्या पछे, जीवा सेवी करे अविचार ॥ जी० ॥ १६ ॥ ऊंट कोड सुई लाल करे, जीवा चांपे रुं रुं माय । अष्ट

गुणी हूवे वेदना, जीवा गरभा वासारे माय ॥
॥ जी० ॥ १७ ॥ जन्मतां हुवे क्रोड़ गुणी; जीवा
मरता क्रोड़ा क्रोड़ ॥ जनम मरणरा जीवडा जीवा
जाण जो मोटी खोड ॥ जी० ॥ १८ ॥ देश
आनारज ऊपनो, जीवा इन्द्री हीनी होय।
आऊषो ओछो हुवे, जीवा धर्म किसी विध होय ॥
जी० ॥ १९ ॥ कदाचित नर भव पामियो, जीवा
उत्तम कुल अवतार ॥ देही निरोगी पायने,
जीवा यु खोईयो जमवार ॥ जी० ॥ २० ॥ ठग
फांसीगर चोरटा, जीवा धीवर कसाईरी न्यात।
उपजीने मुईजीसी, जीवा एसी न रही काई जात ॥
जी० ॥ २१ ॥ चौदेई राजलोकमें, जीवा जनम
मरणरी जोक। खाली बालाग्र मात्राए, जीवा
ऐसी न रही कोइ ठोड़ ॥ जी० ॥ २२ ॥ एही जीव
राजा हुवो, जीवा हस्ती बांध्या बार। कबहीक
करमा वसे, जीवा न मिले अन्न उधार ॥ जी०
॥ २३ ॥ इम संसार भमतो थको, जीवा पाम्यो

समगत सार । आदरीने छिटकाय दीवी, जीवा जाय जमारो हार ॥ जी० ॥ २४ ॥ खोटा देवज सर दिया, जीवा लागो कुगुरु केड । खोटा धर्मज आदरी, जीवा किधा चौउ गति फेर ॥ जीवा० ॥ ॥ २५ ॥ कब हिक नरके गयो, जीवा कबही हुंवो तूं देव ॥ पुन्य पापना फल थकी, जीवा लागी मिथ्यातनी टेव ॥ जीवा० ॥ २६ ॥ ओगाने वले मुमती, जीवा मेरु जेवड़ी लीध । एक ही समकित बिना, जीवा कारज नहि हुवो सिद्ध ॥ जी० ॥२७॥ च्यार ज्ञान तना धणी, जीवा नरक सातमी जाय । चौदे पुरब नो भोगयो, जीवा पडे निगोदनी माय ॥ जी० ॥ २८ ॥ भगवन्तनो धर्म पालया पछे, जीवा करणाी न जावे फोक । कदाचित पड़-वाई हूवे, जीवाअर्ध पुदगल माहि मोक्ष ॥ जी० ॥ २९ ॥ सूक्ष्मने वादर पणे, जीवा मेली वर्गणा सात । एक पुदगलने प्रावर्तनी, जीवा झीणी घणी छे वात ॥ जी० ॥ ३० ॥ अनन्त जीव मुक्ते

गया, जीवा टाली आतम दोष । नहीं गया नहि जावसी, जीवा एक निगोदना मोख ॥ जी० ॥३१॥ पाप आलोई आपणा, जीवा अव्रत नाला रोक । तेथी देवलोक जावसो, जीवा पनरे भव माही मोक्ष ॥ जी० ॥ ३२ ॥ एहवा भाव सुणी करी, जीवा सर्धा आणी नाह । जिम आयो तिम ही ज गयो, जीवा लख चौरासी मांह ॥ जी० ॥ ३३ ॥ कोई उत्तम नर चिंतवे,जीवा जाणे अथीर संसार। साचो मारग सर्धीने, जीवा जाए मुक्त मझार ॥ जी० ॥ ३४ ॥ दान सियल तप भावना, जीवा इणसों राखो प्रेम । कोड़ कल्याण छे तेहने, जीवा रिष जेमलजी कहे एम ॥ जीवा० ॥ ३५ ॥

अथ मृघापुत्रकी सज्झाय लिख्यते

सुगरीव नगर सुहावणो जी, राजा बलभद्र नाम ॥ तस घरराणी मृघावती जी, तस नन्दन गुणधाम ॥ ए माता खीण लाखीणी रे जाय ॥१॥

एक दिन बैठा गोखड़े जी, राण्या रे परिवार।
सीसदाजेने रवि तपे जी, दीठा तव अणगार॥
ए माता० ॥ २ ॥ मुनि देखी भव सांभाल्योजी,
मन वसियोरे वैराग। हरख धरीने उठिया जी,
लागा मातांजीरे पाय॥ ए जननी अनुमति दे मोरी
माय ॥ए माता०॥३॥ तूं सुख माल सुहामणो जी,
भोगो संसार ना भोग जोवन वय पाछी पड़े जब,
आदरजो तुम जोग। रे जाया तुझ विन घड़ीरे
छ मांस ॥ ४ ॥ पाव पलकरी खबर नहीं ऐ मांय,
करे कालकोजी साज ॥ काल अजाण्यो झड़ पड़े
जी. ज्यों तीतर पर बाज ॥ ए माता खिण ला-
खिणी रे जाय ॥ ५ ॥ रत्न जड़ित घर आंगणाजी,
तू सुन्दर अवतार। मोटा कुलरी ऊपनीजी, कांई
छोड़ो निरधार ॥ रे जाया तू० ॥ ६ ॥ बादी घर-
बादी रचिये एमाय, खिणमें खेरु थाय, ज्युं
संसारनी सम्पदाजी, देखंता या बिल जाय ॥ ए
मातां० ॥ ७ ॥ पिलंग पथरणे पोढणोजी, तूं

भोगीरे रसाल ॥ कनक कचोले जीमणोजी, काछ-
लडीमें आहार ॥ रे जाया ॥ तू ॥ ८ ॥ सांयर जल
पिया घणाये माय, चुग्या मातारा थान । तृस न
हुवो जीवडोजी, इधक अरोग्या धान ॥ ए माता०
॥ ९ ॥ चारित्र छे जाया दोहिलो जी, चारित्र
खांडानी धार । विन हथियारा झुंजणोजी, औषध
नईहै लिगार ॥ रे जाया ॥ तु० ॥ १० ॥ चारित्र
छे माता सोखलोजी, चारित्र सुखनीजी खान ॥
चवदेइ राज लोकनाजी, फेरा टालणहार ॥ एमाता
॥ ११ ॥ सियाले सी लागसी जी, उनाले लुरे
बाय ॥ चौमासे मेलां कापड़ाजी ए दुःख सह्यो
न जाय रे जाया० ॥ १२ ॥ वनमाछे एक मृग-
लोजी, कुंण करे उणरिज सार ॥ मृगानी परे
विचरसुं जी, एकलड़ो अणगार ॥ ए मांता०
॥ १३ ॥ मात वचन ले निसरयाजी, अघा पुत्र
कुमार । पंच महाव्रत आदरया जी, लीधो संयम
भार ॥ ए माता० ॥ १४ ॥ एक मासनी सलेख-

नाजी, उपनो केवलज्ञान । कर्मखपाय मुक्ते गयाजी, ज्यांरालीजे नित प्रति नाम ॥ ए माता० ॥ १५ ॥

सोला सुपनचन्द्रगुप्त राजा दीठा लिख्यते

दोहा—पाडलिपुर नामे नगर, चन्द्रगुपति तिहां राय सोले सुपना देखिया, पेखिया पोसा माय ॥ १ ॥ तिण कालेने तिण समे, पांच सहे मुनि परिवार । भद्रबाहु स्वामी समोसरया, पाडलि बाग मझार ॥ २ ॥ चन्द्रगुप्त वांदण गयो, बैठी पर्षदा माय ॥ मुनिवर दीधी देसना, सगलाने हित लाय ॥ ३ ॥ चन्द्रगुप्तराजा कहे, सांभल जो मुनिराय ॥ मै सोले सुपना लह्या, ज्यांरो अर्थ दीजो समलाय ॥ ४ ॥ बलता मुनिवर इम कहै सांभल तू राजान । सोला सुपना नो अरथ, इक चित राखो ध्यान ॥ ५ ॥

ढाल—रे जीव विषय न राचिये ॥ ए देशी ॥ दीठो सुपनो पेलड़ो, भांगि कल्पवृक्ष डालोरे ॥ राजा दीक्षा लेसी नहिं, इण दुषण पञ्चम का-

लरे ॥ चन्द्रगुप्त राजा सुणो ॥ १ ॥ कहै भद्रबाहु स्वामी रे, चवदे पूर्वना धणी, चार ज्ञान अभि-रामोरे ॥ चन्द्र० ॥ २ ॥ सूर्य अकाले आथम्यो, दुजे ए फल जोयोरे ॥ जाया पांचवे कालमें, ज्याने केवल ज्ञान न होयोरे ॥ चं० ॥ ३ ॥ त्रीजे चन्द्रज चालणी, तिणरो ए फल जोयोरे ॥ समाचारी जुइ जुइ, वारोव्या धर्म होसी रे ॥ चं० ॥ ४ ॥ भूत भूतनी दीठा नाचता, चौथेसुपनेराय जोसीरे। कुगुरु कुदेव कुधर्मनी, घणी मानता होसीरे ॥ चं० ॥ ५ ॥ नाग दीठो बारै फणौ, पांचमें सुपने भाली रे ॥ केतलाक बरसा पछे, पड़सी वार दुकाली रे ॥ चं० ॥ ६ ॥ देव विमाण बल्यो छठे, तिणरो सुणराय भेदोरे ॥ विध्याजंगा चारणी, जासी लबद विछेदोरे ॥ चं० ॥ ७ ॥ उगो उकरडी मजे, सातमे काल विमासीरे ॥ चारू ही वर्णा मजे, वाण्या जैन धर्म थासीरे ॥ चं० ॥ ८ ॥ हेत कथाने चोपई, त्वना सिजायने जोडोरे ॥ इणमे

घणा प्रतिबोधिसी, सूत्रनी रुचि थोडीरे ॥ चं०
॥ ६ ॥ एको न होसी सहु वाणिया जुदो २ मत
जालोरे ॥ खांच करसी आप आपणी, विरला धर्म
रसालोरे ॥ चं० ॥ १० ॥ दीठो सुपने आठमें,
आगि आनु चमतकारोरे ॥ अल्प उद्योत जिन
धर्मनु, वहु मिथ्यात अंधकारोरे ॥ चं० ॥ ११ ॥
तपस्या धर्म वखाणनो, राग कस्या होसी भेलारे ॥
ईम कर्त्ता अजांणनी, छती अछती होसे हेलारे ॥
चं० ॥ १२ ॥ समुद्र सुको तिनु दिसे, दषण दिसे
डोहलुं पाणारे ॥ तीन दिस धर्म विछेदहुसी,
दिषण दोहलो धर्म जांणी रे ॥ चं० ॥ १३ ॥
जिहार पांच कल्याण थया, तिहा धर्मरी हाणोरे ॥
अर्थ नवमां सुपना तणो, होसी एसा अहिनाणोरे ॥
चं० ॥ १४ ॥ सोनारी थाली मजे स्वान खातो
दीठो रे । दसमा सुपनानु अर्थ, सुणराय तुरो
धारोरे ॥ चां० ॥ १५ ॥ ऊंच तणी लक्षमितिका,
नीच तणे घर जासीरे षधसीरे ते चुगल चोरटा,

साहुकार सीदासीरे ॥ च० ॥ १६ ॥ हाथी ऊपर
वानरो, सुपन अगियारमें दीठोरे ॥ मलेच्छराज
ऊंचो होसी, असल हिन्दू रहसी हेठोरे ॥ च०
॥ १७ ॥ दीठो सुपने बारमें । समुद्र लोपी कारोरे ॥
कोई छोर गुरु वापना, हो जासी विकरालोरे ॥
च० ॥ १८ ॥ क्षत्री लाँच ग्रहाहुसी, वचन कही
नट जासीरे दंगादंगी होसी घणा, विसासघात
थासीरे ॥ च० ॥१६॥ कितला एक साध साधवी,
प्रवेले सी भेषोरे ॥ आज्ञा थोड़ी मानसी, सिष
दियाँ करसी द्वेषोरे ॥ च० ॥ २० ॥ अकल वि-
हुणा वाँछसी, गुरुआदिकनी घातोरे ॥ सिख अव-
नीत होसी घणा, थोड़ा उत्तम सुपात्रोरे ॥ च०
॥ २१ ॥ महारथ जुता वाछड़ा, नाने थी धर्म
थासीरे ॥ कदाचित बूढ़ा करे तो, प्रमाद मांहि
पड़जासीरे ॥ च० ॥ २२ ॥ वालक वय घर
छोड़सी, आण वैराग भावोरे ॥ लज्जा संयम
पालसी, बूढ़ा धेठ स्वभावोरे ॥ च० ॥ २३ ॥ सहु

सर्लं नहिं बालका घेठा नहिं छे बूढ़ा रे ॥ समचौ ईम ए भाव छै, अर्थ विचारो उडारे ॥ चं० ॥२४॥

रत्नज जाषादिठा, चउदमें ते सुपनानो ए जोड़ो रे ॥ भरत खेत्रना साध साधवी, हेत मिलाप होसी थोड़ो रे ॥ चं० ॥ २५ ॥ कलहकारी डंबर कारिया, असमाद्‌कारी विशेषो रे ॥ उद्‌गकरा अवनीत ए, रहसी घेषा घेषोरे ॥ चं० ॥ २६ ॥ वैराग्य भाव थोड़ो होसी, भ्रव लंगना धारो रे ॥ भली सीष देतां थका, करसी कोध अपारो रे ॥ चं० ॥ २७ ॥ प्रशंसा करसी आप आपणी, कपट वचन बहु गेरी रे ॥ आचार अशुद्धो साधातणो, उलटा होसी वैरी रे ॥ चं० ॥ २८ ॥ सुद्धोमार्ग परूपतां, तिणसु मच्छर भावो रे ॥ निन्दकबहु साधातणा, होसी घेठा सभावो रे ॥ चं० ॥ २९ ॥ राय कुमार चढ़ियो पोठीये, सुपन पनरमें देखो रे ॥ गज जिम जिन धर्म छंडने, तेज विजोइ धर्म विसे-षोरे ॥ चं० ॥ ३० ॥ न्याय मार्ग थोड़ा होसी,

नीची गमसी वातो रे ॥ कुबुद्धि घणा मानी जसी, लालच ग्राही वरतो रे ॥ चं० ॥ ३१ ॥ वगर मावत हाथी लड़े, सुपन सोलमें एहो रे ॥ काल पड़सी छोड आन्तरा, मांग्या मेहन होसी रे ॥ चं० ॥३२॥ अकाले वृक्षा होसी, कालवर ससि थोड़ो रे ॥ वाट घणी जी वड़सी, तिण अननाहुसी तोलोरे ॥ चं० ॥ ३३ ॥ वेटा गुरु मावित्रना, करसी भगती थोड़ी रे ॥ मा वित्रवात करतां थका, विच माहि लेसी तोडीरे ॥ चं० ॥ ३४ ॥ भाई भाइ माहोमाहमें, थोड़ो होसी हेतोरे ॥ घणी लड़ाइने ईर्षा, वधसी एण भर्त क्षेत्रोरे ॥ चं० ॥ ३५ ॥ कोण कायदो थोड़ो होसी, उच्छो होसी तोलो रे ॥ घणा राड झगड़ा करे, ऊपर आणसी बोलोरे ॥ चं० ॥ ३६॥ अर्थ सोल सपना तणु, कह्यो भद्रबाहु स्यामो रे ॥ जिन भाख्यो न हुवे अन्यथा, सूराजा तज कामो रे ॥ चं० ॥ ३७ ॥ एवा सोल सुपना सुणने, सिंह जिम पराक्रम करसीरे ॥ जिन वचन आराधसी, ते

शिव रमणी वरसीरे ॥.चं० ॥ ३८ ॥ एवा वचन सुणेराही, राय जोड़ा वेहु हाथोरे ॥ वैराग भाव आणी कहै, मैं तो सध्यां कृपानाथो रे ॥ चं०॥३६॥ राज थापी निज पुत्रने, हूं लेसुं संयम भारोरे ॥ बलता गुरु इसड़ी कहै, मत करो ढील लगारोरे ॥ चं० ॥ ४० ॥ पुत्रने राज वेसाडने, चन्द्रगुप्त लीधो संयम भारोरे छता भोग छटकायने, दीधो छकाय नेटारोरे ॥ चं० ॥४१ ॥ धन करणी साधां-तणी, वाणी अमिय समाणीरे ॥ जेनु दरसन देखने घणा प्राणी आतरसीरे ॥ चं० ॥ ४२ ॥ चोखो चारित्र पालिने, सुर पदवी लहि सारोरे ॥ जिन मारग आराधने, करसी खेवो पारोरे ॥ चन्द्र ॥ ४३ ॥ अथिर माया संसारनी, आप कह्यो जिन रायोरे ॥ दयाधर्म सुध पालने, अमरपुर मांही जायोरे ॥चं०४४॥ धन ववहार सूत्र नीचुल कामजे, भद्रबाहु कियो चोडोरे । तेणा अनुसारे माफिके रिष जेमलजी की धो जोडोरे ॥ चं० ॥ ४५ ॥ इति ॥

मंगलचन्द मालू

बीकानेर।

अथ श्रीपुण्यप्रभाविक श्रावक लालाजी साहेब
रणजीत सिंहजी कृत—

❀ दोहा ❀

सिद्ध श्री परमातमा । अरिगंजन अरिहंत ॥
इष्टदेव वंदू सदा । भय भंजन भगवंत ॥ १ ॥
अरिहंत सिद्ध समरूं सदा । आचारज उवझाय ॥
साधु सकलके चरणकूं । वंदू शीश नमाय ॥२॥
शासन नायक समरिये । भगवंत वीर जिणंद ॥
अलिय विघन दूरे हरे । आपे परमानंद ॥ ३ ॥
अंगूठे अमृत वसे । लब्धि तणा भंडार ॥
श्री गुरु गौतम समरिये । वंछित फल दातार ॥४॥
श्री गुरु देव प्रसादसें । होत मनोरथ सिद्ध ॥

ज्युं घन वरसत वेलि तरु। फूल फलनकी वृद्ध ॥५॥
पंच परमेष्टि देवको। भजनपूर पंचान ॥
कर्म अरिभाजे सवि। होवे परम कल्याण ॥ ६ ॥
श्री जिन युगपद्कमलमें। मुझ मन भमर वसाय ॥
कव ऊगो वो दिनकरु। श्रीमुख दरशन पाय ॥७॥
प्रणमी पद्पंकज भणी। अरिगंजन अरिहंत ॥
कथन करूं हूं जीवनुं। किंचित मुझ विरतंत ॥८॥
आरंभ विषय कषाय वश। भमियो काल अनंत ॥
लख चोराशी योनिमें। अब तारो भगवंत ॥ ६ ॥
देव गुरू धर्म सूत्रमें। नवतत्वादिक जोय ॥
अधिका ओछा जे कह्या। मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥१०॥
मोह अज्ञान मिथ्यात्वको। भरियो रोग अथाग ॥
वैद्यराज गुरु शरण थी। औषध ज्ञान वैराग ॥११॥
जे मैं जीव विराधिया। सेव्यां पाप अठार ॥
प्रभू तुमारी साखसें। वारंवार धिक्कार॥ १२ ॥
बुरा बुरा सबको कहे। बुरा न दीसे कोय ॥
जो घट सोधूं आपनो। तो मोसूं बुरा न कोय ॥१३॥

कहेवामें आवे नहीं। अवगुण भर्यो अनंत ॥
लिखवामैं क्यों कर लिखुं। जाणे श्रीभगवंत ॥१४॥
करुणा निधि कृपा करी। कठिण कर्म मोय छेद ॥
मोह अज्ञान मिथ्यात्वको। करजो गंठो भेद ॥१५॥
पतित उद्धारण नाथजी अपनो विरुद विचार ॥
भूल चूक सब म्हायरी ॥ खमिये वारंवार ॥ १६ ॥
माफ करो सब म्हायरा। आज तलकना दोष ॥
दीनदयाल देवो मुने। श्रद्धा शील संतोष ॥ १७ ॥
आतम निंदा शुद्ध भणी। गुणवंत वंदन भाव ॥
राग द्वेष पतला करी सबसें खिमत खिमाव ॥१८॥
छूटूं पिछला पापसें। नवा न बंधूं कोय ॥
श्रीगुरु देव प्रसादसें। सफल मनोरथ होय ॥१९॥
परिग्रह ममता तजि करी। पंच महाव्रत धार ॥
अंत समय आलोयणा। करुं संथारो सार ॥२०॥
तीन मनोरथ ए कह्या। जो ध्यावे नित मन्न ॥
शक्ति सार वरते सही। पावे शिव सुख धन्न ॥२१॥
अरिहंत देव निर्ग्रंथ गुरु। संवर निर्ज्जरा धर्म ॥

केवली भाषित शास्त्रए। एही जिनमत मर्म ॥२२॥
आरंभ विषय कषाय तज । शुध समकित व्रत धार॥
जिन आज्ञा परमाण कर । निश्चय खेवो पार ॥२३॥
क्षण निकमो रहेणो नही । करणौ आतम काम ॥
भणनो गुणनो शीखणो । रमणो ज्ञान आराम ॥२४॥
अरहंत सिद्ध सर्व साधुजी । जिन आज्ञा धर्मसार ॥
मंगलीक उत्तम सदा । निश्चय शरणां चार ॥२५॥
घड़ी घड़ी पल पल सदा । प्रभु समरणको चाव ॥
नरभव सफलो जो करे, दान सियल तप भाव ॥२६॥

❀ दोहा ❀

सिद्धां जेसो जीव है । जीव सोई सिद्ध होय ॥
कर्म मेलका अंतरा । बूझे विरला कोय ॥ १ ॥
कर्म पुद्गल रूप है । जीव रूप है ज्ञान ॥
दो मिलकर बहुरूप है । विछड्यां पद निरवाण ॥२॥
जीव करम भिन्न भिन्न करो । मनुष्य जनमकूं पाय ॥
ज्ञानातम वैराग्यसें । धीरज ध्यान जगाय ॥ ३ ॥
द्रव्यथकी जीव एक है । क्षेत्र असंख्य प्रमान ॥

कालथकी सर्वदा रहे। भावे दर्शन ज्ञान ॥ ४ ॥
गर्भित पुग्दल पिंडमें। अलख अमूरति देव ॥
फिरे सहज भव चक्रमें। यह अनादिकी टेव ॥५॥
फूल अत्तर घी दूधमें। तिलमें तैल छिपाय ॥
युं चेतन जड़ करम संग। बंध्यो ममत दुःख पाय ॥६॥
जो जो पुद्गलकी दशा। ते निज माने हंस ॥
याही भरम विभाव तें। बढ़े करमको वंस ॥ ७ ॥
रतन बंध्यो गठड़ी विषे। सूर्य छिप्यो घनमांय ॥
सिंह पिंजरामें दियो। जोर चले कछु नाय ॥८॥
ज्युं बंदर मदिरा पियां। विच्छू डंकत गात ॥
भूत लग्यो कौतुक करे। त्युं कर्मोंका उत्पात ॥९॥
कर्म संग जीव मूढ़ है। पावे नाना रूप ॥
कर्मरूप मलके टले। चेतन सिद्ध सरूप ॥ १० ॥
शुद्ध चेतन उज्वल दरब। रह्यो कर्म मल छाय ॥
तप संयमसें धोवतां। ज्ञान ज्योति बढ़ जाय ॥११॥
ज्ञान थकी जाणे सकल। दर्शन श्रद्धा रूप ॥
चारित्रथी आवत सके। तपस्या क्षपन सरूप ॥१२॥

कर्मरूप मलके शुधे । चेतन चांदी रूप ॥
निर्मल ज्योति प्रगट भयां । केवलज्ञान अनूप ॥१३॥
मुसीपावक सोहेगी । फूक्यां तणो उपाय ॥
रामचरण चारूं भलयां । मैल कनकको जाय ॥१४॥
कर्मरूप बादल मिटे । प्रगटे चेतन चंद ॥
ज्ञान रूप गुण चांदणी । निर्मल ज्योति अमंद ॥१५॥
राग द्वेष दो बीजसें । कर्म बंधकी व्याध ॥
ज्ञानातम वैराग्यसें । पावे मुक्ति समाध ॥ १६ ॥
अवसर वीत्यो जात है । अपने वश कछु होत ॥
पुन्य छतां पुन्य होत है । दीपक दीपक ज्योत ॥१७॥
कल्पवृक्ष चिन्तामणि । इन भवमें सुखकार ॥
ज्ञान शुद्धि इनसें अधिक । भवदुःखभंजनहार ॥१८॥
राइ मात्र घट वध नही । देख्यां केवल ज्ञान ॥
यह निश्चय कर जानके । तजिए परथम ध्यान ॥१९॥
दूजाकूं भी न चिंतिये । कर्मबंध बहु दोष ॥
त्रीजा चौथा ध्यायके । करिये मन सन्तोष ॥२०॥
गई वस्तु सोचे नहीं । आगम वंछामांह ॥

वर्त्तमान वर्ते सदा। सो ज्ञानी जगमांह ॥२१॥
अहो समदृष्टी जीवडा। करे कुटुम्ब प्रतिपाल ॥
अंतर्गत न्यारा रहे। ज्युं धाइ खिलावे बाल ॥२२॥
सुख दुख दोनूं बसत है। ज्ञानीके घट माय ॥
गिरि रस दीखे मुकुरमें। भार भीजवो नाय ॥२३॥
जो जो पुद्‌गल फरसना। निश्चे फरसे सोय ॥
ममता समता भावसें। करमबंध खै होय ॥ २४ ॥
बांध्या सोही भोगबे। कर्म शुभाशुभ भाव ॥
फल निर्जरा होत है। यह समाधि चित चाव॥२५॥
बांध्या बिन भुगते नहीं। बिन भुगतां न छोड़ाय॥
आपहि करता भोगता। आपहि दूर कराय ॥२६॥
पथ कुपथ घट बध करी। रोग हानि वृद्धि थाय ॥
युं पुण्य पाप किरिया करी। सुखदुःख जगमेंपाय ॥२७॥
सुख दीयां सुख होत है। दुःख दीयां दुःख होय ॥
आप हणे नहीं अवरकुं। तो अपने हणे नकोय॥२८॥
ज्ञान गरीबी गुरु वचन। नरम वचन निर्दोष ॥
इनकुं कभी न छाडिए। श्रद्धा शील संतोष ॥२९॥

सत मत छोड़ो हो नरा । लक्ष्मी चौगुणी होय ॥
सुख दुःख रेखा कर्मकी । टाली टले न कोय ॥३०॥
गोधन गज धन रत्न धन । कंचन खान सुखान ॥
जब आवे संतोष धन । सब धन धूल समान॥३१॥
शील रतन मोटो रतन । सब रतनांकी खाण ॥
तीन लोककी सम्पदा । रही शीलमें आण ॥३२ ॥
शीले सर्पन आभडे । शीले शीतल आग ॥
शीले अरि करि केशरी । भय जावे सब भाग ॥३३॥
शील रतनके पारखु । मीठा बोले वेण ॥
सब जगसें ऊंचा रहे । जो नीचा राखे नेण ॥३४॥
तनकर मन कर वचन कर । देत न काहू दुःख ॥
कर्म रोग पातक झरे । देखत वांका मुख ॥ ३५॥
पान झरंतो इम कहे । सुनु तरुवर वन राय ॥
अबके बिछुरे ना मिलें । दूर पड़ेंगे जाय ॥ १ ॥
तव तरुवर उत्तर दियो । सुनो पत्र एक बात ॥
इस घर एही रीत है । एक आवत एक जात ॥२॥
वरस दिनाकी गांठको । उच्छव गाय बजाय ॥

मूरख नर समझे नहीं । बरस गांठको जाय ॥३॥

❀ सोरठो ❀

पवन तणो विश्वास । किण कारण तें दृढ़ कियो ॥
इनको एही रीत । आवेके आवे नहीं ॥ ४ ॥

❀ दोहा ❀

करज विरानां काढ़के । खरच किया बहु नाम ॥
जब मुद्दत पूरी हुवे । देनां पड़शे दाम ॥ ५ ॥
बिनु दीयां छूटे नहीं । यह निश्चय कर मान ॥
हँस हँसके क्युं खरचिये ॥ दाम बिराना जान ॥६॥
जीव हिंसा करतां थकां । लागे मिष्ट अज्ञान ॥
ज्ञानी इम जाणे सही । विष मिलियो पकवान ॥७॥
काम भोग प्यारां लगे । फल किंपाक समान ॥
मीठी खाज खुजावतां । पीछे दुःखकी खान ॥८॥
तप जप संजम दोहिलो । औषध कड़वी जाण ॥
सुख कारण पीछे घणा । निश्चय पद निरवाण ॥९॥
डाभ अणी जल बिंदुओ । सुख विषयनको चाव ॥
भवसागर दुःख जल भर्यो । यह संसार स्वभाव ॥१०॥

चढ़ उत्तंग जहँसे पतन । शिखर नहींवो कूप ॥
जिस सुखअन्दरदुःख वसे,सोसुखभी दुःखरूप ॥११॥
जब लग जिसके पुण्यका । पहुंचे नहीं करार ॥
तब लग उसको माफ है । अवगुण करे हजार ॥१२॥
पुण्य खीन जब होत है । उदय होत है पाप ॥
दाझे वनकी लाकड़ी । प्रजले आपोआप ॥ १३ ॥
पाप छिपाया ना छिपे । छिपे तो मोटा भाग ॥
दाबी दूबी ना रहे । रुई लपेटी आग ॥ १४ ॥
बहु वीती थोड़ी रही । अब तो सुरत संभार ॥
परभव निश्चय चालणो । वृथा जन्म मत हार ॥१५॥
चार कोस ग्रामांतरे । खरची बांधे लार ॥
परभव निश्चे जावणो । करिये धर्म विचार ॥१६॥
रजब रज ऊंची गई । नरमाई के पान ॥
पत्थर ठोकर खात है । करड़ाइके तान ॥ १७ ॥
अवगुण उर धरिए नहीं । जो हुये विरष बवूल ॥
गुण लीजे कालू कहे । नहिं छायामें सूल ॥ १८ ॥
जैसी जापें वस्तु है । वैसी दे दिखलाय ॥

वाका बुरा न मानिये । वो लेन कहांसे जाय ॥१९॥
गुरु कारीगर सारिखा । टांकी वचन विचार ॥
पत्थरसे प्रतिमा करे । पूजा लहे अपार ॥ २० ॥
संतनकी सेवा कियां । प्रभु रीभत है आप ॥
जाका बाल खिलाइये । ताका रीभत बाप ॥२१॥
भवसागर संसारमें । दिया श्री जिनराज ॥
उद्यम करि पहुँचे तिरे । बैठी धर्म जहाज ॥ २२॥
निज आतमकूं दमन कर । पर आतमकूं चीन ॥
परमातमको भजन कर । सोई मत परवीन ॥२३॥
समभू शंके पापसें । अण समभू हरषंत ॥
वे लुखां वे चीकणां । इण विध कर्म बधंत ॥ २४ ॥
समभू सार संसारमें । समभू टाले दोष ॥
समभ समभ करि जीवही । गया अनन्ता मोक्ष॥२५॥
उपशम विषय कषायनो । संवर तीनूं योग ॥
किरिया जतन विवेकसें । मिटें कुकर्म दुःख रोग ॥२६॥
रोग मिटे समता बधे । समकित व्रत आधार ॥
निर्वैरी सब जीवको । पावे मुक्ति समाध ॥ २७ ॥

इति भूल चूक। मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति श्रावक लालाजी रणजीतसिंहजी कृत

दोहा सम्पूर्णम्

श्री पंच परमेष्टी भगवद्भ्यो नमः

❀ दोहा ❀

सिद्ध श्री परमात्मा। अरिगंजन अरिहंत ॥
इष्टदेव वंदू सदा। भयभंजन भगवंत ॥ १ ॥
अनन्त चोवीशी जिन नमूं। सिद्ध अनन्ता कोड ॥
वर्त्तमान जिनवर सभी। केवली प्रत्यक्ष कोड ॥२॥
गणधरादि सब साधुजी। समकित व्रत गुण धार॥
यथायोग्य वंदन करूं। जिन आज्ञा अनुसार ॥३॥

प्रथम एक नवकार गुणवो ॥

❀ दोहा ❀

पंच परमेष्टी देवनो। भजनपूर पंचान ॥
कर्म अरी भाजे सवी। शिवसुख मंगल थान ॥४॥
अरिहंत सिद्ध समरूं सदा। आचारज उवझाय ॥
साधु सकलके चरणकुं। वंदू शीश नमाय ॥ ५ ॥

शासन नायक समरिये। वर्द्धमान जिनचन्द ॥
अलिय विघन दूर हरे। आपे परमानन्द ॥ ६ ॥
अंगूठे अमृत बसे। लब्धि तणा भंडार ॥
जे गुरु गौतम समरिये। मनवंछित फल दातार ॥७॥
श्रीजिन युग पद कमलमें, मुझमन अलिय वसाय ॥
कब ऊगे वो दिनकरु। श्रीमुख दरशन पाय ॥८॥
प्रणमी पद पंकज भणी। अरिगंजन अरिहंत ॥
कथन करूं हूवे जीवनुं। किंचित सुझ विरतंत ॥९॥

❀ सोरठो ❀

हुं अपराधि अनादिको। जनम जनम गुना किया भरपूर के। लूटीया प्राण छकायना। सेवियां पाप अठार करूरके॥ श्री सु० ॥ १० ॥१॥

आज ताइं इन भवमें पहलां, संख्याता, असंख्याता, अनन्ता भवमें, कुगुरु, कुदेव, अरु कुधर्म कीसद्दहणा, प्ररूपणा, फरसना, सेवनादिक सम्बन्धी पाप दोष लाग्या, ते मिच्छामिदुक्कडं ॥ २ ॥ मैंने अज्ञानपणे, मिथ्यात्वपणे, अव्रतपणे, कषायपणे,

अशुभयोगे करी, प्रमादे करी, अपछंदा, अविनीत-पर्णां कर्या ॥ ३ ॥ श्री श्री अरहिन्त भगवन्त वीतराग केवल ज्ञानी महाराजजीकी, श्रीगणधरदेव जीकी, आचारज महाराजजीकी, धर्माचार्यजी महाराजकी, श्री उपाध्यायजीकी, अने साधुजीकी, आर्याजी महाराजकी श्रावक श्राविकाजीकी, समदृष्टि साधर्मि उत्तम पुरुषांकी, शास्त्र सूत्रपाठकी, अर्थ परमाथकी, धर्म सम्बन्धी सकल पदार्थोंकी, अवि-नय, अभक्ति, आशातनादिक करी, कराई अनु-मोदी मन वचन कयाए करी द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी, भावथी, सम्यक् प्रकारे, विनय भक्ति आराधना, पालना फरसना, सेवनादिक यथायोग्य अनुक्रमे नहि करी, नहि करावी, नहि अनुमोदी, ते मुजे धिक्कार धिक्कार, बारम्बार मिच्छामिदुक्कडं ॥ मेरी भूल चूक अवगुण अपराध सब माफ करो, बक्षो, मन वचन कायाये करी मुजसे खमावो ॥

❀ दोहा ❀

मैं अपराधी गुरु देवको। तीन भवनको चोर॥
ठगुं विराणा मालमें। हा हा कर्म कठोर॥ १ ॥

कामी कपटी लालची। अपछंदा अविनीत॥
अविवेकी क्रोधी कठिण। महापापी रणजीत ❀॥२॥

जे मैं जीव विराधिया। सेव्यां पाप अठार॥
नाथ तुमारी साखसें। वारम्वर धिक्कार॥ ३ ॥

मैंने छक्कायपणे छये कायकी विराधना करी पृथ्वीकाय अप्काय,तेउकाय,वाउकाय,वनस्पतिकाय वेइन्द्रिय, तेइंन्द्रिय, चौरिंद्रिय, पंचेंद्रिय, सन्नी, असन्नी, गर्भज चौदे प्रकारे समूछिम प्रमुख, त्रस, थावर जीवांकी विराधना करी,करावी,अनुमोदी, मन वचन कायाये करी, उठतां, वेसतां, सुतां, हालतां, चालतां, शस्त्र, वस्त्र मकानादिक उपकरणे करी, उठावतां धरतां, लेतां देतां, वर्त्ततां वर्त्तावतां, अप्पडिलेहणा दुप्पडिलेहणा सम्बधि अप्रमाज्जेना,

❀ पाठकको इस वचनके वाद अपना नाम कहना चाहिये।

दुःप्रमार्ज्जना, सम्बन्धि, अधिकी ओछी, विपरीत पुंजना, संबंधी और अहार विहारादिक नाना प्रकारका पडिलेहणा घणा घणा कर्तव्योमां, संख्याता असंख्याता अने निगोद आश्रयी अनन्ता जीवका, जितना प्राण लुट्या, ते सर्व जीवोंका, मैं पापी अपराधी हूं। निश्चेकरी बदलाका देणहार हूं, सर्व जीव मुझ प्रते माफ करो, मेरी भूल चूक अवगुण अपराध सब माफ करो, देवसी राइसी, पक्खी, चौमासी, अने सांवत्सरिक सम्बंधि, बारम्बार मिच्छामिदुक्कडं बारम्बारमैं खमाउं छुं; तुमे सर्व खमजो ॥

खामेमि सव्वे जीवा। सव्वे जीवा खमं तुमे ॥
मित्ति मे सव्वे भूएसु, वैरं मज्झं न केणइ ॥ १ ॥

वो दिन धन होवेगा, जो दिनमें छये कायका वैर बदलासें निवर्तूंगा। सर्व चौराशी लाखजीवा योनिकु अभयदान देऊंगा, सो दिन मेरा परम कल्याणका होवेगा ॥

❀ दोहा ❀

सुख दीया सुख होत है। दुःख दिया दुःख होय ॥
आप हणे नहीं अवरकूं। आप हणे नहिं कोय ॥१॥

इति दूजा पाप मृषावाद सो झूठ बोल्या ॥२॥

क्रोधवशे, मानवशे, मायावशे, लोभवशे, हास्ये करी, भयवशे, इत्यादिक मृषा वचन बोल्या ॥३॥ निंदा विकथा करी, कर्कश कठोर मर्मकी भाषा बोली, इत्यादिक अनेक प्रकारे मन वचन कायाये करी मृषावाद झूठ बोल्या, बोलाया, बोलताने अनुमोद्या।

❀ दोहा ❀

थापण मोसा मैं किया। करि विश्वासज घात ॥
परनारी धन चोरियां। प्रगट कह्यो नहिं जात ॥१॥

ते मुझे धिक्कार धिक्कार। वारंवार मिच्छामिदुक्कडं ॥ वो दिन मेरा धन्य होवेगा जिस दिन सर्वथा प्रकारे मृषावादका त्याग करूंगा, सो दिन मेरा परम कल्याण रूप होवेगा ॥ २ ॥

त्रीजा पाप अदत्तादान है सो अणदीठी वस्तु चोरी करीने लीधी, ते मोटकी चोरी, लौकिक विरुद्ध, अल्प चोरी घर सम्बधी नाना प्रकारका कर्त्तव्योमें उपयोग सहित, तथा बिना उपयोग अदत्तादान चोरी करी, कराइ, करताने अनुमोदी मन वचन कायाये करी, तथा धर्म सम्बंधी ज्ञान, दर्शन, चारित्र अरु तपकी श्री भगवन्त गुरु देवोंकी अण-आज्ञापणाये कर्या ते मुझे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिच्छामिदुक्कडं। सो दिन मेरा धन्य होवेगा जिस दिन सर्वथा प्रकारे अदत्तादानका त्याग करूंगा, वो दिन मेरा परम कल्याणका होवेगा ॥ ३ ॥ चौथा मैथुन सेवनने विषे मन वचन अरु कायाका योग प्रवर्त्ताया, नववाड सहित ब्रह्मचर्य नहीं पाल्या, नववाडमें अशुद्धपणे प्रवृत्ति हुई, आप सेव्या, अनेरा पासे सेवराया, सेवतां प्रत्ये भला जाण्या सो मन वचन कायाये करी मुझे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिच्छामिदुक्कडं ॥

वो दिन धन्य होवेगा जिस दिन मैं नववाड सहित ब्रह्मचर्य शील रत्न आराधूंगा, सर्वथा प्रकारे काम विकारसें निवर्तूंगा, सो दिन मेरा परम कल्याणका होवेगा ॥ ४ ॥ पांचमा परिग्रह जो सचित परिग्रह सो, दास दासी दुपद चौपद तथा मणि, पत्थर प्रमुख अनेक प्रकारका है, अरु अचित परिग्रह जो सोना, रूपा, वस्त्र, आभरण प्रमुख अनेक वस्तु हैं, तिनकी ममत मुर्च्छा आपणात करी । क्षेत्र घर आदिक नव प्रकारका बाह्य परिग्रह, अरु चौद: प्रकारका अभ्यंतर परिग्रहको राख्यो, रखायो राखतांने अनुमोद्यो, तथा रात्रि-भोजन अभक्ष आहारादि संबंधी पाप दोष सेव्या ते मुझे धिक्कार धिक्कार बारम्बार मिच्छामिदुक्कडं । वो दिन धन्य होवेगा जिस दिन सर्व प्रकारे परिग्रहका त्याग करी संसारका प्रपंचसेंती निवर्तूंगा, सो दिन मेरा परम कल्याण रूप होवेगा॥५॥ छट्ठा क्रोध पाप स्थानक, सो क्रोध करीने अपना

आत्माकुं, और परात्माकुं तपाया ॥ ६ ॥ तथा सातमा मान ते अहङ्कार भाव आण्या। तीन गारव, आठ मदादिक करया ॥ ७ ॥ तथा आठमी माया ते धर्म सम्बन्धी तथा संसार सम्बन्धी अनेक कर्त्तव्योंमें कपटाई करी ॥ ८ ॥ तथा नवमें लोभ ते मूर्छाभाव आण्यो। आशा तृष्णा वांछादिक करी ॥ ९ ॥ तथा दशमां राग ते, मनगमती वस्तुसों स्नेह कीधो ॥ १० ॥ तथा इग्यारमा द्वेष ते, अणगमती वस्तु देखीने द्वेष करयो ॥११॥ तथा बारमों कलह ते अप्रशस्त वचन बोलीने क्लेश उपजाव्यो ॥ १२ ॥ तथा तेरमां अभ्याख्यान ते अछतां आल दीधां ॥ १३ ॥ चौदमां पैशुन्य ते पराइ चाडी चुगली कीधी ॥ १४ ॥ पन्नरमां पर-परिवाद ते पराया अवगुणवाद बोल्या, बोलाया, अनुमोद्या ॥ १५ ॥ सोलमां रति अरति पांच इन्द्रियोना तेवीश विषय २४० विकारो छे, तेमां मनगमतीसों राग कर्यो, अणगमतीसों द्वेष

करयो, तथा संयम तप आदिकने विषे अरति करी, कराइ, अनुमोदी तथा आरम्भादिक असंयम प्रमादमें रति भाव कर्या,कराया, अनुमोद्या ॥१६॥ सतरमां मायामोसो पापस्थानक, सो कपट सहित झूठ बोल्या ॥ १७ ॥ अठारमां मिथ्यादर्शनशल्य सो श्री जिनेश्वर देवके मार्गमें शङ्का कंखादिक विपरीत प्ररूपणादिक करी, कराई, अनुमोदी॥१८॥ इत्यादिक इहां अठारः पापस्थानोंकी आलोयणा सो विशेष विस्तारे आपसें बने जिस मुजब कहेनी ॥ एवं अठारः पापस्थानक सो द्रव्यथकी, क्षेत्रथकी, कालथकी, भावथकी, जाणतां अजाणतां मन वचने अरु कायाये करी सेव्यां, सेवरायां, अनुमोद्यां, अर्थे, अनर्थे, धर्मअर्थे, कामवशे, मोहवशे, स्ववशे, परवशे, दीयावा, राओवा, एगोवा, परिसा, गओवा, सूत्तेवा, जागरमाणेवा, इनभवमें पहेलां संख्याता असंख्याता अनन्ता भवोंमें भवभ्रमण करतां आजदिन सुधी, राग,

द्वेष, विषय, कषाय, आलस प्रमादिक पौद्गलिक प्रपञ्च परगुण परजायकी विकल्प भूल करी, ज्ञानकी विराधना करी, दर्शनकी विराधना करी, चारित्रकी विराधना करी, चारित्राचारित्रकी तपकी विराधना करी शुद्ध श्रद्धा, शील सन्तोष क्षमादिक निज स्वरूपकी विराधना करी, उपशम, विवेक, संवर, सामायिक, पोसह, पडिक्कमणा, ध्यान, मौनादिक नियम, व्रत पच्चक्खाण. दान, शील तप प्रमुखकी विराधना करी, परम कल्याण-कारी इन बोलोंकी आराधना पालनादिक, मन वचन अरु कायासें करी नहीं, करावी नहीं, अनुमोदी नहीं ॥ छहो आवश्यक सम्यक् प्रकारे विधि उप-योग सहित आराध्या नहीं, पाल्या नहीं, फरस्या नहीं, विधि उपयोग रहित निराधार पणे कर्या, परन्तु आदर सत्कार भाव भक्ति सहित नहीं कर्या, ज्ञानका चौदः, समकितका पांच, बाराव्रतका साठ, कर्मादानका पन्द्रह, संलेषणाका पांच, एवं

नव्वाणु अतिचार मांहे तथा १२४ अतिचार मांहे तथा साधुजीका १२५ अतिचार मांहे तथा ५२ अनाचरणकी श्रद्धानादिकमें विराधनादिक जो कोई अतिक्रम व्यतिक्रम,अतिचारादिक सेव्या,सेवराव्या, अनुमोद्या, जाणतां, अजाणतां मन वचन कायाये करी ते मुझे धिक्कार धिक्कार, बारम्बार मिच्छामि-दुक्कडं ॥ मैंने जीवकूं अजीव सद्दर्या परूप्या, अजीवकूं जीव सद्दर्या परूप्या, धर्मकूं अधर्म अरु अधर्मकूं धर्म सद्दर्या परूप्या, तथा साधुजी को असाधु और असाधुका साधु सद्दर्या परूप्या, तथा उत्तम पुरुष साधु मुनिराज, महासतीयांजी की सेवा भक्ति यथाविधि मानतादिक नहीं करी, नहीं करावी, नहीं अनुमोदी, तथा असाधुओंकी सेवा भक्ति आदिक मानता पक्ष कर्या, मुक्तिका मार्गमें संसारका मार्ग, यावत् पचीश मिथ्यात्व मांहिला मिथ्यात्व सेव्या सेवाया, अनुमोद्या. मने करी, वचने करी, कायाये करी, पचीश कषाय

सम्बन्धी, पचीश क्रिया सम्बन्धी, तेत्रीश अशा-तना सम्बन्धी, ध्यानका उगणीश दोष, वन्दना का बत्रीश दोष, सामायिकका बत्रीश दोष, अने पोसहका अठारह दोष सम्बन्धी, मन वचन का-याये करी जे कांई पाप दोष लाग्या, लगाया, अनुमोद्या ते मुझे धिक्कार धिक्कार वारम्वार मिच्छा-मिदुक्कडं ॥ महा मोहनीय कर्मबंधका, त्रीश स्थानकका, मन वचन अरु कायासें सेव्या, सेवाया, अनुमोद्या ॥ शीलकी नव वाड, आठ प्रवचन माताकी विराधनादिक, तथा श्रावकका एकवीश गुण, अरु बाराव्रत क्रिया विरदावकी विरा-धनादि मन वचन अरु कायासें करी, करावी, अनुमोदी ॥ तथा तीन अशुभ लेश्याका लक्षणां की, वोलांकी, सेवना करी, अरु तीन शुभ लेश्या का लक्षणांकी, बोलांकी, विराधना करी ॥ वर्णा वार्त्ता उगेरामें श्री जिनेश्वर देवका मार्ग लोप्या गोप्या । नहीं मान्या, अछताकी थापना करी प्रव-

र्तीया, छताकी थापना करी नहीं, अरु अछताकी निषेधना नहीं करी, छताकी थापना अरु अछताकी निषेधना करनेका नियम नहीं कर्या, कलुषना करी तथा छ प्रकारे ज्ञानावरणीय बंधका बोल, ऐसेही छ प्रकारका दर्शनावरणीय बन्धका बोल, यावत् आठ कर्मकी अशुभ प्रकृतिबन्धका पञ्चावन कारण करी, बेयासी प्रकृति पापांकी बांधी बंधाई, अनु- मोदी मने करी वचने करी, कायाये करी, ते मुझे धिक्कार धिक्कार बारम्बार मिच्छामिदुक्कडं ॥ एक एक बोलसें लगाकर कोडा कोड़ी यावत् संख्याता, असंख्याता अनन्ता अनन्त बोलतांई, मैं जो जाणवा योग्य बोलको, सम्यक् प्रकारे जाण्या नहीं, सद्धर्या नहीं, प्ररूप्या नहीं तथा विपरीतपणे श्रद्धानादिक करी, कराइ, अनुमोदी मन वचन कायाये करी ते मुझे धिक्कार धिक्कार बारम्बार मिच्छामिदुक्कडं ॥ एक एक बोलसें यावत् अनन्ता अनन्त बालमें छांडवा योग्य बोलको छांड्या नहीं,

उनको मन वचन कायाये करके सेव्यां, सेवाया, अनुमोद्या सो मुझे धिक्कार धिक्कार बारम्बार मिच्छामिदुक्कडं ॥ एक एक बोलसें लगाकर यावत् अनंता अनंत बोलमें आदरवा योग्य बोल आदर्या नहीं, आराध्या पाल्या फरस्या नहीं, विराधना खंडनादिक करी, कराइ, अनुमोदी मन वचन कायाये करी, ते मुझे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिच्छामिदुक्कडं ॥ श्री जिन भगवंतजी महाराज आपकी आज्ञामें जो जो प्रमाद कर्या, सम्यक् प्रकारे उद्यम नही कर्या, नही कराया नहि अनुमोद्या, मन वचन काया करके अथवा अनाज्ञा विषे उद्यम कर्या, कराया, अनुमोद्या एक अक्षरके अनंतमें भाग मात्र दूसरा कोइ स्वप्न मात्रमें भी श्री भगवंत महाराज आपकी आज्ञासु अधिका ओछा विपरीतपणे प्रवर्त्यो हूं, ते मुझे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिच्छामिदुक्कडं ॥

❀ दोहा ❀

श्रद्धा अशुद्ध प्ररूपणा। करी फरसना सोय ॥
जाण अजाण पक्षपातमे। मिच्छामिदुक्कडं मोय ॥१॥
सूत्र अर्थ जाणू नहीं। अल्पवुद्धि अनजाण ॥
जिन भाषित सब शास्त्रए। अर्थ पाठ परमाण॥२॥
देव गुरू धर्म सूत्रकुं। नव तत्वादिक जोय ॥
अधिका ओछा जे कह्या, मिच्छामिदुक्कडं मोय ॥३॥
हुं मगसेलियो हो रह्यो। नही ज्ञान रस भीज ॥
गुरु सेवा ना करि शकूं। किम मुझ कारज सीझ ॥४॥
जाणे देखे जे सुणे। देवे सेवे मोय ॥
अपराधी उन सबनको। बदला देशूं सोय ॥५॥
गवन करूं वुगचा रतन। दरब भाव सब कोय ॥
लोकनमें प्रगट करूं। सूई पाई मोय ॥ ६ ॥
जैनधर्म शुद्ध पायके। वरतुं विषय कषाय ॥
एह अचंभा हो रह्या। जलमें लागी लाय ॥ ७ ॥
जितनी वस्तु जगतमें। नीच नीचसें नीच ॥
सबसें मैं पापी वुरो। फसूं मोहके बीच ॥ ८ ॥

एक कनक अरु कामिनी। दो मोटी तरवार ॥
उठ्यां था जिन भजनकूं। बिचमें लीया मार ॥९॥

❀ सवैया ❀

मैं महापापी छांडके संसार छार छारहीका बिहार करुं, आगला कुछ धोय कीच फेर कीच बीच रहूँ; विषय सुख चाहूँ मन प्रभुता बधारी है॥ करत फकीरी ऐसी अमीरीकी आस करूं काहेकु धिक्कार शिर पागडी उतारी है॥ १० ॥

❀ दोहा ❀

त्याग न कर संग्रह करूं। विषय वचन जेम आहार ॥
तुलसीए मुज पतितकुं। बारबार धिक्कार ॥११॥
राग द्वेष दो बीज है। कर्म बंध फल देत ॥
इनकी फांसी में बँध्यो। छूटूं नहीं अचेत ॥ १२ ॥
रतन बंध्यो गठडी विषे। भानु छिप्यो घनमांहि ॥
सिंह पिंजरामें दियो। जोर चले कछु नांहि ॥१३॥
बुरो बुरो सबको कहे। बुरो न दीसे कोय ॥
जो घट शोधूं आपणो, तो मोसूं बुरो न कोय ॥१४॥

कामी कपटी लालची। कठिण लोहको दाम ॥
तुम पारस परसंगथी। सुवर्ण थाशुं स्वाम ॥१५॥

❀ श्लोक ❀

मैं जपहीन हूँ तपहीन हूँ प्रभु हीन संब्वर समगत ॥ हे दयाल कृपाल करुणानिधि, आयो तुम शरणागत। प्रभु आयो तुम शरणागत ॥१६॥

❀ दोहा ❀

नहिं विद्या नहिं वचन बल। नहि धीरज गुण ज्ञान ॥
तुलसीदास गरीबकी। पत राखो भगवान ॥१७॥
विषय कषाय अनादिको। भरिया रोग असाध ॥
वैद्यराज गुरु शरणथी। पाऊं चित्त समाध ॥१८॥
कहेवामें आवे नहीं। अवगुण भर्‍यो अनंत ॥
लिखवामैं क्युं कर लिखूं। जाणे श्रीभगवंत ॥१९॥
आठ कर्म प्रबल करी। भमियो जीव अनादि ॥
आठ कर्म छेदन करी। पामे मुक्ति समाधि ॥२०॥
पथ कुपथ कारण करी। रोग हीन वृद्धि थाय ॥
इम पुण्य पाप किरिया करी। सुखदुःख जगमें पाय॥२१॥

बांध्या विण मुक्त नही। विण मुक्त्या न छुटाय ॥
आपहि करता भोगता। आपहि दूर कराय ॥२२॥
सूसायासे अविवेक हू। आंख मीच अंधियार ॥
मकडी जाल बिछायके। फसूं आप धिक्कार ॥२३॥
सब भखी जिम अग्नि हूं। तपियो विषय कषाय ॥
अवछंदा अविनीतमें। धर्मी ठग दुःख दाय ॥२४॥
कहाभयो घर छांडके। तज्यो न माया संग ॥
नागत्यजी जिम कांचली विष नहि तजियो अंग ॥२५॥
आलस विषय कषाय वश। आरंभ परिग्रह काज ॥
योनि चोराशी लख भम्यो। अब तारो महाराज ॥२६॥
आतम निंदा शुद्ध भणी। गुणवंत वंदन भाव ॥
राग द्वेष उपशम करी। सबसें खमत खमाव ॥२७॥
पुत्र कुपात्रज मैं हुओ। अवगुण भर्यो अनंत ॥
माहित वृद्ध विचारके। माफ करो भगवंत ॥२८॥
शासनपति वर्धमानजी। तुम लग मेरी दौड ॥
जैसे समुद्र जहाज विण। सूझत और नठौर ॥२९॥
भवभ्रमण संसार दुःख। ताका वार न पार ॥

निर्लोभी सत्गुरु बिना । कवण उतारे पार ॥३०॥
भवसागर संसारमें । दिया श्री जिनराज ॥
उद्यम करि पहुंचे तिरे । बैठी धरम जहाज ॥३१॥
पतित उधारन नाथजी । अपनो बिरुद विचार ॥
भूल चूक सब म्हायरी । खमिये वारंवार ॥ ३२ ॥
माफ करो सब म्हायरी । आज तलकना दोष ॥
दीनदयाल दियो मुझे । श्रद्धा शील संतोष ॥३३॥
देव अरिहंत गुरु निर्ग्रंथ । संवर निर्ज्जरा धर्म ॥
केवली भाषित शास्त्र ए । यही जैनमतमर्म ॥३४॥
इस अपार संसारमें । शरण नही अरु कोय ॥
यातें तुम पद भगतही । भक्त सहाई होय ॥३५॥
छूटूं पिछला पापथी । नवा न बांधू कोय ॥
श्रीगुरुदेव प्रसादसों । सफलमनोरथ होय ॥३६॥
आरंभ परिग्रह त्यजि करी । समकित व्रत आराध ॥
अंत अवसर आलोयके, अणसण चित्त समाध॥३७॥
तीन मनोरथ ए कह्या । जे ध्यावे नित्य मन्न ॥
शक्ति सार वरते सही । पामे शिव सुख धन्न ॥३८॥

श्री पंच परमेष्टी भगवंत गुरूदेव महाराजजी आपकी आज्ञा है, सम्यक् ज्ञान दर्शन, सम्यक् चारित्र, तप, संयम, संव्वर, निर्ज्जरा, मुक्ति मार्ग यथाशक्तिये शुद्ध उपयोग सहित आराधने, पालने, फरसने सेवनेकी आज्ञा है, बारंबार शुभ योग संबंधी सझाय ध्यानादिक अभिग्रह नियम व्रत पच्चक्खाणादि करणे, करावणेकी, समिति गुप्ति प्रमुख सर्व प्रकारे आज्ञा है ॥

❁ दोहा ❁

निश्चल चित्त शुद्ध मुख पढ़त । तीन योग थिर थाय ॥
दुर्लभ दीसे कायरा । हलु कर्मी चित्त भाय ॥१॥
अक्षर पद हीणो अधिक । भूल चूक कही होय ॥
अरिहंत सिद्धआतम साखसें मिच्छामिदुक्कडंमोय॥२॥

॥ भूल चूक मिच्छामिदुक्कडं ॥

इति श्रावक श्रीलालाजी साहेबरणजीत सिंहजीकृत बृहदालोयणा सम्पूर्णम् ॥

ॐ

पद्यात्मक श्रीवीरस्तुति

पुच्छिस्सुणं समणा माहणाय, अगारिणोया परितित्थियाय ॥ सेकेई णेगंतहियं धम्ममाहु, अणेलिसं साहु समिक्खयाए ॥ १ ॥ कहं च णाणं कहं दंसणंसे, सीलं कहं नाय सुतस्स आसी ॥ जाणासिणं भिक्खु जहातहेणं, अहा-सुतं बूहि जहाणिसंतं ॥ २ ॥ खेयन्नेसे कुसले [सुपन्ने पा०] महेसी, अणंतनाणीय अणंत दंसी, जसस्सिणो चक्खु पहट्ठियस्स, जाणाहिधम्मं च धिइं चपेहि ॥ ३ ॥ उड्ढं अहेयं तिरियं दिसासु तसाय जे थावर जेह पाणा ॥ सेणिच्चणिच्चे हि समिक्ख पन्ने, दीवेव धम्मं समियं उदाहू ॥४॥ सेसव्वदंसी अभिभूय नाणी, णिरामगंधे धिइमं ठितप्पा ॥ अणुत्तरे सव्व जगंसि विज्जं, गंथा अतीते अभए अणाऊ ॥५॥ सभूइपणे अणिए

अचारी, ओहंतरे धीरे अणंत चक्खु ॥ अणुत्तरे तप्पति सूरिएवा, वइरोयणि देवतमं पगासे॥६॥ अणुत्तरं धम्ममिणं जिणाणं, णेया मुणी कासव आसुपन्ने ॥ इंदेव देवाण महाणुभावे, सहस्स णेता दिविणं विसिट्ठे ॥७॥ से पन्नया अक्खय सागरेवा, महोदहीवावि अणंत पारे ॥ अणाइलेया अकसाई मुक्के (भिक्खु) सक्केव देवाहिव ईज्जुईमं ॥ ८ ॥ से वीरियेणं पडिपुन्न वीरिये, सुदंसणेवा णगसव्वे सेट्ठे ॥ सुरालएवासि मुदागरेसे, विरायए णेगगुणोववेए ॥ ९ ॥ सयं सहस्साणउ जोयणाणं, तिकंडगे पंडगवेजयंते ॥ से जोयणे णवणवति सहस्से; उद्धस्सितोहेट्ठसहस्समेगं ॥ १० ॥ पुट्ठे णभे चिट्ठइ भूमिवट्ठिए, जं सूरिया अणु परिवट्टयंति ॥ से हेम वन्ने बहु नंदणेय, जंसीरतिं वेदयंती महिन्दा ॥ ११ ॥ से पव्वए सद्द महप्पगासे, विरायती कंचण मट्ठ वन्ने ॥ अणुत्तरे गिरिसुय पव्वदुग्गे, गिरीवरेसे

जलिए व भोमे ॥ १२ ॥ महोइ मज्झंसि ठिते-
णगिंदे, पन्नायते सुरिय सूद्धलेसे ॥ एवं सिरी-
एउस भूरिवन्ने, मणोरमे जाव्इ अच्चिमाली
॥ १३ ॥ सुदंसणास्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चई
महतो पव्वयस्स ॥ एतोवमे समणे नायपुत्ते,
जातोजसो दंसणनाणसोले ॥ १४ ॥ गिरिवरेवा
निसहोययाणं, रुयए व सेट्ठे वलयायताणं ॥ तउ-
वमेसे जगभूइ पन्ने, मुणोण मज्झे तमुदाहुपन्ने
॥ १५ ॥ अणुत्तरं धम्ममुईरइत्ता, अणुतरं झा-
णवरं झियाइ ॥ सुसुक्कसुक्कं अपगंड सुक्कं,
संखिंदु एगंतवदातसुक्कं ॥ १६ ॥ अणुत्तरग्गं
परमं महेसी, असेस कम्मं सविसोहइत्ता ॥
सिद्धिंगते साइमणंतपत्ते, नाणेण सोलेणय
दंसणेण ॥ १७ ॥ रुक्खेसु णाते जह सामलोवा,
जस्सिं रतिं वेययंती सुवन्ना ॥ वणेसु वाणंदण
माहु सेट्ठं, नाणेण सोलेण य भूतिपन्ने ॥१८॥
थणियंव सद्दाण अणुत्तरे उ, चन्दोव ताराण

महाणुभावे ॥ गंधेसु वा चंदणमाहु सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिन्न माहु ॥१६॥ जहा सयंभू उद-हीणसेट्ठे, नागेसु वा धरणिंद माहु सेट्ठे ॥ खोउद् ए वा रस वेजयंते, तवोवहाणे मुणिवे-जयंते ॥ २० ॥ हत्थीसु एरावण माहुणाए, सीहो मिगाणं सलिलाण गंगा । पक्खी सुवा गेरुले वेणु देवे, निव्वाणवादी णिहणाय पुत्ते ॥ २१ ॥ जोहेसु णाए जह वीससेणे, पुप्फेसु वा जह अरविंद माहु ॥ खत्तीण सेट्ठे जह दंत वक्के इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥ २२ ॥ दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं, सच्चे सु वा अणवज्जं व-यंति ॥ तवेसुवा उत्तम बंभचेरं, लोगुत्तमे समणे नाय पुत्ते ॥ २३ ॥ ठिईण सेट्ठा लवसत्तमावा, सभा सुहम्माव सभाण सेट्ठा ॥ निव्वाण सेट्ठा जह सव्व धम्मा, णणायपुत्ता परमत्थीनाणी ॥ ॥ २४ ॥ पुढोवमे धुणइ विगय गेहि, न सण्णि-हिं कुव्वति आसुपन्ने ॥ तरिउं समुद्दं च महा-

भवोघं, अभयंकरे वीर अणन्त चक्खू ॥ २५ ॥
कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थं अ-
ज्झत्थ दोसा ॥ ए आणिवंता अरहा महेसी,
ण कुव्वई पाव ण कारवेइ ॥ २६ ॥ किरिया
किरियं वेणइयाणुवायं, अण्णाणियाणं पडियच्च
ठाणं ॥ से सव्ववायं इति वेयइत्ता, उवट्ठिए
संजम दीहरायं ॥ २७ ॥ से वारिया इत्थि
सराइभत्तं, उवहाणवं दुक्खखयट्ठयाए ॥
लोगं विदित्ता आरं पारंच, सव्वं पभू वारिय
सव्व वारं ॥ २८ ॥ सोच्चाय धम्मं अरहंत भा-
सियं, समाहितं अट्ठपदोपसुद्धं ॥ तं सद्दहाणाय
जणा अणाऊ, इंदाव देवाहिव आगमिस्संति ॥
॥ त्तिवेमि ॥ २६ ॥

इति श्रीवीरत्थुतीनाम षष्टमध्ययनं ॥ सम्मरं ॥

॥ कलश ॥

पंच महव्वय सुव्वय मूलं ।

समणा मणाइल साहू सुचिन्नं ॥

वेर वेरामण पजवसाणं ।

सव्व समुद्द महोदधि तिर्थं ॥ १ ॥

तित्थंकरेहिं सुदेसिय मग्गं ।

नरग तिरिख विवज्जिय मग्गं ॥

सव्व पवित्रं सुनिम्मिय सारं ।

सिद्धि विमाणं अवगुय दारं ॥ २ ॥

देव नरिंद नमसिय पूय ।

सव्व जुगुत्तम मंगल मग्गं ॥

दुधरी संगुणा नायक मेगं ।

मोक्ख पहस्स वडिंसग भूयं ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीवीर स्तुति समाप्तम् ॥

व्याख्यानके प्रारम्भ

की

॥ जिनवाणी स्तुति ॥

(सवैया)

वीर-हिमाचलसे निकसो, गुरु गौतमके मुख-कुण्ड ढरी है।
मोह-महाचल भेद चली, जगकी जड़तातप दूर करी है॥
ज्ञान-पयोनिधि मांहि रली, वहु भङ्ग तरंगन तें उछरी है।
ता शुचि शारद-गंग नदी प्रति, मैं अंजली निज शीश धरी है॥ १॥
ज्ञान-सुनीर भरी सरिता, सुरधेनु प्रमोद सुखीर निधानी।
कर्मज-व्याधि हरन्त सुधा, अवमैल हरन्त शिवाकर मानी॥
वीर-जिनागम ज्योति वड़ी, सुर वृक्ष समान महासुख दानी।
लोक अलोक प्रकाश भयो, मुनिराज वखानत हैं जिनवानी॥ २॥
शोभित देव विषै मघवा, उडुवृन्द विषै शशि मंगलकारी।
भूप-समूह विषै वलि चक्र, पती प्रगटे वल केशव भारी॥
नागनमें धरणेन्द्र वड़ो, अमरेन्द्र असूरनमें अधिकारी।
यों जिन शासन संघ विषै, मुनिराज दिपैं श्रुतज्ञान भंडारी॥ ३॥

(छन्द)

कैसे करि केतकी कनेर एक कह्यो जात,
आक-दूध गाय-दूध अन्तर घनेर है।
रीरी होत पीरी पर होस करे कंचनकी,
कहां कागबानी कहां कोयलकी टेर है।
कहां भानु तेज कहां आगियो बिचारो कहां,
पूनम उजारो कहां अमावस अंधेर है।
पक्ष छोड़ि पारखी निहारो नेक नीके करि,
जैन वैन और वैन अन्तर घनेर है ॥४॥
वीतराग बानी साची मुक्तिकी निसानी जानी,
सुकृतकी खानी ज्ञानी मुखसे बखानी है।
इनको आराधके तिरें हैं अनन्त जीव,
ताको ही जहाज जान सरधा मन आनी है।
सरधा है सार धार सरधासे खेवो पार,
श्रद्धा बिन जीव ख्वार निश्चै कर मानी है।
वाणी तो घनेरी पर वीतराग तुल्य नाहीं,
इसके सिवाय और छोरां सी कहानी है ॥५॥

॥ दोहा उपदेशी ॥

दया सुखानी वेलड़ी, दया सुखानी खाण ।
अनन्ता जीव मुक्त गया, दया तणा फल जाण॥१॥
हिंसा दुखानी वेलड़ी, हिंसा दुखानी खाण ।
अनन्ता जीव नरके गया, हिंसा तणा फल जाण॥२॥
जिम सुणो तिम ही करो, तो पहुंचो निरवाण ।
कई एक हृदय राख जो, थांने सुण्यांरो परमाण॥३॥
साधु भाव समचे कह्यो, मत कोई करजो ताण ।
कई एक हृदय राख जो, थांने सुणयारो परमाण ॥४॥

षट द्रव्यकी सज्झाय ।

षट द्रव्य ज्यामें कह्यो भिन्न भिन्न, आगम सुणत वखान
पंचास्ति काया नव पदारथ, पांच भाख्या ज्ञान॥१॥
चारित्र तेरे कह्या जिनवर, ज्ञान दर्शन प्रधान ।
जो शास्त्र नित सुणो भविषण आण शुद्ध मनध्यान
चौवीस तिर्थंकर लोक माही, तिरण तारण जहाज ।
नव वासु नव प्रतिवासु देवा, बारे चक्रवर्ती जाण ॥३
बलदेव नव सबहुवा त्रेसठ, घणा गुणारी खाण ।

जो शास्त्र नित सुनो भवियण, आण शुद्ध मन ध्यान ।४।
च्यार देशना दिवी जिनवर, कियो पर उपकार ।
पांच अणुव्रत तीन गुणव्रत च्यार शिक्षा धार॥५॥
पांच संवर जिनेश्वर भाख्या, दया धर्म प्रधान ।
जो शास्त्र नित सुणो भवियण, आण शुद्ध मन ध्यान
और कहां लग करूं वर्णन, तीन लोक प्रमाण ।
सुणता पाप विणास जावे, पावे पद निर्वाण ॥७॥
देव विमाणिक मांहे पदवी, कही पांच प्रधान ।
जो शास्त्र नित सुणो भवियण आण शुद्ध मन ध्यान

इति षट द्रव्यकी सज्झाय समाप्तम् ।

॥ नमोक्कार सहियं पचक्खाण ॥

उग्गए सूरे नमोक्कार सहियं पच्चक्खामि, चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागरेणं वोसिरामि ।

॥ पोरिसियंका पचक्खाण ॥

पोरिसिय पच्चक्खामि उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं, अन्नत्थणा

भोगेणं सहसागारेणं, पच्छन्न कालेणं, दिसामो-हेणं, साहुवयणेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ।

॥ एगासणंका पच्चक्खाण ॥

एगासणं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं, अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं सागारियागारेणं आउट्टणपसारेणं, गुरु अब्भु-ट्ठाणेणं महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि ।

॥ चउव्विहार उपवासका पच्चक्खाण ॥

सूरे उग्गए अभत्तट्ठं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं, अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमा-हिवत्तयागारेणं, वोसिरामि ।

॥ रात्रिचउव्विहारका पच्चक्खाण ॥

दिवस चरिमं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं,

सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिव-
त्तियागारेणं वोसिरामि ।

॥ अथ मुक्ति मार्गकी ढाल ॥

मुगतिरो मारग दोहलो जीया चतुर सुजान ।
भजलोनी भगवान, तज दोनी अभिमान ॥ मु०टेर॥
पृथवी काया नहीं छेदिये,जाणो निज मात समान।
त्रस थावर वासो वसे, घणा जीवा हंदी खाण॥१॥
पाणी विना परजा झुले, आशा करे रे राजन ।
ऊंचो मुखकर जोवता किरपा करो भगवान ॥२॥
बेचेरे फरजन आपरा, तो पिण नहीं मिले धान ।
धलको खाय धरती पड़े, ऊभा तज दे प्राण॥मु०३॥
तेऊ कायारो शसतर आकरो, वायू देवे रे बधाय ।
उड़ता पड़े रे पतंगिया, जीव घणा जल जाय ॥४॥
तेऊ वाऊरो नीसर्यो, मानव भव नहीं पाय ।
निश्चेरे जावे तिर्यंचमें, घणो दुखियारो थाय ॥५॥
वनास्पति दोय जातरी, भाखी श्री भगवान ।
सूई अग्रनिगोदमें, जीव अनन्ता वखान ॥ मु०६॥

ये पांचो ही थावर जाणिये, मतिवाओ तरवार।
जीव गरीब अनाथ छै, मति काटो निरधार॥मु०७॥
त्रसथावर हणिया बिना, पुद्गल पूजा न होय।
बिन भुगत्यां छूटे नहीं, मरसी घणो रोय रोय ॥८॥
पुद्गलरी त्रपती करे, परतिख लूटै रे प्राण।
अनुकम्पा घटमें नहीं, खुलि दुर्गति खाण ॥मु०६॥
रम्मत देखणने गयो, ऊभो रह्यो सारी रात।
लघुनीत संकाघणी बाहिरनि सरियो नहीं जात॥१०॥
नाचै बैस्यारो तायफो निरखे रंग सुरंग।
रमणीरे संगमें रचियो, पोढ़े लाल पिलंग॥मु०११॥
दुख करने सुख मानतो, रुलियो काल अनन्त।
लख चौरासी जीवा योनीमें, भाख्यो श्रीभगवंत॥
गल कट्टू मिलिया घणा, भरियो ठगांरो बजार।
कोई पुत्र जणनी जण्यो, चाले सूत्ररे अनुसार॥
आ सब सम्पदा कारमी, जाणो वालूडांरो ख्याल।
निश्चै परभव जावणो, बांधो पाणी पहिला पाल॥
सुसरारे घरे जीमतो, सखियां गाय रहीं गीत।

थोड़ा दिनामें पड़सी आंतरो निश्चेजानो यहीरीत ॥१५

कायरने चढ़े धूजणी, सूरा सनमुख होय।
नाठा जावे गीदड़ा, मानव भव दियो खोय ॥१६॥

ओ संग्राम कह्यो केवली; सूरा सनमुख थाय।
झूझ रहा अपनी देहसुं गुमान गर्व गंमाय ॥१७॥

जीव दयारो सिर सेहरो; बांध्यो श्री नेमजिनंद।
गज सुकमाल बनको बण्यो पाम्यां परमानन्द॥१८॥

मेतारज मोटा मुनि, धर्मरुचि अणगार।
हिंसाकुमतिसे डिगा नहीं,खोलया दयाना भण्डार १९

सेठ सुदर्शन जीतियो, जीव दयारे परसाद।
इन्द्र देवै परदक्षणा, उभा करे धन्यवाद ।सु०।२०॥

गोत्र तिर्थंकर बांधियो, श्रीकृष्ण मुरार।
आज्ञा दिधी आणन्दसुं,लेवो संजम भार ।सु।२१॥

साढ़ी बारा बरसां लगै, झूझया श्रीवीर जिनंद।
जीवदयारो सिर सेहरो, बाँध्यो त्रिसलारे नंद ॥२२॥

कालोरे मुख कियो चोरनो, फेरयो नगर मंझार।
समुद्रपाल ते देखनें, लीनों संजम भार ॥सु०॥२३॥

हिंस्यामें चोरीरी नियमा कही, लूंटै जीवांतणां बृन्द
कुगुरुरो भरमावियो, हो रह्यो अन्धाधुन्ध ॥मु०२४
करण मुनिसर इम भणे, पालो वरत अखंड।
जीवदयारो धर्म आदरो, भाख्यो श्रीभगवन्त॥मु०२५॥

❀ इति ❀

॥ अथ श्रीशांतिनाथ जीरो (तान) छन्द लिख्यते ॥

श्रीशांति जिनेश्वर सोलमांजी, जगतारन जगदीश,
विनती म्हारी सांभलो, मैं तो अरज करूं धरि शीश
(आंकड़ी)

प्रभुजी म्हारो प्राण अधारोरे, सर्व जिवां हित कारोरे
साता वरताई सर्व देशमें, प्रभु पेटमें पोढ्या छो आप
जन्मे सेती सायबा थे, तो आया घणारी दाय।
प्रभुजी मोरा प्राण अधारो रे
सर्व जीवांने हितकारोरे। चक्रवर्ति पदवी थां लीधी
प्रभु कीनो भरतमां राज, खुखभर संजम पालिया,
प्रभु सारिया छै आतम काज ॥प्रभु०॥

तीर्थनाथ त्रिभुवन धणी प्रभु थाप्या छै तीर्थ चार
समोसरण भेला रह्याजठे,सिंघ बकरीइक ठाम।प्र०।
सुरनर क्रोड़ सेवा करे, प्रभु वरषै छै अमृत धार
अभिझरैनिज साहेषा, थे तो आया घणोरे दाय ॥प्र०॥
देव घणा इमे ध्याविया प्रभु गरज सरी नहीं कोय
अषके साचा साहबामैं,तो अराध्या मन मांय ॥प्रभु॥
लख चोरासी जीवा जोनिमें,प्रभु भटक्यो अनंती वार
सेवक सरणे आवियो म्हारी आवागमन दो निवार ॥
साताकारी संतजी, प्रभु त्रिभुवन तारनहार
विन्ती म्हारी सांभलो मने भवसागर सूं तार ॥प्र०॥
रिख चौथमल जीरी।विनती,प्रभु सुण जो दुतियाछंद
अविचलपदवीथेपामिया,प्रभुआपअचलाजीरानंद॥प्रभु

॥ अथ कर्मोंकी लावणी ॥

करम नचावे ज्युं ही नाचे,ऊंची हुवणने सवी खसता
नकसीहुवणसूंकोईनराजी निंदाविकथाक्युंकरता(टेर)
ओगणबाद तूं बोले लोकांरा चेतन भूल है तुझमाहीं
थारे करममें कांईं लिखी है, थारी तुझ सूझे नाहीं

चवदै पूरब च्यार ज्ञान था, कर्मोंसे छूटा नाहीं।
ऊंचो चढ़के पड़े कीचड़में, ज्ञानी बचन झूठा नाहीं
पाप उदैमें आवे चेतन, फीर समणीमें आवे नाहीं
पुण्डरीक गोसालो देख जमाली, खोटी व्यापै घटमाहीं

(उड़ावणी)

मोह छाक मोटो मदपीसे, ओगण औरोंका तू क्यों घींसे॥ थारा ओगण तुझको नहीं दीसै, अनेक ओगण या थारी आतमा, ज्ञानी वच पकड़ो रस्ता। नकसी०॥
पांच प्रकारे काम भोग तूं, सेवे सेवावै सारा करता
शब्द बरण गन्ध रूप फरसतूं, जहर खायके क्यूं मरता
आछी भूंड़ी कथा लोकांरी, करतां आतम भारीकरता
केने सरावै केने विसरावै, हरख हरख आनंद धरता
आंव पंछे और पंबूल बावै, आम रस मुख किम पड़ता
रोग सोग दुख कलह दालिदर, दुखमें दुख पैदा करता

(उड़ावणी)

थारी म्हारी करता दिन जावै, आमा सामा भाठा भिड़ावै सुखमें दुख तूं बैर घलावै, ज्यों दीपकमें पड़ै

पतंगा चेतन दुरगति क्यूं पड़ना ॥ नकशी० ॥२॥
हुंनरो तूं क्या(काईं)सरावै,अणहूंतका क्या विसराता है
पुन्य पाप जो बांधा जीवनें वैसा ही फल पाता है
किणने माया दीवी भोगणने,कोई रखवाली करता है
जस अपजस जो लिखा करममें,जैसा कारज सरता है
पाप अठारे सेंधा जीवरे, इणमें सव ही फसता है
स्वादवाद (सुख) ओर काम भोगमें,कूचा पुन्नोंका करता है
(उड़ावणी)
रूच २ पाप बांधे तू सोरा, उदे आयां भोगंता दोरा
लख चौरासी भुगते फोड़ा, आक थोर और तुंबा
निंबोली पाप फल कड़वा लगता ॥ नकशी ॥३॥
विपाक सूत्रमें मिरगा लोढ़ो, देखो पाप उदै आया
हाथ पांव मुख आकार नाहीं, राजा घर बेटा जाया
जीमण पापी एक ही सुरमें भाड़ा नाड़ा उणमें लाया
ज्युं नदीके टोल समाने, इन खाखे उनकी काया
नरक सरीखा दुख जिन भाख्या,मलमूत्रमेंलपट रया
अत्यन्त दुर्गन्धजागा गन्धाबे,भवरेमांहीं डक्या रया

(उड़ावणी)

गाड़ी भर यो आहार करावे,उण भवरेमें कोईयन जावै
जो जावै तो मुरछा आवै, विचित्र गति करमोंकी
भाखी ज्ञानी वचन पकड़ो रसता ॥ नकसी० ॥४॥
क्रोध मान और माया लोभमें,चोर तणी गततेपाई
खाय रगड़ तुफ थुक्यो चेतन पगोंमें ठोकर खाई
विविध प्रकारे साग चौहटै ओडीमें मालण लाई
एक कोडीरे केई भागमें आनन्तीवार तूं विकआयो
च्यार गति छव काया मांही, दड़ी दोटे जूं भमि-
आयो काल अनन्तो वीत्यो हे चेतन, नरक
निगोद झोंको खायो (उड़ावणी)
उठे मान थे क्योंकीनोनी, हणे (अंबी) बोले ज्यूं
घोल्यो क्यूंनी
अनन्त जीवांरो तूंजो खूनी, नानुचवाण की इये
उपदेशी चतुर अर्थ हिरदै धरता ॥ नकशी० ॥५॥

❀ इति पद ❀

॥ सास उसासको थोकड़ो ॥

मगद देश राजगिरि नगरी जां श्रेणिक राजा राज करे। ट्यां सम्मण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी चउदेह हजार मुनिराजका परिवारसे समोसरिया। जिहां चन्दन बालाजी आदिदेइने छत्तिस हजार आरजांजीका परिवारसे पधार्यां, तब श्रेणिक राजा चेलणां राणी अभयकुमार अनेक राजपुत्र अंतेवर परिवार सहित भगवन्तने वन्दना करवाने गया।

❀ दोहा ❀

ज्यां चारे प्रकारकी प्रक्खदा, विद्याधरांकी जोड़।
गौतम स्वामी पूछिया, प्रश्न वेकर जोड़ ॥१॥
सुण हो त्रिभुवन धणी, पूंछूं वारे बोल।
तेनो उत्तर दीजिये, शङ्का दीजे खोल ॥ २ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना छमच्छर कितना ?

उत्तर—हो गौतमजी एक सौ ॥ १ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना जुग कितना ?

उ०—हो गौतमजी बीस॥ २ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षकी एना कितनी ?

उ०—हो गौतमजी दोय सौ ॥ ३ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना ऋतु कितना ?

उ०—हो गौतमजी छै सौ ॥ ४ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना महीना कितना ?

उ०—हो गौतमजी बारा सौ ॥ ५ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना पखवाड़ा कितना !

उ०—हो गौतमजी चौबीस सौ ॥ ६ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षकी अठवाड़ा कितना—?

उ०—हो गौतमजी अडतालीस सौ ॥ ७ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना दिन कितना ?

उ०—हो गौतमजी छत्तीस हजार ॥ ८ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षनी पहर कितनी ?

उ०—हो गौतमजी दो लाख अट्ठासी हजार ॥९॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना मुहूरत कितना ?

उ०—ही गौतमजी दस लाख ८० हजार ॥ १० ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना कच्ची घडियां कितनी
उ०—हो गौतमजी २१ लाख ६० हजार ॥११॥
प्र०—हो भगवान सौ वर्षना सास उसास कितना?
उ०—हो गौतमजी ४ अरब ७ क्रोड ४८ लाख ४० हजार। ❀ इति ❀
प्र०—हो भगवान कोई समदृष्टी जीव राग-द्वेष करके रहित दयाधर्म करके सहित, एक उपवास करके अष्टपोहरको पोसो करे तिणको कांई फल होवे!
उ०—हो गौतमजी २७ सौ अरब ७७ क्रोड ७७ लाख ७७ हजार ७ से ७७ पल्योपम झाजेरो नारकीनो आयु तुटे। देवतानो शुभ आयुष बांधे॥ १ ॥
प्र०—हो भगवान, कोई पोसा सहित पोरसी करे तिणको कांई फल होवे?
उ०—हो गौतमजी ३४६ क्रोड २२ लाख २२ हजार २२२ पाल्योपम झाजेरो नारकीनो आऊ

षो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ २ ॥

प्र०—हो भगवान कोई आधा मुहूरतको संवर करे तिणकों कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी ४६ करोड २६ लाख ६१ हजार ६ सै पल्योपम झाजेरो नारकीनों आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥३॥

प्र०—हो भगवान कोई एक समायक करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौमजी ६२ क्रोड ५६ लाख २५ हजार ६ सै २५ पल्योपम झाजेरो नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ ४ ॥

प्र०—हो भगवान कोई घड़ी घडीनी पच्चक्खान करे तिणकों कांई फल होवे !

उ०—हो गौतमजो २ क्रोड ५३ हजार ४०८ पल्योपम झाजेरो नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ ५ ॥

प्र०—हो भगवान कोई एक नवकार मन्त्रको

ध्यान करे तिनको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी १६ लाख ६३ हजार २६३ पाल्योपम झाजेरो नारकीनो आऊखो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ ६ ॥

प्र०—हो भगवान कोई एक अनापुर्वीगणे तिनको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी जगंन ५० सागरोपम झाजेरो उतकृष्टथा पांच सौ सागरोपमझाजेरो नारकीनो आऊखो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे

प्र०—हो भगवान कोई एक नवकार सी करे तिणकों कांई होवे ?

उ०—हो गौतमजी सौ वर्ष नारकीनो आऊखो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ ८ ॥

प्र०—हो भगवान! कोई एक पोरसी करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी १ हजार वर्ष नारकीनो आऊखो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ ६ ॥

प्र०—हो भगवान कोई दो पैरसी करे तिणको काईं फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी १० हजार वर्ष नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे॥१०॥

प्र०—हो भगवान कोई तीन पोरसी करे तिणको काईं फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी ! एक लाख वर्ष नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुप बांधे॥११॥

प्र०—हो भगवान कोई एक एकासणो करे तिणकों कांईं फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी दस लाख वर्ष नारकीनो आयुषो तुटे देवतानो शुभ आयुप बांधे॥१२॥

प्र०—हो भगवान कोई एक एकल ठाणो करे तिणको कांईं फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी एक क्रोड वर्ष नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे॥१३॥

प्र०—हो भगवान कोई एक नेई करे तिणको कांईं फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी दस क्रोड वर्ष नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ १४ ॥

प्र०—हो भगवान कोई एक अमल करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी एक अरब वर्ष नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ १५ ॥

प्र०—हो भगवान कोई एक उपवास करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी ! एक हजार क्रोड वर्ष नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ १६ ॥

प्र०—हो भगवान कोई एक अभिग्रह करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी ! दस हजार क्रोड वर्ष नारकीनो आऊषो तुटे। देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ १७ ॥ ❀ इति ❀

एक मुहूरतका ३७७३ सासउसास ॥ १ ॥

एक पहरका १४१४६ सासउसास ॥ २ ॥

एक दिन रातका ११३१६० सासउसास ॥ ३ ॥

१५ दिनका—१६६७८५० सासउसास ॥ ४ ॥

१ महीनाका—३३६५७०० सासउसास ॥ ५ ॥

३ महीनाका—११८०७१०० सासउसास ॥ ६ ॥

६ महीनेका—२३७०४२०० सास उसास ॥ ७ ॥

६ महीनेका—३०५६१३०० सास उसास ॥ ८ ॥

१२ महीनेका—४०७४८४००सासउसास जाणवो ६

॥ इति ॥

पृथ्वी कायका जीव एक मुहूरत में १२८२४ जनम मरण करे ॥ १ ॥

अपकायका जीव एक मुहूरतमें १२८२४ जनम मरण करे ॥ २ ॥

तेऊ कायका जीव एक मुहूरतमें १२८२४ जनम मरण करे ॥ ३ ॥

वायुकायका जीव एक मुहरतमें १२८२४ जनम मरण करे ॥ ४ ॥

प्रत्येक वनस्पतिकायका जीव एक मुहूरतमें ३२०० जनम मरण करे ॥ ५ ॥

साधारण वनस्पतिकायकाजीव एक मुहूरतमें ६५५३६ जनम मरण करे ॥ ६ ॥

वेइन्द्रीजीव एक मुहूरतमें ८० जनम मरण करे ॥७॥

ते इन्द्रीजीव एक मुहूरतमें ६० जनम मरण करे॥८॥

चऊ इन्द्रीजीव एक मुहूरतमें ४० जनम मरण करे॥६॥

असंनी पंचेन्द्रीजीव एक मुहूरतमें २४ जनम मरण करे ॥ १० ॥

संनी पंचेन्द्री जीव एक भव करे ।

॥ इति सासउसासको थोकडो संपूर्णम् ॥

॥ मोक्ष मार्गनो थोकड़ो प्रारम्भी ए छे॥

श्रीगौतम स्वामीजी महाराज हाथ जोड़ी मान मोड़ी वन्दणां नमस्कार करके समण भगवंत श्रीमहावीर देवने पूछता हुआ ॥

प्र०—हो भगवान ! जीव कर्मोंके वसकिम रमरयो?

"हो गौतमजी जिम तिलीमें तेल रमरयो"

"जिम सेलड़ीमें रस रमरयो"

"जिम दहीमें मक्खन रमरयो"

"जिम पाषाणमें धातु रमरयो"

"जिम फूलमें वासना रम रही"

"जिम खर पृथ्वीमें हींगलू रमरयो"

"तिम यो जीव कर्मोंके वस रमरयोछे ॥

प्र०—हो भगवान यो जीव किम करीने मुगतजावसी?

उ०—हो गौतमजी! जिम कोई संसारी पुरुष संसार की कला केलवीन जिम तिल्ली सुं तेल काढ़े

"सेलडीमेंसे रस काढ़े।"

"दहीमें सुं माखन काढ़े।"

"फूलमें सुं अतर काढ़े।"

"पाषाणमें सुं धातु काढ़े।"

"खर पृथ्वीमें सुं हींगुल काढ़े।"

तिम यो जीव, ज्ञान 'दर्शन' चारित्र, तप, अंगीकार करीने मुगत जावसी।

प्र०—हो भगवान ! जीव जीव सगला मुगतमें जावेगा अजीव अजीव अठे रह जावेगा?

उ०—हो गौतमजी नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र०—हो भगवान ! कांई कारण से ?

उ०—हो गौतमजी ! जीवका दो भेद एक सूक्ष्म दूसरा बादर । ते बादर कुं मुगतिछे सूक्ष्म कुं नहीं ।

प्र०—हो भगवान ! बादर बादर जीव सगला मुगतमें जावेगा, सूक्ष्म सूक्ष्म जीव सगला अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र०—हो भगवान ! कांई कारणसे ?

उ०—हो गौतमजी ! बादर दो भेद एक त्रस दूजा स्थावर त्रसकुं मुगती छे स्थावरकुं मुगत नहीं ।

प्र०—हो भगवान ! त्रस त्रस सगला मुगतमें जावेगा, स्थावर २ सगला अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान काँई कारण से ?

उ०—हो गौतमजी ! त्रसका दो भेद (१) पंचेंद्री ने (२) तीन विकलेन्द्री। पंचेन्द्रीकुं मुगत छे तीन विकलेन्द्री कुं मुगत नहीं।

प्र०—हो भगवान पञ्चेन्द्री २ सगला मुगत जावेगा तिन विकलेन्द्री २ सगला अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी ! नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान काँई कारण से ?

उ०—हो गौतमजी ! पंचेन्द्रीका दो भेद एक सन्नी दुजा असन्नी। सन्नीकुं तो मुगत छे असन्नी कुं मुगत नहीं।

प्र०—हो भगवान ! सन्नी २ सगला मुगत जावेगा

असन्नी २ सगला अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान कांईं कारणसे ?

उ०-हो गौतमजी! सन्नीका दो भेद, एक मनुष्य दूजा तिर्यञ्च, मनुष्य कुं तो मुगती छे त्रियंचकुं मुगती नहीं।

प्र०--हो भगवान मनुष्य २ सगला मुगतमें जावेगा त्रियञ्च त्रियञ्च अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०---हो भगवान कांईं कारणसे ?

उ०---हो गौतमजी! मनुष्यका दो भेद एक समदृष्टि, दूजा मिथ्यादृष्टि। सम्कदृष्टिकुं मुगत छे मिथ्यादृष्टीकुं मुगत नहीं।

प्र०--हो भगवान! समदृष्टी २ सगला मुगतमें जावेगा मिथ्यादृष्टि २ अठे रह जावेगा ?

उ०--हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समथ नहीं।

प्र०—हो भगवान काई कारणसे ?

उ०—हो गौतमजी ! समदृष्टीका दो भेद एक व्रती दूजा अव्रती; व्रतीकुं मुगत छे अव्रती कुं मुगत नहीं।

प्र०—हो भगवान व्रती व्रती सगला मुगतमें जावेगा, अव्रती २ अठे रह जावेगा ?

उ०---हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अथ समर्थ नहीं।

प्र०---हो भगवान ! काई कारणसे ?

उ०---हो गौतमजी ! व्रतीका दो भेद एक सवव्रती दूजा देशव्रती; सर्वव्रतीकुं मुगत छे देशव्रतीकुं मुगत नहीं।

प्र०--हो भगवान ! सर्वव्रती २ सगला मुगत में जावेगा देशव्रती २ अठे रह जावेगा ?

उ०---हो गौतमजी ! नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र०---हो भगवान ! कांई कारणसे ?

उ०—हो गौतमजी ! सर्वव्रतीका दो भेद एक प्रमादी दूजा अप्रमादी; अप्रमादीकुं मुगत छे, प्रमादीकुं मुगत नहीं ।

प्र०—हो भगवान ! अप्रमादी अप्रमादी सगला मुगतमें जावेगा, प्रमादी २ अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र०—हो भगवान ! कांई कारणसे ?

उ०—हो गौतमजी ! अप्रमादीका दो भेद एक क्रियावादी दूजा अक्रियावादी क्रियावादीकुं मुगत छे अक्रियावादीकुं मुगत नहीं ।

प्र०—हो भगवान ! क्रियावादी २ सगला मुगतमें जावेगा अक्रियावादी २ सगला अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र०—हो भगवान कांई कारणसे ?

उ०—हो गौतमजी ! क्रियावादीका दो भेद एक भवी दूजा अभवी, भवीकूं तो मुगत छे अभवीकुं मुगत नहीं ।

प्र०—हो भगवान ! भवी भवी सगला मुगतमें जावेगा अभवी २ अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र०—हो भगवान कांई कारणसे ?

उ०—हो गौतमजी ! भवीका दो भेद, एक विनीत दूजा अविनीत, विनीतकुं मुगत छे अविनीत कुं मुगत नहीं ।

प्र०—हो भगवान ! विनीत २ सगला मुगतमें जावेगा, अविनीत २ अठे रह जावेगा ।

उ०—हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र०—हो भगवान ! कांई कारणसे ?

उ०—हो गौतमजी ! विनीतका दो भेद एक सकषाई दूजो अकषाई, अकषाईकुं मुगत छे सकषाईकूं मुगत नहीं ।

प्र०—हो भगवान ! अकषाई अकषाई सगला मुगतमें जावेग सकषाई २ अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र०—हो भगवान ! कांई कारणसे ?

उ०—हो गौतमजी ! अकषाईका दो भेद एक उपशम श्रेणी दूसरा क्षपक श्रेणी, क्षपक श्रेणीवालाकूं मुगत छे उपशम श्रेणीवाला कूं मुगत नहीं ।

प्र०—हो भगवान क्षपकश्रेणी २ वाला सगला मुगतमें जावेगा उपशमश्रेणी २ वाला अठे रह जावेगा ?

उ०---हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र०---हो भगवान कांई कारणेसे ?

उ०---हो गौतमजी ? क्षपक श्रेणीका दो भेद, एक छद्‌मस्त दूसरा केवली; केवली कूं तो मुगत छे छद्‌मस्त कूं मुगत नहीं ।

प्र०---हो भगवान केवली २ सगला मुगतमें जावेगा छद्‌मस्त २ अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी ! नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र०—हो भगवान कांई कारण से ?

उ०—हो गौतमजी ! केवली का दो भेद एक संयोगी केवली दूसरा अयोगी केवली, अयोगी केवलीने मुगत छे संयोगी केवलीने मुगत नहीं; ते अयोगी केवली नी स्थिति, पांच लघु अक्षरकी–अः इः उः एः ॲः ए पांच लघु अक्षरकी स्थिति जाणवी ॥

॥ इति मोक्ष मार्गको थोकड़ो संपूर्णम् ॥

॥ २० बोलकरी जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे ॥

१—अरिहन्तजीका गुणग्राम करतो थको जीव कर्मांकी कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

२—सिद्ध भगवंतजीका गुणग्राम करतो थको जीव कर्मां की कोड खपावे, उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

३—आठ प्रवचन दया माताका आराधतो थको जीव कर्मांकी कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थङ्कर गोत्र बांधे।

४—गुणवन्त गुरूजीका गुणग्राम करतो थको जीव कर्मांकी कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

५—थेवरजीना गुणग्राम करतो थको जीव कर्मां की कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थङ्कर गोत्र बांधे।

६—बहुसूत्रीजीका गुण ग्राम करतो थको जीव कर्मांकी कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

७—तपसीजीका गुणग्राम करतो थको जीव कर्मांकी कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

८—भण्यागुण्या ज्ञान चितारतोथको जीवकर्मां की कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

९—समकित शुद्ध निर्मलीपालतो थकोजीव कर्मां की कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

१०-विनय करतो थको जीव कर्मांकी कोड़ खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे

११—दोय बेला पडिक्कमणो करतो थको जीव कर्मांकी कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

१२—लीयाव्रत पच्चक्खाण निरमलापालतो थको जीव कर्मांकी कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

१३-धर्म ध्यान सुक्ल ध्यान ध्यावतो थको जीव आर्त ध्यान रुद्र ध्यान वरजतो थकोजीव कर्मांकी कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवै तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

१४--बारह भेदे तपस्या करतो थको जीव कर्मांकी कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

१५—अभयदान सुपात्रदान देवतो थको जीव कर्मांकी कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

१६—व्यावच्च दस प्रकारकी करतो थको जीव कर्मांकी कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

१७—सर्व जीवाने साता उपजावतो थको जीव

कर्मा की कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

१८—अपूर्वकरण ज्ञान नयो नयो भणतो सीखतो थको जीव कर्मा की कोड खपावे, उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

१९—सूत्र सिद्धांतनो विनय भगती उत्कृष्टभावसे करतो थको जीव कर्मा की कोड खपावे, उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे

२०—ग्राम नगर पुर पाटन विचरता, मिथ्यात उत्थापतां, समगत थापतां जीव कर्मा की कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

॥ इति संपूर्णम् ॥

॥ गुरू चेलाको संवाद ॥

गुरू—देख्यो रे चेला बिना रूख छाया, देख्यो रे चेला बिना धन माया। देख्यो रे चेला बिना पास बन्धन, देख्योरे चेला बिना चोरी दंडन ॥१॥

चेला—देख्या गुरूजी बिना रूख छाया, देख्या गुरूजी बिना धन माया । देख्या गुरूजीबिना पास बन्धन, देख्या गुरूजी बिना चोरी दंडन ॥ २ ॥

गुरू—कहोनी चेला बिना रूख छाया, कहोनी चेला बिना धन माया । कहोनी चेला बिना पास बंधन । कहोनी चेला, बिना चोरी दण्डन॥३॥

चेला—बादल गुरूजी बिना रूख छाया, विद्या गुरू जी बिना धन माया । मोह गुरूजी बिना पास बंधन। चुगली गुरूजी बिना चोरी दण्डन ॥ ४ ॥

गुरू—देख्यो रे चेला बिना रोग गलतां, देख्यो रे

चेला बिना अग्नि जलतां। देख्यो रे चेला बिना प्यार प्यारा, देखो रे चेला बिना खार खारा ॥ १ ॥

चेला—देख्या गुरूजी बिना रोग गलतां, देख्या गुरूजी बिना अग्नि जलतां। देख्या गुरूजी बिना प्यार प्यारा, देख्या गुरूजी बिना खार खारा ॥ २ ॥

गुरू—कहोनी चेला बिना रोग गलतां, कहोनी चेला बिना अग्नि जलतां। कहोनी चेला बिना प्यार प्यारा, कहोनी चेला बिना खार खारा ॥ ३ ॥

चेला—चिन्ता गुरूजी बिना रोग गलतां, क्रोधी गुरूजी बिना अग्नि जलतां। साधू गुरूजी बिना प्यार प्यारा, हिंसा गुरूजी बिना खार खारा ॥ ४ ॥

गुरू—देख्यारे चेला बिना पाल सरवर, देख्यारे चेला बिना पान तरुवर। देख्यारे चेला बिना पांख

सूवा, देख्या रे चेला बिना मौत मूवा ॥१॥

चेला—देख्या गुरूजी बिना पाल सरवर, देख्या गुरूजी बिना पान तरवर। देख्या गुरूजी बिना पंख सूवो, देख्या गुरूजी बिना मौत मूवो ॥ २ ॥

गुरू—कहोनी चेला बिना पाल सरवर, कहोनी चेला बिना पान तरुवर। कहोनी चेला बिना पांख सूवा, कहोनी चेला बिना मौत मूवा ॥३॥

चेला—तृष्णा गुरूजी बिना पाल सरवर, नेत्र गुरूजी बिना पान तरवर। मन गुरूजी बिना पांख सूवा, निद्रा गुरूजी बिना मौत मूवा ॥ ४ ॥

॥ इति ॥

॥ गुरु दर्शन विनती ॥

भूल मत जावोजी गुरू म्हांने, बिछड़ मत जाओजी गुरू म्हाने ॥ म्हे अरज करोछों थाने ॥ भूल मत जाओजी ॥ टेर ॥ सदगुरू प्रेम हिया सों जडिया, प्रगट कहूँ क्या छाने । जो मुझसे अपराध हुए तो, करम दोष गुरू म्हांने ॥भू०॥१॥ भवसागर जलसे भरियो, जीव तिरण नहि जाने । जीरण नाव जोजरी डूबे, पार करो गुरू म्हांने ॥ भू०॥२॥ मैं चाकरसे चूक पड़ी तो, गुरू अवगुण नहिं माने । मैं बाल गुनाह किया बहुतेरा, पिता विरद इस जाने ॥ भू० ॥३॥ मेरी दौड जहां लग सदूगुरुजी, नमस्कार चरणामें । भैरू'लाल कर जोड वीनवे, धन धन है संताने ॥ भू० ॥४॥

॥ देव गुरू धर्म विषै स्तवन ॥

(देशी ख्यालकी)

गुरू ज्ञान नगीना, भलोरे बतायो मारग मोक्षको ॥ टेर ॥ अरिहंत देवने ओलख्या सरे, होवे परम कल्याण ॥ द्वादश गुणेकरी शोभता सरे, ते श्री अरिहंत जाण हो ॥गुरू०॥ १ ॥ निर-लोभी निरलालची सरे, ते गुरु लीजै धार । आप तरे पर तारसी सरे, ते साचा अणगार हो ॥गुरू॥ ॥२॥ भेख धारी छोडदेवो सरे, देखो अन्तरज्ञान । भेख देख भूलो मती सरे, करजोहिये पैछान हो ॥ गु० ॥३ ॥ वीतरागका वचनमें सरे, हिंसा न करवी मूल । हिंसा माहीं धर्म परूपे, ज्यांके मुंडे धूल हो ॥ गु० ॥ ४ ॥ देव गुरू धर्म कारने सरे, हिंसा करसीकोय । ते रूलसी संसारमें सरे, लीजो सूत्रमें जोय हो ॥ गु० ॥ ५ ॥ समकित दीधी मुझ गुरुसरे, जीव अजीव ओलखाय । त्रस थावर जाण्या बिना सरे, कहो समकित किम थाय हो

॥ गु० ६ ॥ दया दान उथापने बोले, वीर गया छे चूक । ते मर दुरगत जावसी सरे, करसी कूंका कूक हो ॥ गु०॥७॥ धर्म २ सब कोई कहे सरे, नहीं जाणे छे काय । धर्म होवे किण रीतसुं सरे, जोवो आगमके मांय हो ॥ गु० ॥ ८ ॥ गुरू प्रसादे समकित मिली सरे, गुरू सम और नहीं कोय । गुरू विमुख जे होय सी सरे, जेहने समकित किम होय हो ॥ गु० ॥ ६ ॥ कषाय परगत ओलखी सरे, लीजो समकित सार । राम कहे पाम्यां नहीं सरे, बिन समकित कोइ पार हो ॥ गु० ॥ १० ॥ समत उगणीसे असाढ़में सरे, नागौर शहर चौमास । कार्तिक बदी पंचमी सरे, सामी विरधी-चन्दजी प्रसाद हो ॥ गुरू ॥ ११ ॥

—इति पदम्—

जंबू कुमारजीरी सज्झाय

राजगृहीना वासीयाजी, जंबू नाम कवार, ऋषभदत्त रा डीकराजी भद्राज्यांरी माय, जंबू कह्यो मान लेजाया मत ले संजम भार ॥१॥ सुधर्मा स्वामी पधारियाजी राजगृही रे माय। कोणक वंदण चालियोजी, जंबू वांदण जाय ॥ जंबू० ॥२॥ भगवतवाणी वागरीजी, वरसे अमृत धार। वाणी सुणी वैरागियाजी,जाण्यो अथिर संसार ॥जंबू०॥३॥ घर आया माता कनेजी, वंदे वारम्बार। अनुमत दीजै म्हारी मातजी माता लेसुं संजम भार ॥जंबू॥ ॥४॥ माता मोरी सांभलो जननी लेसुं संजम भार ॥ जंबू० ॥ ये आठुहीं कामिणी, जंबू अपछरर उणीहार। परणीनें किम परिहरो, ज्यांरो किम निकले जमवार ॥ जंबू० ॥५॥ ये आठूहीं कामिणी, जंबू तुझ विन बिलखी थाय। रमियां ठमियां सु नीसरे ज्यांरो वदन कमल बिलखाय ॥ जंबू०॥६ ॥ मति हीणो कोइ मानवी माता मिथ्यामत भरपूर।

रूप रमणीसुं राचिया, ज्यांरा नहीं हुवा दुरगत दूर । माता मोरी सांभलो जननी लेसूं संजम भार ॥ जंबू० ॥ ७ ॥ पालपोस मोटो कियो, जंबू इम किम दे छिटकाय । मात पिता मेले झूरता, थाने दया नहिं आवे मांय ॥ जं० ॥८॥ एक लोटो पानी पियो, माता मायर बाप अनेक, सगलारी दया पालसुं माता आणीने चित्त विवेक । माता मोरी सां०॥९॥ ज्युं आंधारे लाकड़ी जंबू तूं म्हारे प्राण आधार । तुझ बिन म्हारे जग सूनो जाया जननी जीत वरास ॥जंबू०॥१०॥ रतन जड़ित रो पींजरो, माता सूवो जाणे सही फंद, काम भोग संसारना,माता ज्ञानी जाने झूठा फंद॥जंबू०॥११॥ पांच महाव्रत पालणो जंबू, पांचोही मेरु समान दोष बयालिस, टालणो जंबू, लेणो सुजतो आहार ॥ जं० ॥१२॥ पंच महाव्रत पालसुं माता पांचुंही सुख समान, दोष बयालिस टालसुं, माता लेसुं सुजतो आहार ॥ माता० ॥ १३ ॥

संजम मारग दोहिलो जंबू चलणो खांडेरी धार। नदी किनारे रूखड़ो जम्बू जद तद होय विनाश ॥ जम्बू० ॥१४॥ चांद विना किसी चांदणी, जंबू, तारा विना किसी रात। बीर विना किसी बैनड़ी, जम्बू झुरसी बारतिवार ॥ जंबू०॥१५॥ दीपक बिना मन्दिर सूनो कंता, पुत्र बिना परिवार। कंत बिना किसी कामिणी, कंता झुरसी बारोही मास। बालमजी कह्यो मान लो, थेतो मत लो संजम भार ॥ जं०॥१६॥ मात पिता मैलो मिल्यो, गोरी मिल्यो अनंती वार। तारण समरथ कोई नहीं गोरी, पुत्र पिता परिवार। सुन्दर कह्यो साँभलो, म्हे लेसुं संजम भार ॥जं०॥१७॥ मोह मत करो मोरी मातजी माता मोह कियां बंधे कर्म ? हालर हूलर क्या करो, माता मोह कीया बंधे कर्म ॥ मा० ॥ १८ ॥ ये आठूं ही कामिणी जंबु, सुख बिलसो संसार दिन पाछो पड़िया पछे थे तो लीजो संजम भार ॥ जं० ॥ १९ ॥ ए आठूं ही कामिणी माता, समझाई

एकण रात जिन जीरो धर्म पिछांणियो, माता संजम लेसी म्हारे साथ ॥मा०॥२०॥ मात पिताने तारिया, जंबू तारी छे आठुहिंनार सासु ससुरा ने तारिया जंबू पांचसे प्रभव परिवार। जंबू भलो चेतियो थेतोलीजो संजम भार ॥ मा० ॥ २१ ॥ पांचसै ने सत्ताइस जणासुं, जंबू लीनो संजम भार। इग्यारे जीव मुगते गया, साधूवाकी स्वर्ग मझार जंबू० ॥ २२ ॥

॥ इति पदम् ॥

पूज्य श्रीलालजी महर्षिकी लावणी।

श्रीहुकम मुनि महाराज हुवे बड़भागी। महाराज किया उद्धार कराया जी। शिवलाल उदय मुनि पाट चौथ श्रीलाल दिपायाजी ॥ टेर॥ उगणी सै छव्वीसे टोंक सहरके माहीं। महाराज पूज्यका जनम जो थाया जी। है ओस वंश वंच जिन कुल धन २ कहलायाजी चुनीलालजी पिता हरख बहु

पाये, महाराज सर्वको अधिक सुहायाजी। धन्य चांद कुंवरजी मात जिन्होंने गोद खिलाया जी (उडावणी) है क्या वालपणामें सूरत मोहनगारी जो देखे जिस कूं लागे अतिही प्यारी। है छोटी वयमें संगत साधांकी भारी। शुद्ध सरधा पामी मिथ्या मतको टारी। महाराज जैनका भक्त कहाया जी॥ शिवलाल० ॥ १ ॥ फिर कीवी सगाई मात आर भाईने, महाराज नार सुन्दर परणाया जी। है मान कुंवरिजी नाम रूप गुण संपन्न पाया जी फिर थोडा दिनामें चढ़ा अतुल वैरागे, महाराज संजम लेवा चित चायाजी। नहि दीनी आज्ञा मात भैरव साधूको गाधाजी (उडावणी) उगणी से बीसदूणा जो चारसालमें मुनि दीक्षा लीथी कोटेके साधनालमें। सब तजा जगत नहि आये मोह जालमें। नहीं लगा दिल आचार उनकी चालमें। महाराज फेर चौथ मुनी पैं आयाजी॥ शिवलाल० ॥ २ ॥ उगणी से सैंतालीस साल

महा सुखदाई, महाराज चौथपैं दिक्षा पाईजी। मुनि वृद्धिचन्दजी नेसराय शिक्षा सदगुरु फुरमाई जी। फिर संजम क्रिया पाले दिन २ चढ़ते, महा-राज सूत्रको ज्ञान सिखाईजी। बहु बोल थोकड़ा, सीख वुद्धि अधकी दिखलाईजी (उडावणी) अठारे बरस उमरमें तज घर बारे, नहीं ममता किससें तजा सर्व संसारे, बहु संजम किरिया पाले शुद्ध आचारे, वे पंच महाव्रत मेरुसम सिरधारे। महा-राज भव्य जीवां मन भायाजी॥ शिवलाल०॥३॥ ॥३॥ फिर केई वरसां लग ज्ञान गुरांसे लीना। महाराज साल सो चावन जाणोजी। क्या कातिक सुदीके मांह, शहर रतलाम पिछाणोजी। मुनि विनय वैयावच्च कर साता उपजाई। महाराज पूज्य मन अति हरखाणोजी! हे लेवो पूज्य पद आज स्वयं मुख इम फुरमाणोजी (उड़ावणी) जब गुरु आग्रहसें पूज पद मुनि लीनो। पूज मस्तक हाथ रख हित उपदेश बहु दीनो। मुनि शुद्ध भावसों

अमृत सम रस भीनो। चारो संघ सन्मुख भोला-
वण बहु दीनो, महाराज चौथ पूज्य स्वर्ग सिधा-
याजी ॥ शिवला० ॥ ४ ॥ मुनि सम भाव शांति
मूरत है प्यारी। महाराज सम्पगुण अधको पाया-
जी। ये भक्तवच्छल मुनिराज सर्वको अधिक सुहा
याजी। रतलाम शहर चौमासो पूरण करके महा-
राज फिर इन्दौर सिधायाजी। कई ग्राम नगर पुर
विचर बहु उपकार करायाजी (उंडावणी) मुनि
जहां जावे तहां लागे सबको प्यारे। क्या अमृत
वाणी मूरति मोहन गारे। मुनि जहां विचरै जहां
करै बहुत उपकारे। तपस्या सामाइक पोसध व्रत
बहुधारे, महाराज भव्य मन बहु हुलसायाजी ॥
शिव० ॥५॥ फेर साल अठावन नवे शहर पधास्या
महाराज जहांमें दरसण पायाजी, काई रोम २
हरखाय, हिया मेरा उमटायाजी। उस वखत थी
मेरे मनमें गुणकथ गाऊं, महाराज दिल मेरा लल-
चायाजी पिण थिरता नहीं थी, जिसमें नहीं कुछ

गुणकथ गायाजी (उड़ावणी) अब दीनदयाल दया निधि तुम हो मेरे, अब रखो हमारी लाज शरण हूँ तेरे। कृपाकर काटो लख चौरासी फेरे। दरशण कर पीछा आया फिर अजमेरे महाराज मनमें बहु पछतायाजी ॥ शिव० ॥ ६ ॥ अठावने साल जोधाणे चौमासो कीनो, महाराज धर्मका ठाठ लगायाजी, उमराव मुसद्दी लोग वचन सुण बहु हरषायाजी, जहां बहु त्याग पच्चक्खाण खन्ध हुवा भारी महाराज जैनका धर्म दिपायाजी। अमृत सम वाणी सुणकै बहु जीव सरधालायाजी (उड़ावणी) फिर साल एक कम साठ बीकाणे चौमासो। श्रावक श्राविका धर्म्म ध्यान किया खासो, तपस्याका नहीं था, पार, झूठ नहीं मासो. स्वमति परमति सुण वचन हुवा हुलासो, महाराज भव्य जीव केइ समझायाजी ॥ शिवला० ॥ ७ ॥ फिर साल साठके उदयपुर चौमासो, महाराज मुलक मेवाड़ कहायाजी, जहां लगन धर्मकी बहुत

जिन वचना चितलायाजी। जहां राज मुसद्दी अहलकार केई आये, महाराज दरशनकर प्रश्न थायाजी। फिर दिया खूब उपदेश जैन झण्डा फररायाजी (उड़ावणा) फिर साल इकाष्ठे टोंक चौमासो ठायो। जहां हुआ बहुत उपकार कै आनंद पायो। सब श्रावक श्राविका धर्म्मकरण हुलसायो। बहु हुआ त्याग पच्चक्खाण सर्व मन भायो। महाराज जन्मभूमि कहलायाजी ॥ शिव० ॥८। फिर साल बासठै जोधाणै चौमासो, महाराज दूसरी वार करायोजी यह बचन अमोलख सुनकै भव्य जीव बहु हरषायोजी। जहां दया सामायक हुआ बहुत सा पोसा महाराज खंभ कितना ही उठायोजी। तपस्या सम्बर नहीं पार भविक मन बहु लोभायोजी (उड़ावणी) फेर स्वमति परमति प्रश्न पूछणकूं आवै। बहु हेत जुगत भिन्न २ करके समझावै। बलिनय निक्षेप प्रमाण जो खूब बतावै नहीं पक्षपातका काम है सरल सभावै। महाराज

वचन सुण सब हुलसायाजी ॥ शिवलाल० ॥ ९ ॥
फिर साल तेसठे रतलाम आप पधारे महाराज, श्रावक श्राविका मनभायाजी। की चौमासेकी अरज पूज्यसें आण मनायाजी। ये वचन पूज्यका अमृत सम नित वरसै, महाराज सुणन सहुमन ललचायाजी। दीवान मुसद्दी और राज अहलकार केई आयाजी (उड़ावणी) जहां मुसलमान केई वखाण सुणवा आये। उपदेश पूज्यका सुणकर बहु हरषाये। जहां मद्य मांसका त्याग किया शुद्ध भावैं। फिर ठाकुर पचेडे काकूं शिकार छुडाये महाराज जैन पर भावक थायाजी ॥शिवला०॥ १०॥
फिर कर चौमासो भाण पुरे पधारे। महाराज भव्य जीव बहु हरपायाजी। एक ठाकुरकों समझाय बदद सेरा बचायाजी। फिर केइ जाल मच्छयांका बन्द करवाये। महाराज अतिसय गुण अधिका पायाजी। कांई सूरत देख दिलमस्त हुवै धर्म चित लायाजी। (उडावणी) जो वखाण सुणवा एक

बार कोई जावै । फिर नहीं कहणेका काम, तुरत चल आवै । उपदेश सुणके दिल उनका हुलसावै करै आपसुं पच्चक्खाण त्याग मन भावै । महाराज आपका गुणं बहु छायाजी ॥ शिवला० ॥ ११ ॥ फिर कोटेसे अजमेर जो आप पधारे महाराज नव-ठाणेंसे आयाजी । बहु हाव भावके साथ चौमासो जाण मनायाजी । अजमेर पधाखा सुणके जटमें आया । महाराज दरशणकर प्रश्न थायाजी । हुवो हरख हिये उल्लास जोड़ कथ गुणमें गायाजी (उडा-वणी) कहे लाल कन्हैया बीकानेरका वासी। अज-मेर लावणी जोड़के गाई खासी । चौसठ साल आसाढ़ एकम सुदि भासी । सब श्रावक श्राविका सुणके हुआ हुलासी । महाराज पूज्यका जस सवा-याजी । शिवलाल उदय मुनि पाट चौथ श्रीलाल दिपायाजी ॥१२॥

॥ इति संपूर्णम् ॥

॥ चौवीस तीर्थंकरका तवन ॥

जै जिन ओंकारा, प्रभु रट जिन ओंकारा, जामण मरण मिटावो प्रभुजी, कर भवोदधि पारा ॥ जै जिन ओंकारा०॥ केवल लोक अलोकं, प्रभु तीर्थंकर पद धारा ॥ प्रभु ती०॥ तिलोक दयालं, जग प्रतिपालं, गंभीरं भारा ॥ जै जिन ओं० ॥१॥ कर्म्मदल खण्डण, सिव मग मण्डण, चन्दण जिम शीलं ॥ प्रभु चं० ॥ छवकायाना रक्षण, मनरूपी भक्षण, ततक्षण अमीलं ॥ जय जि० ॥ २ ॥ श्रीऋषभ अजित शंभव अभिनन्दन, शांती करतारा ॥ प्रभु शांति क०॥ सुमति पद्म सुपास चन्दा प्रभु चन्दर जंत हारा ॥ जै जिन० ॥३॥ सुविध शीतल श्रेयांस वासु पूज्य स्वामी। प्रभू वासु पूज्य स्वामी ॥ विमल अनन्त श्री धरम शांतजी, सायर गंभीरा ॥ जैन जिन० ॥४॥ कुंथु अरि मल्ली मुनि सुव्रत जी तीन भवन स्वामी। प्रभु तीन भ० ॥ नमि नेम पारस महावीरजी, पञ्चम गति गामी ॥ जै जिन ओं ॥५॥

गौतमादिक गणधर, गणधर मुनि सेवा ॥ प्रभु गण० ॥ बखाण सुणन्ता मन आनन्दा, जो नर ले मेवा ॥ जै जिन० ॥६॥ जीव अराधे जिनमत साधे पामे सुख ठामं ॥ प्रभु पामे० ॥ नन्दलाल तेही गुणगावे, जो जिन लै नामं॥ जै जिन० ॥७॥

॥ इति पदम् ॥

श्री सीमन्धर जीरो स्तवन

श्री श्री सीमंधर सांम; इकचित बंदू हो वेकर जोड़ने, पूरब देसे हो प्रभुजी परवखा, नगरी पुण्डरपुर सुखठाम वेकर जोड़ी हो, श्रावक बीनवे, श्री सीमंधर स्वाम ॥ इकचित बंदूहो वेकर जोड़ने ॥१॥ चौतीस अतिशय हो प्रभुजी शोभता, वाणीपनरे ऊपर बीस, एक सहस लक्षण हो प्रभुजी आगला जाता रागनेरीस ॥ इक० ॥ २ ॥ काया धारी हो धनुष पांचसै, आउखो पूर्व चौरासी लाख निरवद्य

वाणी हो श्रीवीतरागनी, ज्ञानी अगम गम्य छे भाग्ज ॥ इक० ॥ ३ ॥ सेवा सारे हो थारी देवता, सुरपति थोड़ा तो एक करोड़ मुझ मन माहें हो.होस वसे घणी, वन्दू वेकर जोड़ ॥ इक० ॥ ४ ॥ आड़ा परवत हो नदियां अति घणी, बिचमें विकट विद्या-धर ग्राम, इणभव मांहे हो आय सकूं नहीं, लेसुं नित्त उठ थारो नाम ॥ इक० ॥५॥ कागद लिखूं हो प्रभु थांने बिनती, वन्दना वारम्वार । कुन्दनसागर हो कृपा कीजिये, बीनतडी अवधार ॥ इक०॥ ६ ॥

॥ इति पदम् ॥

श्री १००८ श्रीपूज्य श्रीजवाहिरलालजी महाराजका स्तवन ।

भज भज ले प्यारे पूजने, मोहे जाल हटाया ॥ टेर ॥

ंच महाव्रत पाल आपने, आत्म अपनी तारी ॥ तारी रे तारी, हां, तारी रे तारी ॥ भज० ॥ १ ॥ षट कायाके पीहर आप हैं, पर उपकारी भारी ।

भारी रे भारी हां, भारीरे भारी ॥ भज० ॥ २ ॥
शीतलचन्द्र समान सोभते, गुण रत्नोंके धारी ।
धारीरे धारी, हां, धारीरे धारी ॥ भज० ॥ ३ ॥
पाखण्ड खंडन जिन मत मंडन भवजीवनका तारी ।
तारीरे तारी हां तारीरे तारी ॥ भज० ॥ ४ ॥
दयाधर्म प्रचार आपने करदीना है जारी ।
जारीरे जारी, हां जारी रे जारी ॥ भज० ॥ ५ ॥
समत उन्नीसे साल पचासी, अगहन मासके माईं ।
माईं रे माईं, हां माईं रे माईं ॥ भज० ॥ ६ ॥
मङ्गल अरज करे पूज्य थाने, शहर पधारन ताईं ।
ताईं रे ताईं हां, ताईं रे ताईं ॥ भज० ॥ ७ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

दोहा

सासणपति श्रीवीर जिन, त्रिभुवन दीपक जाण ।
भवउदधी तारणतरण, वाहण सम भगवान ॥१॥
चरण कमल युग तेहना, वन्दे इन्द्र दिनेन्द ।

चन्द नरिन्द फनिन्द सुर, सेवें सुर नर वृन्द ॥२॥
तासु कृपासों उद्धर्या, जीव असंख्य सुज्ञान।
लहि शिव पद भव उदधि तरि, अजर अमर सुख धान
तसु मुख थी वाणी खरी, जिम श्रांवण बरसात।
अनन्तआतम ज्ञान थी भवि जन दुःख मिटात॥४॥
ते वाणी सद्गुरु मुखे, ते भवि हृदय धरन्त।
स्वपर भेद विज्ञान रस, अनुभव ज्ञान लहन्त॥५॥
उत्तम नर भव पायकर, शुद्ध सामग्री पाय।
जो न सुणे जिन वचनरस, अफल जमारो जाय॥६॥
ते माटे भवि जीव कूं, अवश्य उचित ए काज।
जिनवाणी प्रथमहि श्रवण, अनुक्रम ज्ञान समाज॥७
जिनवाणीके श्रवण विन, शुद्ध सम्यक् न होय।
सम्यक बिण आतम दरश, चारित्र गुण नहिं होय॥८
शुद्ध सम्यक् साधन विना, करणी फल शुभ बन्ध।
सम्यक रत्न साधन थकी, मिटे तिमिर सविधन्ध॥९
सम्यक्त भेद जिन वचनमें, भेद पर्य्याय विशेष।
पिण मुख दोय प्रकार है, ताको भेद अलेख॥१०॥

निश्चैं अरु व्यवहार नय, ये दोनों परिमाण ।
दधि मथने घृत काढ़वा,तेतो न्याय पिछाण ॥११॥
देव धर्म गुरु आसता, तजे कुदेव कुधर्म ।
ये व्यवहार सम्यक्त कहि, बाह्य धर्मनो मर्म ॥१२॥
निश्चैं सम्यक्त नो सही, कारण छे व्यवहार ।
ये समकित आराधता, निश्चेपण अवधार ॥ १३ ॥
निश्चैं सम्यक्त जीवने, पर परणति रस त्याग ।
निज स्वभावमें रमणता, शिव सुख नोए भाग ॥१४
वह्नु सम्यक्त तदलहे, समझे नव तत्वज्ञान ।
नय निक्षेप प्रमाणसुं, स्यादवाद परिणाम ॥१५॥
द्रव्य क्षेत्र इणही तणा, काल भाव विज्ञान ।
सामान्य विशेष समझते, होय न आतम ज्ञान॥१६

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

श्री १००८ मुनि श्री श्री गणेशीलालजी महाराजका स्तवन ॥

(तर्ज—सियाराम बुला लो अयोध्या मुझे)

स्वामी दया धर्म सुनादो मुझे ।
गणेशीलाल मुनी, तुम तारो मुझे ॥

शैर--शीतल चन्दर शोभते, जिम गगनमें तारा जिहां
मोहनी मूरत देखके, हुलसा रहा मेरा हिया ॥
गुरु सत्य धर्म सिखा दो मुझे ॥ स्वामी० ॥१॥

शैर--आज्ञा पूज्यकी धारके तुम, चूरुमें आये हिंयां ।
देशना भवि जीवकूं दे, तारते उनका जिया ॥
ऐसे दीनबन्धु तुम तारो मुझे ॥ स्वामी० ॥२॥

शैर--जीवकी रक्षा तणे, उपदेश करते आविया ।
समझायके सत्य प्रेमसे दया धर्मको फैलाविया ॥
दया धर्मकी राहे बतादो मुझे ॥ स्वामी० ॥३॥

शैर--व्याख्यान सुनवाआपका कइआवे नरव नारियां ।
रामचारितकी छटा, दया धर्म चितमें लाविया ॥
षट जीवके रक्षक तारो मुझे ॥ स्वामी० ॥४॥

शेर--सम्पत उनीसे पच्चासिमें चौमास चुरु ठायिया
दरशन करवा आपका मैं, शहर बीकाणेसे आविया
मंगल अरज करे गुरु तारो मुझे ॥स्वामी० ॥५॥

॥ इति पदम् ॥

॥ पूज्य श्री १००८ श्री श्री जवाहिरलालजी ॥
॥ महाराजका स्तवन ॥

पूज्य श्रीने ध्यावियेजी, नाम जवाहिरलाल ।
शांति मुद्रा देखनेजी, हरष हुआ नरनार जिनन्द-राय कीधा हो, दर्शन मार ॥ टेर ॥

देश मालवे मांयनेजी, शहर थांदल गुलजार
ओसवंशमें ऊपनाजी, जात कुवाड विख्यात ॥जि०॥
॥१॥ पिता जीव राजजी माता है नाथी नाम ।
धन्य जिनोरी कूख अवतर्या, ऐसे बाल गोपाल ॥
जि० ॥ २ ॥ सम्वत बत्तीसमें जन्मीयाजी, दीक्षा
अड़चासे मांय । चढ़ता भावासु आदरीजी मगन
मुनीपे आय ॥ जि० ॥ ३ ॥ दस छवकी वयमेंजी,

कीनो ज्ञान उद्योत । पंचमहाव्रत निरमलाजी पाल रह्या दिनरात ॥ जि० ॥ ४ ॥ तेज सूर्य सम है सही जी, शीतल चन्द्र समान । मुख देखो सुख उपजेजी, रटता जय जयकार ॥ जि० ॥५॥ धर्म बुद्धि थारी देखनेजी; पाखण्ड जीव कंपाय । अमृतवाणी सुणनेजी, मिथ्या देवे निवार ॥ जि० ॥ ६ ॥ भवि जीवांने तारतां जी आय पीकाणे पास । नवीलेनने तारनेजी, कीजो मेहर महाराज ॥ जि० ॥ ७ ॥ आशा करे सहु शहरमेंजी जेसे पपीहो मेघ । कल्प वृक्ष सम सोवताजी मेहर कीजो महाराज जि० ॥ ८ ॥ सम्वत उगनीसे मांयनेजी, साल चौरासी जाण । मंगलचन्द थाने वीनवेजी त्रिविधि शीश नमाय ॥ जि० ॥ ९ ॥

॥ पूज्य श्री १००८ श्री श्रीजवाहिरलालजी ॥
॥ महाराजका स्तवन ॥

(तर्ज—सियाराम बुलालो अयोध्या मुझे)

पूज्य ज्ञान तुम्हारा सिखा दो मुझे।
अपने चरणोंका दास बनालो मुझे ।पु०॥१॥
शैर-पंच महाव्रत पालते, करते तो उग्र विहार हैं।
षट जीवोंके लिये, करते फिरे उपकार हैं॥
आया तोरी शरण प्रभु तारो मुझे॥ पु० ॥२॥
शैर-पंच सुमति पालते और तीन गुप्ति धारके।
शिष्य मण्डलीको लिये, भवि जीव तुम हो तारते
ऐसे पूज्य गुरू अब तारो मुझे ॥ पु० ३ ॥
शैर-दोष बयालिस टाल पूज्य, आहार सूजतलात हैं
आत्माको तार अपनी, शिष्यको सिखलात हैं॥
धन्ये! पाप कर्मों से बचावो मुझे॥ पु० ॥४॥
शैर-शहर बीकाणेकी है अरजी, मेहर जल्दी कीजिये
आशा करे सब संघ स्वामी, दर्श जल्दी दीजिये॥
अपनी भक्तिकी लौमें लगालो मुझे ॥ पु० ॥५॥

शैर-कर्मको काटो प्रभू, इस धर्मरूपी तेगसे।

संघ तो इच्छा करै, जैसे पपीहा मेघसे ॥

डूबे जाता हूँ नाथ बचालो मुझे॥ पु० ॥ ६ ॥

शैर-विनती करे करजोडके, यह दास मंगलचंद है ॥

हुक्म जल्दी दीजिये,मुखसे जो अबतक बन्द है।

जिससे बहुत खुशी अब होय मुझे ॥पु०॥७॥

इति सम्पूर्णम्

॥ पूज्य श्री जवाहिरलालजीका स्तवन ॥

पूज्य जवाहिलालजी स्वामी,अन्तर्यामी शिव मुख गामी, तारो दीनानाथ ॥ टेर ॥

अरज करू मैं थाने पूज्यजी, हरष हुवो है अपार। सम्वत बत्तीसमें जन्म लियोथे, शहर थांदले मांय हो ॥ पू० ॥ १ ॥ पञ्च महाव्रत सोहे पूज्यजी, करता उग्रविहार। दोष बयालिस टाल मुनीश्वर। लावो सुजतो, आहार ॥ पू० ॥ २ ॥ कामधेनु सम आप पूज्यजी, सर्वभणी सुखदाय। दरशन करके प्रसन्न होवे, सारोलोक संसार हो ॥ पू० ॥ ३ ॥

ठाणावारेसुं सोवो पूज्यजी गुण रतनोंकी माल। महिमा आपकी कहांतक कहूँ कहत न आवे पार हो ॥ पू० ॥ ४ ॥ प्रश्न पूछे थांने पूज्यजी स्वमती अन्य मति कोय। शान्ति पणेसुं जवाब देवोथे, सामलो शीतल थाय हो ॥ पू० ॥ ५ ॥ सम्बत उगनीसे मांय पूज्यजी, साल सतीन्तर थाय। दूजा श्रावण वदी दशमी कांई मंगलचन्द्र जस गायहो ॥पूज्य॥ ॥ ६ ॥ ॥ इति संपूर्णम् ॥

॥ अथ सर्व सिद्धिप्रदं स्तोत्रम् ॥

विमल सयल मणोहरं, नमि ऊणं चरणं जिन वराणं ॥ वइरसं तणुताणुत्तं, सुहसिद्धियं भवि हिय ट्ठाए ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं उसभोसिर—मवउ ॐ एं क्रों वि अजिओ भालं, ॐ श्रीं संभवो नेत्तं पाउ सया सव्व सम्मदोय ॥ २ ॥ धाणिंदियं सव्व या, ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिरि अभिनन्दणो ॥ वच्छ-

अं पाउ सुमई ॐ कराणं ॐ व्लों च पउ मप्प
हो ॥३ ॥ कंठसंधिंतु रक्खउ, ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं
सुपास जिणवरो मे ॥ खंधं पुण पाउ मज्झ, ॐ
ह्रीं श्रीं जिणचंदप्प हो ॥ ४ ॥ ॐ क्रों सुविधि
बुद्धिं, अवउ सिज्जंस वासु पुज्जो करजं ॥ विमल
जिणो उयरमें ॐ ह्रीं श्रींवरण संकजिवो ॥५॥ ॐ
ह्रीं धम्मो जंघं पिट्ठं मल्लि मल्लि कुसुमकोमलो ॥
सदय मुणिसुव्वयो हियं, कुंथू करेगोवं अरो श्रीं ॥६॥
ॐ श्रां श्रीं नमी कवखं ना सा रोग हरउ ह्रीं श्रीं
नेमो ॥ अणंत पासो गुज्झ रोगं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं
सुकलियो ॥ ७ ॥ ॐ श्रीं तिल्लोक वसं कुरु कुरु
वद्धमाण। महावीरो ॥ सव्व मङ्गल सुह करो
चिंतामणि सुरतरुव्व फलाओ ॥ ८ ॥ सव्वे जिण
गण हरा, अंगरोमाई मज्झ रक्खंतु ॥ ॐ ह्रीं श्रीं
सीयल पहु, सव्व सत्तु चयं सिडिल कुरु ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं, संती सु य संपयं मज्झ
कुणउ समिद्धिं ॥ ॐ ह्रीं ऐं मंदर पमुहा होंतु

कामधेणु व्व ॥ १० ॥ पुज्ज जवाहिरलालो गुण विसालो गणप्पहू गरिमोय॥ तउ सव्व सिव मंगलं भवउ मज्झाणं जिणगुरु चंदो ॥ ११ ॥

यह स्तोत्र १०८ अथवा २७ बार प्रातः काल निरंतर जपना चाहिये।

पूज्य श्री १००८ श्री श्री श्रीलालजी

महाराजका गुण स्तवन

पूज्य श्रीलाल गुणधारी। सितारे हिन्दमें दीपे जपो नरनार तन मनसे। सितारे हिन्दमें दीपें ॥ टेर ॥ तजा संसार जान असार। लिया संयम भार महाव्रत धार चले संजममें खाडा धार। सितारे हिन्दमें दीपे ॥१॥ धन्य आचार्य पद पाये। चतुर्विधि संघ दीपाये। पञ्चमें पाट शोभाये। सितारे हिन्दमें दीपे ॥ २ ॥ आत्मा रूप सोनेको। तपस्याग्निमें शुद्ध करके। अतिशय धारि बन करके सितारे हिन्दमें दीपे ॥ ३ ॥ देश विदेश विचर करके। श्रीसंघ रूप बगीचेको। ज्ञान-घट शांति-

जलसे सींच। सितारे हिन्दमें दीपे ॥ ४ ॥ जहां जाते वहां लगती धूम। जय २ धर्मकी होती। विचर कर आये जेतारन। सितारे हिन्दमें दीपे ॥ ५ ॥ अंतिम वाणी अमी देकर। आषाढ़ सुदि तीज दिन आया। सिधाये स्वर्ग पूज्य श्रीलाल। सितारे हिन्दमें दीपे। जपो श्रीलाल गुणमाला। पापका मुख होवे काला। दुर्गतिके लगे ताला। सितारे हिन्दमें दीपे ॥ ७ ॥ कलपतरु स्थान कलप-तरु ही। हीरेकी खानमें हीरा। छटे पाट पूज्य जवाहिरलाल सितारे हिन्दमें दीपे ॥ ८ ॥ उन्नीसे साल चौरासी। मास आसाढ़ शनिचर तीज। मुनी घासीलाल बीकानेर। सितारे हिन्दमें दीपे॥९॥

महावीर स्वामीका स्तवन

श्रीमहावीर स्वामीकी सदा जय हो, सदा जय हो, सदाजय। टेर।

पवित्र पावन जिनेश्वरकी सदा जय हो सदा जय हो, तुम्हीं हो देव देवनके तुम्हीं हो पीर पैग-

श्वर, तुम्हीं ब्रह्मा तुम्हीं विष्णु ॥ स० १ ॥ तुम्हारे ज्ञान खजाने की महिमा बहुत भारी है लुटानेसे बढ़े हरदम ॥ स० २ ॥ तुम्हारी ध्यान मुद्रासे, अलौकिक शांति झरती है, सिंह भी गोद पर सोते ॥ स० ३ ॥ तुम्हारी नाम महिमासे जागती वीरता भारी हटाते कर्म लश्करको ॥ स० ४ ॥ तुम्हारा संघ सदा जय हो, मुनि मोतीलाल सदा जय हो ॥ जवाहिरलाल पूज्य गुरुराय, सदा जय ॥ स० ५ ॥ इति

पार्श्व प्रभुका स्तवन

मंगल छायाजी म्हारे पार्श्व प्रभुजी मनमें आयाजी ॥ टेर ॥ फटिक सिंहासन आप विराजे, देव दुन्दुभी बाजेजी ॥ इन्द्राणियाँ मिल मंगल गावे, यश जिन गाजेजी ॥ मं० ॥१॥ चामर छत्र पुष्पकी वृष्टि, भूमण्डल चमकावेजी ॥ अशोक वृक्ष शीतल छाया तल भवी सुख पावेजी ॥ मं० ॥ ॥ २ ॥ सागर क्षीरका नीर मधुर अति, रसायन

अधिक सुहावेजी ॥ अमृतसे अति मधुर वाणी, प्रभु बरसावेजी ॥ मं० ३ ॥ नम्र देवता मुकुट हरित मणि, किरण चरण जिन छावेजी ॥ अजिथ छटा मृग तृणहि समज, जिन चरणे लुभावेजी ॥ मं० ॥४॥ सिंहनाद करे यदि योद्धा वृन्द, सुन हस्ती घबरावेजी ॥ सिंहाकार नर पीठ लिखित, हस्ती रोग मिटावेजी ॥ मं० ५ ॥ तैसे प्रभुके नामको सुन मेरे, विघ्न सभी भग ज़ावेजी, रिद्धि सिद्धि नव निधि संपदा । मुझ घर आवेजी ॥ मं० ६ ॥ आप नाम मेरे घरमें मंगल, बाहिर मंगल बरतेजी सदाकाल मेरा सुखमें वीते वांछित करतेजी ॥मं० ॥ ७ ॥ कामधेनु मुझे अमृत पिलाती, सुख सिद्धि प्रगटावेजी, चिन्तामणी मुज हाथ चढ़ा है । चिन्ता जावेजी ॥ मं० ८ ॥ वालसूर्य तम अंकुर कल्प-तरु, सब दारिद्र्य मिट जावेजी । वैसे आपके नाम-मात्रसे दुख टल जावेजी ॥ मं० ९ ॥ ओं ह्रीं श्रीं कामराज क्लीं जपमें सब सुख पायाजी। मोतीलाल

मुनि जवाहिरलाल पूज्य, चित्त सुहायाजी ॥ मं० ॥ १० ॥ उगणीसे अष्टोत्तर सालमें तास गांवमें आयाजी ॥ घासीलाल मुनि गूढ़ी पडिवा दिन, मंगल पायाजी ॥ मं० ११ ॥

गौतम स्वामीका स्तवन

मंगल वरतेजी म्हारे गौतम गणधर, मनमें वसतेजी ॥ टेर १ ॥ धन्नाशालिभद्रकी ऋद्धि, और अष्ट महा सिद्धीजी, गौतम नामसे प्रगटे म्हारे, नव विध निधिजी ॥ मं० २ ॥ लब्धिके भण्डार ज्ञानके गौतम हे आगारेजी, आप नाम म्हारे सब सुख वरते मंगला चारेजी ॥ मं० ३ ॥ आप नाम अति आनन्दकारी, चिन्ता दुख झट भाजेजी, सुख संपतका मंगल बाजा मुझ घर बाजेजी ॥ मं० ४ ॥ नाम कल्पतरु म्हारे आंगन, दारिद्रय भग जावेजी, मन वांछित म्हारे रिद्धि सम्पदा घरमें आवेजी ॥ मं० ५ ॥ अमृत कुंभ मैं पाया चिन्तामणी, दुःख गया सब भागीजी, अमृत

सम मीठे गौतम तुम, मनशा लागीजी, ॥ ६ ॥ मन कमल तुम नाम हंस हैं, बैठा अति सुखका-रेजी, हर्षित प्राण हुवे सब मेरे, अपरंपारेजी ॥७॥ किसी बातकी कमीन मेरे, गौतम गणधर पायाजी, तीन लोककी लक्ष्मी मुझ घर, बास बसायाजी ॥ मं० ८ ॥ मोतीलाल मुनि पूज्य श्री०श्री० जवा-हिरलालजी मन भायाजी, छठे पाट पर आप विराजे मंगल छायाजी ॥ मं० ९ ॥ समत उगनीसे साल सितहन्तर शहर सतारे आयाजी, घासीलाल मुनि सप्तमी सावण, गुरु शुभ पायाजी ॥ १० ॥

शांतिनाथ प्रभुका स्तवन

शान्ति जिनेश्वर शाताकारी, मुझ तन मन हितधारी ॥ टेर ॥ शांतिनाम मुझ तनमें अमृत रस सम है सुखकारी, तनकी वेदना गई सब मेरी मुझ तन है अविकारी ॥ शांति १ ॥ रोम रोममें हर्ष भरा मेरे, जो चाहूँ घर द्वारी, फला कल्पतरु निज आंगन प्रभु, खुली मुझ सुख गुल क्यारी

॥ शा० २ ॥ आत्म ध्यान प्रगटा मुझ तनमें मिटी दशा अंधियारी, गगन चन्द्र संयोग मिटाता, निजगत तम जिमि भारी ॥शांति ३॥ ओं ह्रीं त्रैलोक्य वशं कुरु कुरु शान्ति सुखकारी, इस विध जाप जपे जिनवरका कोटि विघ्न निवारी ॥ शांति ४ ॥ डाकिनी साकिनी तस्कर आदि, भागत भयपर पारी, पिशुन मान मर्दन मेरे प्रभुजी, सेवक नवनिध धारी ॥शान्ति ॥५॥ पूज्य ज्वाहिरलाल विराजे छटे पाट सुखकारी, घासीलाल गुरुवार ज्येष्ठमें, पारनेर किया त्यारी ॥ शांति ६ ॥

शांतिनाथ प्रभुका स्तवन

संपति पायाजी म्हारे शांति नामसे सब सुख छायाजी लक्ष्मी पायाजी, म्हारे शांति नाम नव निध घर आयाजी ॥ टेर ॥ आप पधारे गर्भवास तीनों लोकमें बहु सुख छायाजी, माता महल चढ़ी निरखे नाथ, मृगि मार मिटाया जी ॥सं० १॥

शांति करी सब शांति नाम प्रभु, महावीरजीने गायाजी ॥ अमृत सम भावे हृदय कमलमें, आप सुहायाजी ॥ सं० २ ॥ शांति नाम चिन्तामणी मुझ घर, वांछित सब सुख करतेजी ॥ लक्ष्मीसे भण्डार प्रभूजी मुझ घर भरते जी ॥ सं० ३ ॥ गरुड़ पक्षी सम शांति नाम, मुझ घर हृदय बसतेजी, दुःख रोग सम भुजंग भागते मंगल बरतेजी ॥ सं० ४ ॥ शांति नाम मैं पाया तभीसे, मुझ घर अमृत बरसेजी, मङ्गल बाजा मुझ घर बाजे मुझ मन हरषेजी ॥ सं० ५ ॥ चिन्तामणि पुनि काम धेनु मुझ, आंगन दूध पिलावेजी, मुझघर नवनिध पारस प्रगटे संपत आवेजी ॥ सं० ६ ॥ ॐ ह्रीं त्रैलोक्य वशं कुरु कुरु मुझ कमला आवेजी दिन दिन मुझ घर सब सुख बरते दुश्मन जावेजी ॥ सं० ७ ॥ शांति नामसे जहां जाता मैं काम सिद्ध कर आताजी, सुख ही सुखमें देखूं निश दिन शाता पाताजी ॥सं०८॥ शांति नामको

जो नर गावे रोग शोक मिट जावेजी, राज लोकमें महिमा मंत्र जप सुख घर पावेजी ॥सं०९॥ मोतीलाल मुनि पूज्य जवाहिरलाल मुनि मन भावेजी ॥ सदाकाल दीवाली मुझ घर, सब सुख आवेजी ॥सं० १०॥ संवत उगणीसे साल अष्टोत्तर, चारोली सुख पायाजी घासीलाल मुनि दीवाली दिन मन हर्षायाजी ॥ सं० ११ ॥

चौदह स्वप्न

दसमां स्वर्ग थकी च्यव्याजा चौबीसवां जिनराज चौदह सपना देखियाजी त्रिशला देवीजी माय, जिनन्द माय दीठा हो सुपना सार ॥टेर१॥ पहिले गयवर देखियाजी, सण्डा दण्ड प्रचण्ड। दूजे वृषज देखियाजी धोरा धोरी सण्ड ॥जि०॥२॥ तीजो सिंह सुलक्षणोंजी करतो सुख आवास। चोथो लक्ष्मी देवताजी, कर रह्यो लील विलास ॥जि०३॥ पंच वर्ण कुसमा तणोंजी मोटी देखी

फुलमाल । छट्टो चन्द उजासियोजी अमिय झरंत रसाल ॥जि०॥४॥ सूरज उग्यो तेज स्युञ्जी, किरणा झांक झमाल ॥ फरकती देखी ध्वजाजी ऊंची अति असराल ॥ जि० ॥ ५ ॥ कुम्भ कलश रत्नां जड़-योजी, उदग भस्रो सुविशाल। कमल फूलांको ढाकनोजी नवमो स्वप्न रसाल ॥ जि० ॥ ६ ॥ पद्म सरोवर जल भरयोजी, कमल करी शोभाय। देव देवी रंगमें रमेजी दीठा ही आवे दाय॥ जि० ॥७॥ क्षीर समुद्र जल भरयोजी, तेनो मीठोवार। दूध जिस्यो पानी भरयोजी, जेह नो छेह न पार ॥जि०॥८॥ मोत्यां केरा झूमकाजी,दीठो देव विमान देव देवी रंगमें रमेजी,आवंता असमान ॥जि०॥९॥ रतनां री राशी निर्मलीजी दीठो सुपन उदार। दीठो सुपनों तेरहवोंजी, हिये हरष अपार ॥ जि० ॥१०॥ ज्वाला देखी दीपतीजी, अग्नि शिखा बहु तेज। जितरे जाग्या पद्मनीजी,कर सपना सूं हेज ॥ जि० ॥११॥ गज गति चाले मलकतीजी पहुंता

राजान पास। भद्रासन आसन दियोजी, पूछे राय हुल्लास ॥ जि०॥१२॥ सुपना सुण राय हरषियोजी कीनो स्वप्न विचार। तीर्थंकर तुम जानमस्योजी, हम कुलनो आधार ॥ जि० ॥१३॥ परभाते पण्डित तेड़ियाजी कीनो स्वप्न बिचार। तीर्थङ्कर चक्रवर्ती होसीजी, तीन लोकनो आधार ॥ जि०॥१४॥ पण्डि-ताने बहु धन दियोजी, वसतरने फूलमाल। गर्भ मास पूरा थयाजी, जन्मा है पुण्यवन्त बाल ॥जि० १५॥ चौसठ इन्द्र आवियाजी, छप्पन दिसाकुमार अशुचि कर्म निवारनेजी, गावे मङ्गलाचार ॥जि० १६॥ प्रतिबिम्ब घरमें धरियोजी माताजीने विश्वास शक्रेन्द्र लियो हाथमेंजी पञ्च रूप प्रकाश ॥जि०१७॥ एक शक्रेन्द्र लियो हाथमेंजी, दोय पासे चंवर ढुलाय। एक वज्र लई हाथमेंजी, एक छत्र कराय ॥ जि०१८ ॥ मेरु शिखर नव राखियाजी, तेनो बहु विस्तार। इन्द्रादिक सुर नाचियाजी, नाची है अपसरा नार ॥ जि०॥१९ ॥ अठाई महोत्सव सुर

करेजी, द्वीप नंदीश्वर जाय। गुण गावे प्रभुजी तणाजी, हिये हर्ष अपार ॥ जि० ॥२०॥ सिद्धार्थका नन्द है जी, त्रशला देवीना कुमार। कर्म खपाई मुक्ति गयाजी बरत्या है जय जयकार ॥जि०॥२१॥ परभाते सुपना जे भणेजी, भणता हो आनन्द थाय। रोग शोग दूराटलेजी, अशुभ कर्म्म सवि-जाय ॥ जि० ॥ २२ ॥ इति सम्पूर्णम् ॥

पूज्य श्री १००८ श्री श्री जवाहिरलालजी
॥ महाराजका स्तवन ॥

पूज्य श्रीने ध्यावियेजी, नाम जवाहिरलाल। शान्ति मुद्रा देखनेजी, हरष हुआ नर नार ॥ जिनन्द राय कीधा हो,दर्शन सार ॥टेर॥ देश मालवे मायने जी। शहर थांदल गुलजार। ओस वंशमें ऊपनाजी जात कुवाड़ विख्यात ॥ जि० ॥ १ ॥ पिता जीव-राजजी, माता है नाथी नाम। धन्य जिनोरी कूख अवतरिया ऐसे दास गोपाल ॥ जि० ॥ २ ॥ सम्वत

बत्तीसमें जन्मीयाजी, दीक्षा अड़चासे मांय। चढ़ता भावसुं आदरीजी, मगन मुनि पै आय ॥जि०॥३॥ दस छवकी वयमेंजी, कीनो ज्ञान उद्योत। पञ्च महाव्रत निरमलाजी, पाल रह्या दिन रात ॥जि०॥४॥ तेज सूर्य सम है सहीजी, शीतल चन्द्र समान मुख देखा सुख उपजेजी, रटता जे जैकार ॥जि०॥ ॥ ५ ॥ धर्म बुद्धि थारी देखनेजी, पाखंड जीव कंपाय। अमृत वाणी सुणनेजी मिथ्या देवे निवार ॥ जि० ॥ ६ ॥ भवी जीवांने तारतांजी, आया बिकाणे पास। नवीलेन ने तारनेजी, कीजो मेहर महाराज ॥ जि०॥ ७ ॥ आशा करे सहु शहरमेंजी जैसे पपैयो मेघ। कल्प वृक्ष सम सोवताजी, मेहर कीजो महाराज ॥ जि० ॥ ८ ॥ सम्वत उन्नीसे मांयनेजी, साल चौरासी जाण। मंगलचन्द थाने वीनवेजी, त्रिविध शीश नवाय ॥ जि० ॥ ६ ॥

॥ शान्तिनाथ स्वाध्याय ॥

प्रात उठ श्री संत जिणंदको, समरण कीजै घड़ी घड़ी ॥ संकट कोटि कटे भव संचित, जो ध्यावै मन भाव धरी ॥ प्रा० ॥ ए आंकड़ी ॥ जनमत पाण जगत दुख टलियो, गलियो रोग असाधमरी ॥ घट-घट अंतर आनंद प्रगट्यो, हुलस्यो हिवड़ो हरष धरी ॥ प्रा० ॥ १ ॥ आपद विंत्र षिषम भय भाजै, जैसे पेखत मृगहरी ॥ एकण चितसुं सुध बुध ध्याता, प्रगटे परिचय परम सिरी ॥ प्रा० ॥ २ ॥ गये बिलाय भरमके बादल, परमार्थ पद पवन करी ॥ अवर देव एरंड कुण रोपे, जो निज मंदिर केलफली प्रा० ॥ ३ ॥ प्रभु तुम नाम जग्यो घट अन्तर, तो सुं करिये कर्म अरी ॥ रतन चन्द शीतलता व्यापी, पापी लाय कषाय टली ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ शान्तिनाथ स्तवन ॥

तुं धन तुं धन तुं धन तुं धन, शांति जिणेश्वर स्वामी ॥ मिरगी मार निवार कियो प्रभु सर्व भणी सुख गामी ॥ तुं धन ॥१॥ ए आंकड़ी ॥ अवतरिया अचलादे उदरे, माता साता पामी संत ही साथ जगत वरताई, सबै कहे सिरनामी ॥ तुं धन ॥२॥ तुम प्रसाद जगत सुख पायो भूले मूढ़ हरामी ॥ कंचन डार कांच चित देवे, वाकी बुद्धिमें खामी ॥ तुं धन ॥३॥ अलख निरंजन मुनि मन रंजन, भय भंजन विसरामी ॥ शिव दायक नायक गुण गायक, पात्र कहै शिवगामी ॥ तुं धन ॥४॥ रतनचन्द्र प्रभु कछुअन मांगे, सुणतूं अन्तरजामी ॥ तुम रहेवानी ठौर बताओ, तो हूं सहु भरपामी ॥ तुं धन ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अष्ट जिन स्तवन ॥

(श्रीनवकार जपो मनरंगे । एहनी देशी)

पह ऊठी परभाते वंदु, श्री पद्म प्रभुजीरा पायरी माई ॥ वासु पूज्यजी तो म्हारे मनवसिया कमीयन राखी कायरी माई ॥ उपजें आनन्द आठ जिन जपता, आठु कर्म जाय तूटरी माई ॥उ०॥१॥ सुख संपदने लीला लाधै, रहे भरिया भण्डार अखूट री माई ॥ उ० ॥ २ ॥ दोनुं जिनवर जोड़ बिराजे, हिंगुल वरण लालरी माई ॥ तीर्थ थापीने करमाने कापी, पाप किया पय मारटी माई ॥ उ०॥ ॥३॥ चन्दा प्रभुजीने सुबुधि जिनेश्वर, दोय हुवा सुपेतरी माई ॥ मोत्या वरणी देही दीपे, मुज देखण अधिक उम्मेदरी माई ॥उ०॥४॥ मल्लिनाथ जिन पारस प्रभु, ए नीला - मोरनी पांखरी माई ॥ निरखंतारा नयन नधापे, अमिय ठरे ज्यांरी आंखरी माई ॥ उ० ॥५॥ मुनिय सुव्रत जिन नेमि जिणेश्वर सांवल वरण शरीररी माई ॥ इन्द्रासुं खलीअभिका

दीपे,दीठां हरषे हिवड़ो हीररी माई ॥उ०॥६॥ रूप अनूपम आवल विराजै,ज्युं हीरा जड़िया हेमरी माई अत्तर सुं अधिकी खुसबोई, मुज कहेता न आवे केम री माई ॥ उ० ॥ ७ ॥ शिवपुर माहि सा-हेब सोवे, हुं नवी जाणुं दूर री माई ॥ मुज चित्त माहे वस्या परमेश्वर, वन्दु उगंते सूर री माई ॥ उ० ॥ ८ ॥ ए आठुं अरिहंतारे आ-गल, अरज करूं कर जोड़ी री माई ॥ रिख रायचन्दजी कहे ज्ञानी म्हारा, पूरोनी सघला कोडरी माई ॥ उ० ॥ ९ ॥ संवत अठाराने बरस छत्तीसे, कियो नागोर शहर चौमासरी माई ॥ प्रसाद पूज्य जेमलजी केरो, कियो ज्ञान तणो अभ्यासरी माई ॥ उ० ॥ १० ॥

॥ महावीर स्वामीका स्तवन ॥

श्री महावीर सासण धणी, जिन त्रिभुवन स्वामी ॥ ज्यांरे चरण कमल नित चित धरूछुं,

प्रणमु सिरनामी ॥ सुरथित नगरी पिता मात, लक्षण अवगेहणा ॥ वरण आउषो कंवर पदे, तपस्या परिमाणा ॥ चारित्र तप प्रभु गुण भणिये; छदमस्त केवल नाणी ॥ तीरथ गणधर केवली, जिन सासण परिमाण ॥ १ ॥ देवलोक दसमें वीससागर, पूरण स्थित पाया ॥ कुण्डणपुर नगरी चौवीस, श्री जिनवर आया ॥ पिता सिद्धारथ पुत्र, मात त्रशलादे नंदा ॥ ज्यांरी कुक्षे अवतखा, स्वामी वीरजिणन्दा ॥ ज्यांरे चरण लक्षण छे सिंघनोए, अवगेहणा कर साथ ॥ तनु कंचन सम शोभति, ते प्रणमु' जगनाथ ॥ २ ॥ बोहोत्तर वरसनो आउषो, पाया सुख कारी ॥ तीस वरस प्रभु कुंवर पदे, रह्या अभिग्रह धारी ॥ सुमेर गिरि पर इन्द्र चौसठ, मिल महोच्छव कीनो ॥ अनंत बली अरिहंत जाणी, नाम प्रभुनो दीनो ॥ ज्यांरी मात पिता सुरगति ले आये, पछे लीनो संयम भार ॥ तपस्या कीनी निरमली, प्रभुसाढे बारे

बरस मझार ॥ ३ ॥ नव चौमासी तप कियास, प्रभु एक छमासी ॥ पांच दिन उणो अभिग्रह; एक छमास विमासी ॥ एक एक मासी तप किया, प्रभु द्वादस विरिया ॥ बोहोत्तर पक्ष दोय दोय मास, छविरिया गिणिया ॥ दोय अढाई तीन दोय, इम दिडमासी दोय ॥ भद्र महा भद्र शिव भद्र तप तप्या, इम सोले दिन होय ॥ ४ ॥ भिखुनी पडिमा अष्ट भगवतिनी द्वादश कीनी ॥ दोय सोने गुणत्तीसं छट्ठम तप गिणती लीनी ॥ इग्यारे बरस छ मास, पच्चीस दिन तपस्या केरा ॥ इग्यारे मास उगणीस दिवस, पारणा भलेरा ॥ इण विधि स्वामी जी तप तप्याए, पछे लीनो केवल नाण ॥ तीस बरस उण विचरिया, ते प्रणमुं वर्धमान ॥ ५ ॥ प्रथम अस्ती दूजो चम्पापुरी, पीस्ट चम्पा दोय कहिए वाणिए विशालापुर, वेहु मिलीस द्वादश लहिए ॥ चतुर्दश मालंदोपाड, छ मिथिला गिणिए ॥ भदिल-पुरी दोय सब मिली, अणतीस भणिए ॥ एक आलं

विया एक सावथिए, एक अनारज जाण ॥ चरम चौमासो पावापुरी, जठे प्रभु पहुंता निरवाण ॥६॥ मुनिवर चवदे सहेस, सहस छत्रीस अरजका ॥ एक लक्ष गुणसठ सहेस श्रावक, तीन लाख श्राविका ॥ अधिक अठारे सहस, इग्यारे गणधरनी माला ॥ गौतम स्वामी बड़ा शिष्य, सती चंदनबाला ॥ज्यांरे केवल ज्ञानी सात सोए, प्रभु पहुंता निरवाण ॥ सासण बरते स्वामीनो, एकबीस सहेस वर्ष प्रमाण ॥ ७ ॥ पूरब तीनसौ धार, तेरासे आवधि ज्ञानी ॥ मन प्रजव पांचसौ जाण, सातसौ केवल नाणी ॥ वेक्रिय लभधिना धार, सातसौ मुनिवर कहिए ॥ बादी चारसौ जाण, भिन्न २ चरचा लहिये ॥ एका-एक चारित्र लियोए प्रभु एकाएक निरवाण ॥ चौसठ वर्ष लग चालियो, दरसण केवल नाण ॥८॥ बारा नरबल वृषभ २ दस एक जिमि हैवर ॥ बारा हैवर महिष, महिष पांचसें एक गैवर ॥ पांचसे गज हरी एक, सहस दोय हरी । अष्टापद दस

लाख बलदेव वासदेव, अरुदोय दोय चक्री ॥ कोड चाक्री एक सुर कह्योये, कोड सुरा एक इन्द्र ॥ इन्द्र अनन्ता सुननमें, चिटी अंगुली अग्र जिनन्द ॥ ९ ॥ आपतणा प्रभु गुण अनन्त कोई पार न पावे ॥ लब्ध प्रभावे कोड़ काय, कोड़ गुणसिर वणावे ॥ सीर सीर कोडा कोड़ वदन जस करेसु ज्ञानी ॥ जिभ्या जिभ्यासु कोड़ कोड़ गुण करेसु ज्ञानी ॥ कोड़ा कोड़ सागर लगेए करे ज्ञान गुणसार ॥ आप तणा प्रभु गुण अनन्ता, कहेता न आवेजी पार ॥ १० ॥ चवदेई राजु-लोक, भरिया वालुन्दा कणिया । सर्व जीवना रोमराय, नहि जावै गिणिया ॥ एक एक वालु गुण करेस, प्रभु अणंता अणंता ॥ पूज्य प्रसादरिख लालचन्दजी, नहीं आवे कहेता ॥ समत अठारे बासष्टेए, मास मिगसर छन्द ॥ सामपुरे गुण गाइया, धन श्रीवीर जिणंद ॥ ११ ॥ इति ॥

———

॥ अथ कालरी सज्झाय लिख्यते ॥

इण कालरो भरोसो भाईरे को नहीं, ओ किण विरिया माहे आवे ए ॥ बाल जवान गिणे नहीं, ओ सर्व भणी गटकावे ए ॥ इण० ॥१॥ बाप दादो बैठो रहै, पोता उठ चल जावे ए ॥ तो पिण घेंठा जीवने, धर्मरी बात न सुहावे ए ॥ इण० ॥२॥ महेल मंदिरने मालिया, नदीय निवाणने नालो ए सरगने मृत्यु पातालमें, कठियन छोड़े कालोए ॥ इण० ॥३॥ घर नायक जाणी करी, रिख्या करी मन गमती ए ॥ काल अचानक ले चल्यो, चौक्या रह गई झिलती ए ॥ इण० ॥४॥ रोगी उपचारण कारणे, वैद विचक्षण आवे ए ॥ रोगीने ताजो करे आपरी खबर न पावे ए ॥ इण० ॥५॥ सुन्दर जोड़ी सारखी, मनोहर महेल रसालो ए ॥ पोढ्या ढोलिए प्रेमसु ,जठे आण पहुंतो कालोए ॥इण०॥६॥ राज करे रलियामणो,इन्द्र अनूपम दिसे ए ॥ वैरी पकड़ पछाडियो, टांग पकड़ने घीसे ए ॥ इण० ॥ ७ ॥

वल्लभ बालक देखने, माड़ी मोटी आसो ए, छिनक माहे चलतो रह्यो, होय गई निरासो ए ॥ इण० ॥८॥ नार निरखने परणियो, अपछराने उणिहारे ए ॥ सूल ऊठ चलतो रह्यो, आ ऊभी हेला मारे ए ॥ इण० ॥६॥ चेजारे चित्त चुंपसुं, करी इमारत मोटी ए ॥ पावडी ए चढतो पड्यो, खाय न सकियो रोटी ए ॥ इण० ॥ १० ॥ सुरनर इन्द्र किन्नरा, कोई न रहै निशंको ए ॥ मुनिवर कालने जीतिया, जिण दिया मुक्त मांहे डक्को ए ॥ इण० ॥ ११ ॥ किसनगढ़ माहे सिडसठे आया सेखे कालोए ॥ रतन कहे भव जीवने, कीजो धर्म रसालो ऐ ॥ इण० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ धर्म रुचीनी सज्झाय ॥

चम्पानगर निरोपम सुन्दर, जठे धर्म रुचि रिख आया ॥ मास पारणे गुरु आज्ञा छे गोचरिया सिधाया हो ॥ मुनिवर धर्म रुची रिख बंदु

॥१॥ ए आंकड़ी ॥ भव भव पाप निकाचत संचत दुकृत दूर निकंदू हो ॥ मु० ॥२॥ नीची दृष्टि धरण सिर सोहे, मुनीश्वर गुण भण्डारे ॥ भिक्षा अटन करता आया, नाग श्रीघर द्वारे हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ खारो तुंबो जेहर हलाहल मुनिवरने वेहराव्यो ॥ सहेज उखरडी आई अमघर, कहो बाहेर कुण जावे हो ॥ मु० ॥ ४ ॥ पूरण जाणी पाछा वलिया, गुरु आगे आवी धरियो ॥ कोण दातार मिल्यो रिख तोने, पूरण पातर भरियो हो ॥ मु० ॥ ५ ॥ ना ना करतो मोने बहिराव्यो, भाव उलट मन आणी ॥ चाखीने गुरु निरणय कीधो, जेहर हलाहल जाणी हो ॥ मु० ॥६॥ अखज अभोज कटुक सम खारो, जो मुनिवर तुं खासी, निरवल कोठे जहेर हलाहल अकाले मर जासी हो ॥ मु० ॥७॥ आज्ञा ले परठणने चाल्या, निरवध ठोर मुनि आया ॥ बिन्दु एक परठेव्या ऊपर, किडिया बहु मर जाया हो ॥ मु० ॥ ८ ॥ अल्प आहार थी, एहवी

हिंसा, सर्व थी अनरथ जाणी ॥ परम अभय रस भाव उलट घर, किडियारी करुणा आणी हो ॥ मु० ॥ ९ ॥ देह पडंता दया निपजे, तो मोटा उपकारे॥ खीर खांड समजाणी हो मुनिवर, तत्क्षण कर गया अहारे हो ॥ मु० ॥ १० ॥ प्रबल पीर शरीरमें व्यापी, आवण सक्तज था की ॥ पादु गमन कियो संथारो, समता दृढ़ता राखी हो॥ मु० ॥ ११ ॥ स्वारथ सिद्ध पहुंता शुभ जोगे, महा रमणीक विमाणे ॥ चौसठ मणरो मोती लटके, करणीर परमाणे हो ॥ मु० ॥ १२ ॥ खबर करणने मुनिवर आया, रिखजी कालज किधो ॥ धृग धृग इन नागश्रीने, मुनिवरने विष दीधो हो ॥मु०॥१३॥ हुई फजीती करम बहु बांध्या, पहुंतो नरक दुवारे॥ धन धन इण धर्म रुचीने, कर गया खेवो पारे हो॥ मु० ॥१४॥ पैंसठ साल जोधाणा माहे, सुखे कियो चौमासो ॥ रतनचन्दजी कहे एह मुनिवरना, नाम थकी शिव वासो हो ॥ मुनि० १५ ॥ इति ॥

श्री ढंढण मुनिनी सज्झाय ।

ढंढण रिखजीने वंदणा हूँवारो, उत्कृष्टो अणगाररे हूँवारो लाल ॥ अविग्रह किधो एहवो हूँवारी, लब्धे लेशुं आहाररे हूँवारी लाल ॥ ढं० ॥ १॥ दिन प्रति जावे गोचरी हूँवारी, न मिले सुजतो भातरे हूँवारी लाल ॥ मूलन लीजे असुजतो हूँवारी, पिंजर हुय गया गात रे हूँवारी लाल ॥ ढं० ॥२॥ हरी पूछे श्रीनेमने हूँवारी, मुनिवर सहँस आठार रे हूँवारी लाल ॥ उत्कृष्टो कुण एहमें हूँवारी, मुजने कहो किरताररे हूँवारी लाल ॥ ढं० ॥ ३ ॥ ढंढण अधिको दाखीयो हूँवारी, श्रीमुख नेम जिणंदरे हूंवारी लाल ॥ कृष्ण उमायो वांदवा हूँवारी, धन जादव कुलचन्दरे हूँवारी लाल ॥ढं०॥४॥ गलियारे मुनिवर मिलया हूँवारी, वांद्या कृष्ण नरेशरे हूँवारी लाल ॥ कोईक गाथा पति देखने हूंवारी ॥ उपनो भाव विशेष रे हूंवारी लाल ॥ ढं० ॥ ॥ ५ ॥ मुज घर आवो साधुजी हूंवारी, वहोरो

मादिक अभिलाषरे हूँवारी लाल ॥ वेहरीने पाछा फिरथा हूँवारी, आया प्रभुजीने पासरे हूँवारी लाल ॥ ढं० ॥ ६ ॥ मुझ लब्धे मोदक किम मिल्या हूँवारी, मुझने कहो किरपालरे हूँवारी लाल ॥ लब्ध नहीं ओ वच्छ ताह्यरी हूँवारी, श्रीपति लब्ध निहालरे हूँवारीलाल ॥ ढं० ॥ ७ ॥ तो मुझने कलपे नहीं हूँवारी, चाल्या परठण ठोररे हूँवारी लाल ॥ ईंट निहाले जायने हूँवारी, चुल्या करम कठोररे हूँवारी लाल ॥ ढं० ॥ ८ ॥ आई सुधी भावना हूँवारी, उपनो केवल ज्ञानरे हूँवारी लाल ॥ ढंढण रिख मुक्ते गया हूँवारी, कहे जिन हर्ष सुजाणरे हूँवारी लाल ॥ ढं० ॥ ९ ॥ इति ॥

नव घाटीको स्तवन ।

नव घाटी माहे भटकत आयो, पाम्यो नर भव सार ॥ जेहने वंछे देवता, जीवा ते किम जावो हार ॥ ते किम जावो हार, जीवाजी ते किम जावो

हार ॥ दुर्लभ तो मानव भव पायो, ते किम जावो हार ॥ १ ॥ धन दौलत रिद्ध संपदा पाई, पाम्यो भोग रसाल ॥ मोहो माया माहे भुल रह्यो, जीवा नहीं लिवी सुरत संभाल ॥ नहि लिवी सुरत संभाल, जीवाजी नहिं लिवी सुरत संभाल ॥ दु० ॥ २ ॥ काया तो थांरी कारमी दिसे, दिसे जिन धर्म सार ॥ आऊषो जाता वार न लागे, चेतो क्योंनी गवांर ॥ चेतो क्यों नी गवांर, जीवाजी चेतो क्यों नी गवांर ॥ दु० ॥३॥ यौवन वय माहे धंदो लागो, लागो हे रमणीरे लार ॥ धन कमायने दौलत जोड़ी, नहिं कीनो धर्म लिगार ॥ नहीं कीनो धर्म लिगार, जीवाजी नहिं कीनो धर्म लिगार ॥ दु० ॥ ४ ॥ जरा आवैने यौबन जावे, जावै इन्द्रिय विकार ॥ धर्म किया विना हाथ घसोला, परभव खासो मार, परभव खासो मार जीवाजी परभव खासो मार ॥दु०॥५॥ हाथोंमें कड़ाने कानोंमें मोती, गले सोवनकी माल ॥ धर्म किया विन एह जीवाजी,

अभरण छे सहु भार जीवाजी, अभरण छे सहु भार ॥दु०॥६॥ ए जग है सच स्वारथ केरा, तेरो नहीरे लिगार ॥ बार बार सतगुरु समभावै, क्यो तुम संयम भार ॥ क्यो तुम संयम भार, जीवाजी क्यो तुम संयम भार॥दु०॥७॥ संयम लेईने कर्म खपावो, पामो केवल ज्ञान ॥ निरमल हुयने मोक्ष सिधाओ ओछे साचोज्ञान। ओछे साचो ज्ञान जीवाजी ओछे साचो ज्ञान॥दु०॥८॥ संमत अठारेने वरस गुण्यासी हरकेन सिंघजी उल्लास ॥ चैत बदी सातम साय-पुरमें, कीनो ज्ञान प्रकाश। कीनो ज्ञान प्रकाश जीवाजी, कीनो ज्ञान प्रकाश॥दुर्लभतो०॥६॥इति॥

श्री धन्नाजीरी सज्झाय।

धन्नाजी रिखमन चिंतवै, तप करतां तुटी हम तणी कायके ॥ श्रीवीर जिनंदने पूछने, आज्ञा ले संथारो दियो ठायके ॥ १ ॥ धन करणी हो धन-राजरी ॥ ए आंकड़ी ॥ पह उठीने वांद्या श्रीवीरने,

श्रीजी आज्ञा दिवी फुरमायके ॥ विमल गिरी थेवर संगे, चाल्या समसथ साध खमायके ॥ धन० ॥२॥ ठायो संथारो एक मासनो । थैवर आया प्रभुजीरे पासके ॥ भंडउपगरण जिन वीरने, गौतम पूछे बेकर जोड़के ॥ ध० ॥ ३॥ तप तपीया बहु आकरा कहो स्वामी वासो किहां लीधके । सागर त्रेतीसारे आउषो, नव महीनामें सर्वारथ सिद्धके ॥ध०॥४॥ महा विदेह क्षेत्र माहे सिद्ध हूशी, विस्तार नवमा अंगरे माह्यके ॥ शिव सुख साध पदवी लही आस० करणजी मुनिगुण गायके ॥ध०॥५॥ संवत अठारे बरस गुणसठे, बैशाख वद पक्षरे माह्यके ॥ विस० लपुरमें गुण गाइया, पूज्य रायचन्दजीरे प्रसादके ॥ध०॥६॥ ओछोजी इधकोमें कह्यो तो मुज मिच्छामि दुक्कड़ होयके॥बुद्धि अनुसारे गुण गाइया, सूत्रनो सार जोयके ॥ ध० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ श्री पद्मावती आराधना ॥

हीवे राणी पद्मावती, जीवरास खमावे ॥ जाणपणे जग दोहिलो, इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते मुज मिच्छामी दुक्कड़ं ॥ अरिहन्तनी साख, जे मैं जीव बिराधिया, चौराशी लाख ॥ ते मुज० ॥ २ ॥ सात लाख पृथिवी तणा, साते अपकाय ॥ सात लाख तेउकायना, साते वलिवाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दस प्रत्येक वनस्पति, चौदे साधारण, बीती चौरिंद्री जीवना, वे वे लाख विचार ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्रकाशी ॥ चौदे लाख मनुष्यना, ए लाख चौरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इण भवे परभवे सेविया, जे मैं पाप अठार ॥ त्रिविध त्रिविध करि परिहरूं, दुर्गतिना दातार ॥ ते० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद ॥ दोष अदत्ता-दानना, मैथुनने उन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो, किधो क्रोध विशेष ॥ मान माया लोभ मैं किया, वली रागने द्वेष ॥ ते० ॥ ८ ॥

कलहकरी जीव दुहव्या, दिधा कुडा कलंक ॥ निन्दा कीधी पारकी रति अरति निशंक ॥ ते० ॥ ॥ ६ ॥ चाड़ी कीधी चोतरे, कीधो थापण मोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आण्यो भरोसो ॥ते०॥ ॥ १० ॥ खटिकने भवे मैं किया, ज़ीव नाना विध घात ॥ चिड़ि मारने भवे चिडकला ॥ मारथा दिनने रात ॥ ते० ॥११॥ काजी मुल्लाने भवे, पढ़ी मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक ज़वे किया, कीधा पाप अघोर ॥ ॥ ते० ॥ १२ ॥ मच्छी मारने भवे माछला, जाल्या जल वास ॥ धीवर भील कोली भवे, मृग पाड्या पास ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवालने भवे जे किया ॥ आकराकर दंड ॥ बन्दीवान माराविया, कारेड़ा छड़ी दंड ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने भवे, दीधा नारकी दुःख ॥ छेदन भेदन वेदना ॥ ताडण अति तिख ॥ ते० ॥१५॥ कुंभारने भवेमें किया, नीमाहपचाव्या ॥ तेली भवे तिल पेलिया, पापे पिंड भराव्या ॥ ते० ॥ १६ ॥ हाली भवे हल खेडिया,

फाड्या पृथ्वीना पेट ॥ सूडने दान घणा किया, दीधी बदल चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने भवें रोपिया, नाना विध वृक्ष ॥ मूल पत्रफल फूलना, लागा पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ अद्धोवाइयाने भवे, भरया अधिका भार ॥ पोठी पुठे कीड़ा पड्या दया नाणी लिगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ छीपाने भवे छेतरया कीधा रङ्गण पास ॥ अग्नि आरम्भ कीधा घणा, धातुर्वाद अभ्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ सुरपणे रण झुंझता, मारया माणस वृन्द ॥ मदिरा मास माखण भख्या, खादा मूलने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी, पाणी उलंच्या ॥ आरम्भ किया अति घणा, पोते पापज संच्या ॥ ते० ॥ २२ ॥ करम अंगारे किया वली, घरने दव दीधा ॥ सम खाधा वीतरागना, कुडा कोलज कीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिल्ला भवे उंदर लिया, गिरोली हत्यारी ॥ मूढ गवार तणे भवे, मैं जुवा लीखा मारी ॥ ते० ॥२४॥ भडभुंजा तणे भवे, एकेंद्री जीव ॥ जुआरी चणा

बहु शोकिया, प्राडंता रीव ॥ ते० ॥ २५ ॥ खांडण पीसण गारना, आरम्भ अनेक ॥ रांधण इंधण अग्निना, कीधा पाप अनेक ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकथा च्यार कीधावली, सेव्या पांच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग पाड्या किया, रूदनने विखवाद ॥ ते० ॥२७॥ साधु अने श्रावक तणा, व्रत लहीने भांग्या ॥ मूल अने उत्तर तणा, मुझ दूषण लाग्या ॥ ते० ॥ २८ ॥ सांप बिच्छु सिंह चीतरा, सिकराने सामलि ॥ हिंसक जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सबली ॥ ते० ॥२९॥ सुआवडी दूषण घणा, वली गरभगलाव्या ॥ जीवाणी ढोल्या घणी शीलव्रत भंगव्या ॥ते०॥३०॥ भव अनन्ता भमता थका, कीधा देह सम्बन्ध । त्रिविध त्रिविध करी बोसरूं, तिणसु प्रतिबन्ध ॥ते०॥३१॥ भवअनन्त भमता थका, कीधा कुटुम्ब सम्बन्ध ॥ त्रिविध त्रिविध करी बोसरूं, तिणसुं प्रतिबन्ध ॥ते०॥ ॥३२॥ इण परे इह भवे पर भवे, कीधापाप अक्षत्र ॥ त्रिविधत्रिविध करी बोसरूं, करूं जन्म पवित्र ॥ते०॥

॥ ३३ ॥ इणविध ए आराधना भावे करसे जेह ॥ समय सुन्दर कहे पाप थी, इह भव छुटसे तेह ॥ ते० ॥ ३४ ॥ राग वैराडी जे सुणे, यह त्रिजी ढाल ॥ समय सुन्दर कहे पाप थी, छुटे भव तत्काल ॥ ते० ॥ ३५ ॥ इति ॥

श्रीसुखविपाक-सूत्रम्

अर्हं।

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सोहम्मे समोसढे जंबु जाव पज्जुवासमाणो एवं वयासो—जइणं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं अयमट्ठे पण्णत्ते सुहविवागाणं भन्ते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते? तत्तेणंसे सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी-एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता। तंजहा-सुबाहू १ भद्दनंदीय २, सुजाएय ३, सुवासवे ४, तहेव

जिणदासे ५, धणपतीय ६, महब्बले ७ ॥ १ ॥
भद्दनंदी ८, महचंदे ९, वरदत्ते १० ॥

जइणं भन्ते ! समणेणं जावसंपत्तेणं सुह-विवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्सणं भंते ! अज्झयणस्स सुहविवागाणं जाव के अट्ठे पण्णत्ते ? ततेणंसे सुहम्मे अणगारे जंवू अण-गारं एवं वयासी-एवं खलु-जंवू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिसीसे णामं णयरे होत्था रिद्धि-त्थिमियसमिद्धे, तस्स णं हत्थिसीसस्स णगरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थणं पुप्फ-करंडए णामं उज्जाणे होत्था सव्वो उय० तत्थणं कयवण माल पियस्स जक्खस्स जक्खायथणे होत्था दिव्वे० तत्थणं हत्थिसीसे णयरे अदीणसत्तू णामं राया होत्था महया० वण्णओ, तस्स णं अदीणसत्तुस्स रणो धारिणीपामुक्खं देवीसह-स्सं ओरोहेयावि होत्था। ततेणं सा धारिणी देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि वास

घरंसि जाव सीहं सुमिणे पासइ जहा मेहस्स जम्मणं तहा भाणियव्वं। सुबाहुकुमारे जाव अलंभोग समत्थे यावि जाणंति, जाणित्ता अम्मापियरो पंच पासायवडिंसगसयाइं करावेंति, अब्भुग्गय० भवणं एवं जहामहाबलस्स रण्णो, णवरं पुप्फचूलापामोक्खाणं पंचण्हंराय वर कण्णयसयाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हावेंति तहेव पंचसइओ दाओ जाव उप्पि पासाय वरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं जाव विहरइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे परिसा निग्गया, अदीणसत्तू जहाकूणिओ तहेव निग्गओ सुबाहू वि-जहा जमाली तहा रहेणं निग्गए जाव धम्मो कहिओ राया परिसा पडिगया। तएणं से सुबाहु कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठ० उट्ठाए उट्ठेति जाव एवं वयासि-सद्दहामिणं भन्ते! णिग्गंथं पावयणं०

जहाणं देवाणुप्पियाणं अंतिए वहवे राइसर जाव सत्थवाहप्पभिइओ मुण्डे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया नो खलु अहण्णं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता आगाराओ अण-गारियं पव्वइत्तए अहणं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालस-विहं गिहिधमं पडिवज्जिस्सामि,अहासुहं देवाणु-प्पिया ! मा पडिवंधं करेह। ततेणंसे सुवाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणु-व्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जति पडिवज्जिता तमेव चाउग्घंटं आस-रहं दुरुहति जामेव दिसं पाउब्भूए तामेवदिसं पडिगए। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे जावएवंवयासी-अहो णंभंते! सुवाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते २ पिए २ मणुण्णे २ मणामे २ सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे बहुजणस्स वियणं

भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे ५ सोमे ४ साहुजणस्स वियणं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे ५ जाव सुरूवे। सुबाहुणा भन्ते ! कुमारेणं इमा एयारूवा उरांला माणुस्सरिद्धी किण्णा लद्धा ? किण्णा पत्ता ? किण्णा अभिसमन्नागया ? केवा एस आसी पुव्वभवे ? एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवेदीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे णामं णगरे होत्था रिद्धित्थिमिय समिद्धे तथणं हत्थिणाउरे णगरे सुमुहे नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे० तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा-णामं थेरा जाति सम्पन्ना जाव पंचहिं समणस-एहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणु गामं दूइज्जमाणा जेणेव हत्थिणाउरे णगरे जेणेव सहस्संवत्रणेउज्जाणेतेणेवउवागच्छइ उवागच्छिताअहापडिरूवंउग्गहंउग्गिण्हित्तासंयमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति। तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसाणं थेराणं अन्तेवासी

सुदत्ते णामं अणगारे उराले जाव लेस्से मासं मासेणं खममाणे विहरति। तए णं से सुदत्ते अणगारे मासक्खमणपारणगंसि पढमाये पोरिसीये सज्झायं करेति जहा गोयमसामो तहेव धम्मघोसे (सुधम्मं) थेरे आपुच्छति जाव अडमाणेउच्चनीय मज्झिमाइं कुलाइं सुमुहस्स गाहावतिस्स गेहे अणुप्पविट्ठे तएणं से सुमुहे गाहावती सुदत्तं अणगारं एज्जमाणं पासति २त्ता हट्ठतुट्ठे चितमाणंदिया आसणातो अब्भुट्ठेति २ त्ता पायपीढाओ पच्चोरुहति २ त्ता पाउयाओ ओमुयति २ त्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेति २ त्ता सुदत्तं अणगारं सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छति २ त्ता तिक्खुतो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदति णमंसति २ त्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छति २ त्ता सयहत्थेणं विउलेणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं पडिलाभेस्सामोति तुट्ठे पडिलाभे माणेवि तुट्ठे पडिलाभिएवि तुट्ठे। ततेणं तस्स सुमुहस्स गाहा-

वइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगा-
हगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं सुदत्ते अण-
गारे पडिलाभिए समाणे संसारे परित्तीकए
मणुस्साउए निबद्धे गेहंसि य से इमाइं पंच
दिव्वाइं पाउब्भूयाइं तंजहा-वसुहारा वुट्ठा १
दसद्धवन्ने कुसुमे निवातिते २ चेलुक्खेवे कए
३ आहयाओ देवदुंदुहीओ ४ अंतरावियणं
आगासंसि अहो दाण महोदाणं घुट्ठे य ५।
हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो
अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४-धण्णेणं देवाणुप्पि
या ! सुमुहे गाहावई सुकयपुन्ने कयलक्खणे
सुलद्धेणं मणुस्सजम्मे सुकयरिद्धी य जाव तं
धन्ने णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई। तत्ते-
णंसे सुमुहे गाहावई बहूइं वाससयाइं आउयं
पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव हत्थि-
सीसे णगरे अदीणसत्तुस्स रन्नो धारिणीए दे-
वीए कुच्छिंसि पुत्तताए उववन्ने। ततेणं सा-

धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओही-रमाणी २ सीहं पासति सेसं तं चेव जाव उप्पिं पासाए विहरति तं एयं खलु गोयमा। सुबा-हुणा इमा एयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया। पभूणं भंते! सुबाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तये? हंता पभू। तते णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमं सति २ त्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति। ततेणं से समणे भगवं महावीरे अ-न्नया कयाइं हत्थिसीसाओ णगराओ पुप्फक-रंडाओ उज्जाणावो कयवणमालपियस्सजक्खस्स जक्खायणाओ पडिणिक्खमति २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरति। ततेणं से सुबाहुकुमारे समणो वासये जाते अभिगय जीवाजीवे जाव पडिलाभे माणे विहरति। तते णं से सुबाहुकु-मारे अन्नया कयाइं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासि-

णीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छति २ त्ता पोसहसालं पमज्जति २ त्ता उच्चारपासवण भूमिं पडिलेहति २ त्ता दब्भ संथारं संथरेइ २ त्ता दब्भसंथारं दुरूहइ २ त्ता अट्ठमभत्तं पगिण्हइ २ त्ता पोसहसालाए पोसहिये अट्ठमभत्तिये पोसहं पडिजागरमाणे विहरति। तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स पुव्वरत्ता वरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्सइमे एयारूवे अज्झत्थिये चिंतीए पत्थीए मणोगए संकप्पे समुप्पने धण्णा णं ते गामागरणगर जाव सन्निवेसा जत्थणं समणो भगवं महावीरे जाव विहरति, धन्नाणं तेराईसर तलवर० जेणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडा जाव पव्वयंति धन्ना णं ते राईसर तलवर० जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं पडिवज्जंति, धन्ना णं ते राईसर जाव जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए

धम्मं सुणेंति तं जत्तिणं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणु पुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमा गच्छिज्जा जाव विहरिज्जा ततेणं अहं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वएज्जा। ततेणं समणे भगवं महावीरे सुवाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अ-ज्झत्थियं जाव वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गमाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे णगरे जेणेव पुप्फकरंडे उज्जाणे जेणेव कयवणमाल पियस्स जक्खस्स जक्खायथणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरित परिसा राया निग्गया ततेणं तस्स सुवाहुस्स कुमारस्स तं म-हया जहा पढमं तहा निग्गओ धम्मो कहिओ परिसा राया पडिगया। तते णं से सुवाहुकु-मारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ जहा मेहे तहा

अम्मापियरो आपुच्छति, णिक्खमणाभिसंओ तहेव जाव अणगारे जाते ईरियासमिये जाव वंभयारी, ततेणं से सुवाहू अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जति २ त्ता वहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम० तवोविहाणेहिं अप्पाणं भावित्ता वहूइं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने, से णं ततो देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति २ त्ता केवलं वोहिं बुज्झिहिति २ त्ता तहारूवाणं थेराणं अंतिए मुंडे जाव पव्वइस्सति, से णं तत्थ वहूइं वासाइं सामण्णं परियागं पाउणिहिति आलोइयपडिक्कंते समा-

हिपरो कालं करिहिति सणंकुमारे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति, से गं तओ देवलोगाओ माणुस्सं पव्वज्जा बंभलोए ततो माणुस्सं महासुक्के ततो माणुस्सं आणते देवे ततो माणुस्सं ततो आरणे देवे ततो माणुस्सं सव्वट्ठसिद्धे, से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे जाव अड्ढाइं जहा दढपइन्ने सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परीनिव्वाहिति सव्व दुक्खाणं मन्तं करेहिति एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते ॥ पढमं अज्झयणं समत्तं ॥१॥

बितियस्स णं उक्खेवो—एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभपुरे णगरे थूभं करंड उज्जाणे धन्नो जक्खो धणावहो राया सरस्सई देवी सुमिणदंसणं कहणं जम्मणं बाल त्तणं कलाओ य जुव्वणे पाणिग्गहणं दाओ पासाद० भोगाय जहा सुबाहुस्स नवरंभद्दनंदी

कुमारे सिरिदेवि पामोक्खा णं पञ्चसया सामी समोसरणं सावगधम्मं पुव्वभवपुच्छा महाविदेहे वासे पुण्डरीकिणी णगरी विजयते कुमारे जुगवाहू तित्थियरे पडिलाभिए माणुस्साउए निवद्धे इहं उप्पन्ने, सेसं जहा सुवाहुस्स जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहित बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति

॥ वितियं अज्झयणं समत्तं ॥ २ ॥

तच्चस्स उक्खेवो—वीरपुरं णगरं मणोरमं उज्जाणं वीरकण्हे जक्खे मित्ते राया सिरी देवी सुजाए कुमारे वलसिरिपामोक्खा पञ्चसयकन्ना सामी समोसरणं पुव्वभवपुच्छा उसुयारे नयरे उसभदत्ते गाहावई पुप्फदत्ते अणगारे पडिलाभिए मणुस्साउए निवद्धे इहं उप्पन्ने जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परीनिव्वाहिति सव्व दुक्खाण मन्तं करेहिति ॥

॥ तइयं अज्झयणं समत्तं ॥ ३ ॥

चोथस्स उक्खेवो—विजयपुरं णगरं णंद-णवणं (मणोरमं) उज्जाणं असोगो जक्खो वासवदत्ते राया कण्हा देवी सुवासवे कुमारे भद्दापामोक्खा णं पंचसया जाव पुव्वभवे कोसंबी णगरी धणपाले राया वेसमणभद्दे-अणगारे पडिलाभिए इह जाव सिद्धे ॥

॥ चोत्थं अज्झयणं समत्तं ॥ ४ ॥

पञ्चमस्स उक्खेवओ—सोगंधिया णगरी नीलासोए उज्जाणे सुकालो जक्खो अप्पडिहओ राया सुकन्ना देवी महचंदे कुमारे तस्स अरह दत्ता भारिया जिणदासो पुत्तो तित्थयरागमणं जिणदासपुव्वभवो मज्झमिया णगरी मेहरहो राया सुधम्मे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे

॥ पंचमं अज्झयणं समत्तं ॥ ५ ॥

छट्ठस्स उक्खेवओ—कणगपुरं णगरं सेया-सोयं उज्जाणं वीरभद्दो जक्खो पियचन्दो राया सुभद्दा देवी वेसमणे कुमारे जुवराया सिरि देवी

पामोक्खा पञ्चसया कन्ना पाणिग्गहणं तित्थयरागमणं धनवती जुवरायपुत्ते जाव पुव्वभवो मणिवया नगरी मित्तो राया संभूतिविजए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥

॥ छट्ठं अज्झयणं समत्तं ॥ ६ ॥

सत्तमस्स उक्खेवो महापुरं णगरं रत्तासोगं उज्जाणं रत्तपाओ बले राया सुभद्दा देवी महब्बले कुमारे रत्तवईपामोक्खाओ पञ्चसया कन्ना पाणिग्गहणं तित्थयरागमणं जाव पुव्वभवो मणिपुरं णगरं णागदत्ते गाहावती इन्ददत्ते अणगारे पडिलाभिते जाव सिद्धे ॥

॥ सत्तमं अज्झयणं समत्तं ॥ ७ ॥

अट्ठमस्स उक्खेवो—सुघोसं णगरं देवरमणं उज्जाणं वीरसेणो जक्खो अज्जुणो राया तत्तवती देवी भद्दनन्दी कुमारे सिरिदेवीपामोक्खा पञ्चसया जाव पुव्वभवे महाघोसे णगरे

धम्मघोसे गाहावती धम्मसीहे अणगारे पडिला भिए जाव सिद्धे ॥

॥ अट्ठमं अज्झयणं समत्तं ॥ ८ ॥

णवमस्स उक्खेवो—चंपा णगरी पुन्नभद्दे उज्जाणे पुन्नभद्दो जक्खो दत्ते राया रत्तवईदेवी महचंदे कुमारे जुवराया सिरिकंतापामोक्खाणं पञ्चसयाकन्ना जाव पुव्वभवा तिगिच्छी णगरी जियसत्तू राया धम्मवीरिए अणगारे पडिला-भिए जाव सिद्धे ॥

॥ नवमं अज्झयणं समत्तं ॥ ६ ॥

जति णं दसमस्स उक्खेवो—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं साएयं नामं नयरं होत्था उत्तरकुरु उज्जाणे पासमिओ जक्खो मि-त्तनंदी राया सिरिकंता देवी वरदत्ते कुमारे वर सेणापामोक्खा णं पञ्चदेवीसया तित्थयरागमणं सावगधम्मं पुव्वभवो पुच्छा सत्तदुवारे नगरे विमलवाहणे राया धम्मरुई अणगारे पडिला-

भिए संसारे परित्तीकए मणुस्साउए निबद्धे इहं उप्पन्ने सेसं जहा सुबाहुस्स कुमारस्स चिंता जाव पव्वज्जा कप्पंतरिओ जाव सव्वट्ठसिद्धे ततो महाविदेहे जहा दढपइन्नो जाव सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ॥ एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते सेवं भंते ! सेवं भंते ! सुहविवागा ॥

॥ दसमं अज्झयणं समत्तं ॥ १० ॥

नमो सुयदेवयाए—विवागसुयस्स दो सुयक्खंधा दुहविवागो य सुहविवागो य, तत्थ दुहविवागे दस अज्झयणा एकसरगा दससुचेव दिवसेसु उद्दिसिज्जन्ति, एवं सुहविवागो वि सेसं जहा आयारस्स ॥

॥ इति एकारसमं अंगंसमत्तं ॥

॥ इअ सुखविपाकसुत्तं समत्तं ॥

हितोपदेश ।

चालो २ मुगत गढ़ माहीं, थांने सतगुरु रह्या समझाई रे ॥ टेर ॥ थांने मानवको भव पायो, चिन्तामणि हाथज आयोरे ॥चा०॥१॥ काया दीसै रंगी, चंगी, दया धर्म करो नवरंगी रे ॥चा०॥२॥ मात पिता लाड़ लड़ावे, स्वार्थ विना अलगा जावे रे ॥चा०॥३॥ तु परणीने लायो लाड़ी, वापण नहिं आवे आड़ी रे ॥ चा० ॥ ४ ॥ सूरी कंता नारी देखो, सूतर मे चाख्यो ईंको लेखो रे ॥चा० ॥५॥ धन दौलत माया जोड़ी, भेली कर मेली कोड़ी कोड़ी रे ॥ चा० ॥ ६ ॥ सागर सेठ थो धनको लोभी, समुद्रमें गयो ते डूबी रे ॥चा०॥७॥ माया-जालकी ममता मेटो, सतगुरुजीने लेवो भेटी रे ॥ चा० ॥ ८ ॥ दया दान कमाई कीजे, नरभवको लाहो लीजे रे ॥ चा० ॥६॥ उगणीसे बासठ माहीं रामपुर रह्या सुख पाहिरे ॥ चा० ॥ १० ॥ कहै हीरा लाल गुणवन्ता, जिन धर्म करो पुन्यवन्ता रे ॥ चा० ॥ ११ ॥ इति ॥

अथ तेरह ढालकी वड़ी साधु बन्दना ॥

दोहा ।

अरिहंत सिद्ध साधु नमो, नमतां क्रोड़ कल्याण ।
साधु तणा गुण गायशुं, मनमें आनन्द आण ॥१॥
गुण गाऊं गुरुवां तणा, मन मोटे मंडाण ।
गुरुआं सहजें गुण करे, सिझे वंछित काम ॥ २ ॥
इणहिज अढाई द्वीपमें, जयवंता जगदीस ।
भाव करी वन्दन करूं, इच्छुक मन अति लीन ॥३॥
भाव प्रधान कह्यो तिसे, सबमें भावज जाण ।
ते भावें सबकुं नमुं, अनंत चोबीसी नाम ॥ ४ ॥
उठ प्रभात समरुं सदा, साधु वन्दन सार ।
गुण गाउं मोटा तणा, पाप रोग सब जार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहिली चौपाईकी चालमें ॥

पंच भरत पञ्च ऐरवत जाण, पंच महा विदेह वखाण । जेह अनन्त हुआ अरिहंत, ते प्रणमुं कर जोड़ी संत ॥ १ ॥ जे हिबड़ा विचरे जिनचन्द,

क्षेत्र विदेह सदा सुखकन्द। कर जोड़ी प्रणमुं तस पाय, आरत विघन सहु टली जाय ॥ २ ॥ सिद्ध अनन्ता जे पनरे भेद, ते प्रणमुं मन धरी उमेद। आचारज प्रणमुं गणधार, श्री उवज्झाय सदा सुखकार ॥ ३ ॥ साधु सहु प्रणमुं केवली, काल अनादि अनन्तावली। जे हिवड़ां वरते गुणवन्त, साधु साधवी सहु भगवन्त ॥ ४ ॥ ते सहु प्रणमुं मन उल्लास, अरिहन्त सिद्धने साधु प्रकास। (बार अनन्ती अनन्त विचार) साधु वन्दना करसुं हितकार, ते सांभलज्यो सहु नर नार ॥ ५ ॥

दोहा।

इण हिज जंबुद्वीपवर, भरत नाम यहां क्षेत्र।
जिनवर वचन लही करी, निर्मल कीधा नेत्र ॥ १ ॥
यहां चौवीसे जिन हुवा, ऋषभादिक महावीर।
पूरब भव कहि प्रणमिये, पामीजे भव तीर ॥ २ ॥
पूरब भव चक्री (वर्त्ति) थया, ऋषभदेव निरभीक।
अजितादिक तेवीस जिन, राजा सहु मण्डलीक ॥ ३ ॥

व्रत लहि पूरब चौदे, ऋषभ भण्या मन रंग ।
पूरब भव तेबीस जिन, भण्या इगियारे अंग ॥४॥
वीस स्थानक तिहां सेवियां, बीजे भवे सुरराय ।
तिहांथी चवी चोवीस जिन, हुवा ते प्रणमुं पाय ॥५॥

॥ ढाल दूजी चौपाईनी देशी ॥

चक्रवर्त्ति पूरब भव जाण, वइरनाभ तिहां नाम वखाण । ऋषभदेव प्रणमुं जगभाण, गुण गावतां हुवे जन्म प्रमाण ॥ १ ॥ विमलराय पूरब भव नाम, अजित जिनेसर करुं प्रणाम । विमल वाहन पूरब भव राय, श्रीसंभव जिन प्रणमुं पाय ॥ २ ॥ पूरब भव धर्मसिंह राजान, अभिनन्दन प्रणमुं शुभ ध्यान । पूरब भव सुमति प्रसीध, सुमति जिनेसर प्रणमुं सीध ॥३॥ पूरब भव राजा धर्म मित्त, पद्मप्रभुजीने वांदुनित्त । पूरब भव जे सुन्दर बाहू, तेह सुपास प्रणमुं जगनाहू ॥ ४ ॥ पूरब भव दीहबाहु मुनीस, चंदा प्रभु प्रणमुं निशादीस । जुगबाहु पूरब भव जीव, प्रणमुं सुविध

जिणंद सदीव ॥ ५ ॥ लहुपाछु पूरव भव जास, श्रीशीतल जिन प्रणमुं उल्लास। दत्त (द्विपण) राय कुल तिलक समान, प्रणमुं श्री श्रेयांस प्रधान ॥ ६ ॥ इन्द्रदत्त मुनिवर गुणवन्त। वास पूज्य प्रणमुं भगवन्त ॥ पूरव भव सुन्दर पद भाग, वंदु विमल भरी मन राग ॥७॥ पूरव भव जे राय महिन्द, तेह अनन्तजिन प्रणमुं सुखकन्द। साधु शिरोमणि सिंहरथ राय, धरमनाथ प्रणमुं चित्त लाय ॥ ८ ॥ पूरव भव मेघरथ गुण गाऊं, शांतिनाथ चरणे चित्त लाऊं ॥ पहले भव रूपी मुनि कहिये, कुन्थनाथ प्रणम्यां सुख लहिये ॥ ६ ॥ राय सुदंसण मुनि विख्यात, वन्दु अरिजिन त्रिभुवन तात। पहले भव नन्दन मुनि चन्द, ते प्रणमुं श्रीमल्लि जिणंद ॥ १० ॥ सिंहगिरि पूरव भव सार, मुनिसुव्रत जिण जगदाधार। अदीण शत्रु मुनिवर शिव साथ, कर जोड़ी प्रणमुं नमिनाथ ॥११॥ संख नरेसर साधु सुजाण, अरिट्ठनेमि प्रणमुं

गुणखाण। राय सुदंसण जेह मुनीस, पार्श्वनाथ प्रणमुं निशदीस ॥ १२ ॥ छठ्ठे भवे पोटिल मुनि जाण, क्रोड़ बरस चारित्र प्रमाण। तीजे भवें नंदन राजान, कर जोड़ी प्रणमुं वर्द्धमान ॥१३॥ चोवीसे जिनवर भगवन्त, ज्ञान दरसण चारित्र अनन्त। बार अनन्त करू ं परणाम, दुष्ट कर्म क्षय करसुं साम ॥ १४ ॥

दोहा।

मेरु थकी उत्तर दिसें, इणहिज जंम्बूद्वीप।
ऐरवत क्षेत्र सुहावणो, जिणविध मोती सीप ॥१॥
तिहां चोवीसे जिण थया, चंद्रानन वारिषेण।
एहिज चोवीसी सही, ते प्रणमुं समश्रेण ॥ २ ॥

॥ ढाल ३ जी राग बेलावली ॥ ए देशी ॥

चन्द्रानन जिण प्रथम जिणेसर, बीजा श्री सुचंद भगवंतके। अग्गिसेण तीजा तीर्थंकर, चौथा श्री नदिसेण अरिहंतके। त्रिकरण शुद्ध सदा जिण प्रणमुं ॥ १ ॥ एरवय क्षेत्र तणा रे

चौवीस, ऋषभादिक स्वामी अनुक्रम हुवा, एक समय जनम्या सुजगीसके ॥ त्रि० ॥ २ ॥ पंचमा इसिदिण्ण थुणीजे, ववहारी छठा जिणरायके । सामीचन्द सातमा जिन समरु, जुत्तिसेण आठमा सुख सायके ॥ त्रि० ॥ ३ ॥ नवमा अजिय सेण जिण प्रणमुं, दसमा श्री सिवसेण उदारक । देव सम्म इग्यारमा गाउं, बारमा निक्खित्त सत्थ सुखकारक ॥ त्रि० ॥ ४ ॥ तेरमा असजल जिन तारक, चौदमा श्री जिणनाथ अनंतक । पनरमा उवसंत नमिजे, सोलमा श्री गुत्तिसेण महंतक ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ सत्तरमा अति पास थुणीजे, प्रणमुं अठारमा श्री सुपालक । उगणीसमा मेरुदेव मनोहर, वीसमा श्रीधर प्रणमुं हुल्लासक ॥ त्रि० ॥ ६ ॥ इकवीसमा सामीकोट्ठ सुहंकर, बावीसमा प्रणमुं अग्गिसेणक । तेवीसमा अग्गिपुत्त अनोपम चोवीसमा प्रणमुं वारिषेणक ॥ त्रि० ॥ ७ ॥ चोथे अंग थकी ए भाख्या, अडतालीस जिणे-

सर नामक । छठे अंग कह्या मुनिसुव्रत, सुख-विपाक जगबाहु स्वामक ॥ त्रि० ॥ ८ ॥ जिण-पचास ए प्रवचने, इम अनंत हूवा अरिहंतक । विहरमान बलि जे जिन बंदु, केवली साधु सहु भगवंतक ॥ त्रि० ॥ ९ ॥ सिद्ध थवा वलि सं-प्रति वरते, कर जोड़ी प्रणमुं तस पायक । हवे जे आगम शुणीजे, ते मुनिवर कहस्युं चित्त-लायक ॥ त्रि० ॥ १० ॥ जिनवर प्रथम जे गणधर समणि, चक्रवर्ति हलधर वली जेहक । पूरब भव तसु नाम जे तस गुरु, गाइस्युं चौथा अंगथी तेहक ॥ त्रि० ॥ ११ ॥ चोवीसे जिन तीर्थ अंतर, क्रोड़ असंख्य हुआ मुनि सिद्धक । कर जोड़ी प्रणमुं ते प्रहसमें, नाम कहुं हवे जे परसिद्धक ॥ ॥ त्रि० ॥ १२ ॥

॥ ढाल चौथी ॥ राग धन्याश्रीनी देशी ॥

प्रहसमें प्रणमुं ऋषभ जिनेसरु, श्री मेरु-देवी सोध सुहंकरु । चौरासी गणधर शीरोमणी,

उसभसेन मुनिवर प्रणमुं सुखभणी ॥ उलाली ॥ सुखभणी प्रणमुं बाहुबल मुनि सहस चौरासी मुनि, बीस सहस प्रणमुं केवली वली सिद्ध थया त्रिभुवन धणी । तीन लाख श्रमणी धूर नमुं नित्य नमुं ब्राह्मी सुन्दरी, चालीस सहस प्रणमुं केवली नमुं श्रमणी चित्त धरी ॥ १ ॥ घर आरिसा भरत नरेसरु, ध्यानबले करी केवल लहिवरु । सहस दस संघाते नरपति, व्रत लई शिव गया प्रणमुं शुभमति ॥ शुभमति जम्बूद्वीप पन्नती वली बखाणीये, भरतनी परे केवली वली क्षेत्र ऐरवय जाणीये । वंदीये चक्री एरवयमुनि भावसुं नित मनरली, हवे भरत पाटे आठ अनुक्रमें वंदीये नृप केवली ॥ २ ॥ श्रीआइचजस महाजस केवली अतिबल महीबल ते जवीरियबली । कीरतिवीरिय दंदवीरिय ध्याइये, जलवीरिय मुनि नित्य गुण गाइये ॥ गाइये ठाणांगे मुनिवर एह भाख्या संजति श्री ऋषभने वली अजित अन्तर हवे कहुं सुणो

सुभमति । पचास लाख क्रोड सागर तिहां असं-
ख्यात केवली, जेह थया मुनिवर तेह प्रणमुं
अशुभ दुरमति निरदली ॥ ३ ॥ अजित जिणेसर
नेऊ गणधरू, धुर प्रणमुं सिंहसेण सुहंकरू । प्रह
समे प्रणमुं फग्गुसाहूणी, हरखसुं वंदु सागर महा
मुनि ॥ महामुनि सागर तीस लाखे कोडअंतरे
जे थया, केवली मुनिवर तेह प्रणमुं दोयकर जोड़ी
सया । श्रीसंभव चारु मुनिवर चित्तसोमा गुण
रमुं, लाख दस ही कोडसागर अंतरे सिद्ध सहुं
नमुं ॥ ४ ॥ श्री अभिनंदन प्रणमुं गणपति, वइ
रनाभ मुनि अतिराणी सती । सागर लाखे नव
कोड अंतरे, केवली जे थया वंदिये शुभपरे ॥
शुभपरे सुमति जिणेसर गणधर चमरकासवि
अजीया, नेऊं सहस्र कोड सागर विचे नमुं जे
सिद्ध थया । स्वामि पउमपहे सुसीसए नामे सुव्वय
वंदिये, साहुणी गुणरती नामे प्रणम्यां दुःख दूर
निकंदिये ॥ ५ ॥ क्रोड सहस नवसागर बीच बली

प्रणमुं मुनिवर जे थया केवली । श्री सुपास वि-
दर्भ गुणदधि प्रणमुं, सोमा समणी गुणनिधि ॥
गुणनिधि नवसे कोड सागर अंतरे जे केवली,
तेह प्रणमुं भावस्युं ए दुःख जावे सहु टली ।
श्रीचन्द्र प्रभु दीनगणधर सती समणा ध्याइये,
नेऊं सागर कोड अंतरे केवली गुण गाइये ॥६॥

ढाल ५ मी ।

सफल संसार अवतार ए हुं गिणूं ॥ ए देशी ॥

सुविधि जिणेसर मुनि वाराहए, वारुणी वंदिये चित्त उच्छाहए । अंतर कोड नव सागर सहु जिहां, कालिकसूत्र तणो विरह भाष्यो इहां ॥ १ ॥ स्वामि शितलजिन साधु आणंद ए, सती सुलसा नमुं चित्त आणंदए । एक सागर तणो कोड अन्तर कह्यो, एकसो सागर ऊणो करि संग्रह्यो ॥ २ ॥ सहस छवीस लख छांसठ उपरे, कालिकसूत्र तणो छेद इण अन्तरे । श्री श्रेयांस मुनि गोथुभ ध्याइये, धारिणी साहुणी चरण चित्त

लाइये ॥ ३ ॥ पूर्वभव गुरु कहुं साधु संभूत ए, विश्वनन्दी वली श्रमण संजुत्तए। अचल मुनिवर नमुं पढम हलधारए, बंधन त्रिपृष्ट केशव सिरदार ए ॥ ४ ॥ चोपन सागर बीच थया केवली, बंदिये सूत्र तणो विरह भाख्यो वली। इम विच्छेद बिच सात जिण अन्तरे, जाणिये शांति जिनवर लग इणि परे ॥ ५ ॥ स्वामी वासुपूज्य जिन साधु सुधर्म धरे, साहुणी वली जिहां धरणी आपदा हरे। सुगुरु सुभद्र सुबंधु बखाणिये, विजय मुनि बंधव द्विपृष्ट हरि जाणिये ॥६॥ तीस सागर बीच अन्तरे जे थया, केवली बंदिये भाव भगते सया। विमल जिन वंदिये साधु मन्दर वली, समणी धरणीधरा आगमे सांभली ॥७॥ गुरु सुदरिसण मुनि सागरदत्त ए, स्वयंभू हरि बंधव भद्र शिवपत्तए। अन्तर सागर नव बीच केवली, बंदिये जे थया ते सहु-वली वली ॥ ८ ॥ स्वामी अनन्त जिन प्रणमिये जसगणी, समणी पउमा नमुं सुगुरु श्रेयांस मुनि

सीस अशोक भव बीये सुप्रभ जति। भ्रात पुरु-षोत्तम केशव नरपति ॥६॥ सागर चारनो अन्तरो भाखिये, केवली वंदिने शिवसुख चाखिये। जिण-वर धर्म अरिष्ठ गणधर कहुं, सती श्रमणी शिवा वांदी शिवसुख लहुं ॥ १० ॥ पूर्वभव कृष्णगुरु ललित सुसीसए, प्रणमुं राम सुदंसण निसदी-सए। बंधव पुरुषसिंह केशव थयो, पांच आश्रव सेवी निरय पुढवी गयो ॥ ११ ॥ सागर तीन बीच आंतर भाखियो, पल्य पऊणे करी ऊणो ते दाखियो तिहां कणे रायरिसी मघव मुनिवर थयो, तिणे नवनिधि तजी शुद्ध संयम ग्रह्यो ॥ १२ ॥ चोथो चक्रीसर सनतकुमार ए, वंदिये अंतकिरिया अधिकारए। इम इण अंतर मुनि मुक्ति पहुंता जिके, केवली वंदिये भाव भगते तिके ॥ १३ ॥

॥ ढाल छट्ठी ॥

उत्तम हिषसिवरायऋषि महा सतीय जयन्ती एदेशी।

सोलहमा श्रीशांन्ति पउ चक्रीजिनराया, चक्रा-

युभगणि समणी सुई प्रणम्यां सुखपाया । पूर्व भव गंगदत्त गुरु तसु शिष्य वाराह, बंधव पुरुष पुंण्ड-रीक राम आणंद उच्छाह ॥ १ ॥ अर्द्ध पल्योपम अंतरे ए, सिद्धा बहु भेद, तेह मुनिवर वंदता, नहीं तीरथे छेद । चक्री श्री कुंथ नमु शांम्ब गणधार, अजुअज्ञा वंदतां, हुवे जय-जय कार ॥ २ ॥ सागर गुरु धर्मसेन, सिस नन्दन हलधार, बंधव केसवदत्त नमुं, समवायांग प्रकार । कोड़ सहस वरसे करीं, ऊणो पलिये चौभाग, इण अन्तर हुवा सिद्ध, बहु वांदु धरि राग ॥ ३ ॥ अर्जुन चक्री सातमा ए, कुम्भ गणधर गाउं, रक्खिया समणी वंदता ए, सिव संपत्त पाउं । कोड सहस वर्ष अंतरें ए, सिद्धा मुनि वृन्द, सातमी नरक सुभूम चक्री, पहुत्यो मतिमन्द ॥४॥ मल्लि जिनेसर वंदिये, वले भिसय मुणिंद, गुरुणी वंदु बंधुमतिं, चरण कमल सुख-कन्द । सहस पंचावन साधवी ए, साधु सहस चालीस, बत्तीस सो मुनि केवली ए, प्रणमुं निस-

दीस ॥५॥ मल्लि जिनेसर पूर्वभव, महाबल अण-गार, तात बलि तसु वंदिए, बल मुनिअनवार। अचल जीव पडिवुध थयो ए, धरण चन्द्रछाय, पूरण जीव ते संख बसु रूपी कहाय ॥६॥ वेसमण ते अदीनशत्रु, अभिचन्द्र जितशत्रु, लहि केवल सुगते गया, पूर्वभव मित्तु। मुनिवर नंदने नंदमित्र सुमित्र बखाणु, बलमित्र वली भानुमित्र, अमर-पति आणु ॥७॥ अमरसेण महासेण, आठे नाय-कुमार, मिलि संगाते साधु थया, अंग छट्ठे विचार अन्तर बलि इहां जाणीये, लाख चोपन्न वास, केवली तिहां बहु बंदिये, धरी हर्ष उल्लास ॥ ८ ॥ वंदु जिणेसर बीसमा, मुनिसुव्रत स्वामी, गणधर इन्द्रने पुष्फमती, प्रणमु शीरनामी। सुरवर सातमे कप्प थयो, मुनिवर गंगदत्त, कत्तिय सोहम इन्द्र पणे, सुरश्रीय संपत्त ॥ ९ ॥ रायरिसि महापउम चक्री, वांदु कर जोडी, समुद्रगुरु अपराजित ए गाउं मदमोडी। रामऋषीश्वर वंदिये ए, नाम पउम

जेह, केशव नारायण तणो ए, बांधव कहुं तेह ॥
॥ १० ॥ केवल लही मुक्ते गया, आठ बलदेव,
नवमो सुरसुख अनुभवी ए, लेहसे शिव हेव। मुनि-
सुव्रत नमि अन्तरो ए, वर्ष लाख छ होई, केवली
सिद्धा ते सहु प्रणमु सूत्रजोई॥ १ ॥

॥ ढाल ७ मी ॥

नवकार जपो मन रंगे ॥ ए देशी ॥

एक वीसमा श्रीनमिजिन वंदु, गणधर कुम्भपर-
धान री माई। समणी अनिला ना गुण गावता ॥
सफल हुवे निज ज्ञान री माई ॥ १ ॥ श्रीजिनशा-
सन मुनिवर वंदु, भक्ते निज शिर नाम री माई ॥
॥ ए आं० ॥ कर्म हणीने केवल पाम्या, पहुत्या
शिवपुर ठामरी माई ॥ २ ॥ नवनिध चौदे रयण
रिध त्यागी, चक्री श्रीहरिसेणरी माई ॥ आश्रव
छण्डी संवर मंडी, वेगे वरी शिव जेणरी माई ॥
श्रीजिन० ॥ ३ ॥ वरस वलीइहां पण लख अन्तर,
तिहां चक्री जयरायरी माई। वली अनेरा मुक्ति

पहोत्या, ते वंदु मन लायरी माई ॥ श्रीजिन०॥४॥ अह ऊठी पणमुं नेमीश्वर, समण ते सहस अठारः री माई । वरदत्त आदि मुनी पनरेसें, वंदु केवल धाररी माई ॥ श्री० ॥ ५ ॥ गौतम समुद्रने सागर गाउं, गंभीर थिमित उदाररी माई । अचल कंपिल्ल अक्षोभ पसेणई, वृशमो विष्णुकुमाररी माई ॥ श्री० ॥ ६ ॥ अक्षोभ सागर समुद्र वंदु, हिमवंत अचल सुचंगरी माई ॥ धरण पूरण अभिचंद आठमो, भण्या इग्यारे अंगरी माई ॥ श्री० ॥७॥ अंधक वृष्णि सुत धारणी अंगज, मुनिवर एह अठाररी माई ॥ आठ आठ अंतेउर छंडी, पाम्या भवजल पाररी माई ॥ श्री० ॥ ८ ॥ वसुदेव देवकी अङ्गज छऊं अणीयसे अणंतसेणरी माई । अजित सेणने अणिहतरिपु, देवसेण सत्रु सेणरी माई ॥ श्री०॥६॥ सुलसानाग घरे सुर जोगे, वधिया रमणी वत्तीसरी माई । छंडी छट्ठ तप चौदस पूर्वी, संयम वरसे वीसरी माई ॥ श्री० ॥ १० ॥ वसुदेव देवकी

अङ्गज आठमो मुनिवर गजसुकुमालरी माई । सही उपसर्गने शिवपुर पहोता, वंदु ते त्रिकालरी माई ॥ ॥ श्री० ॥ ११ ॥ सारण दारुय कुमर अणा हिट्ठी, चौदे पूरव धाररी माई । संयम वच्छर वीस आराधी, कीधो कर्म संहाररी माई ॥श्री०॥१२॥ जाली मयालीने उवयाली पुरिससेण वारिसेणरी माई । बारे अङ्गी सोला बरसे, पाळ्यो संयम तेणरी माई ॥श्री०॥१३ वसुदेव धारणी अङ्गज आठे रमणी तजी पचासरी माई । समता भावे शिवपुर पोहत्या, प्रणमु तेह उल्लासरी माई ॥श्री० ॥ १४ ॥ सुमह दुंमुहने कूव-य ए वंदु, बलदेव धारणी पुत्ररी माई । बीस बरस संयम धर सीख्या, चौदे पूरव सूत्ररी माई ॥ श्री० ॥१५॥ रुकमणी कृष्ण कुमर कहुं पज्जुन्न, जंबूवती सुत सांबरी माई । पज्जुन्नसुत अनिरुद्ध अनोपम जास वेदर्भी अंबरी माई ॥ श्री० ॥ १६ ॥ समुद्र विजय शिवादेवीरा नंदन, सत्यनेमी दृढनेमरी माई । बारे अङ्गीं सोला बरसे व्रत, रमणी पचासे तेमरी

माई ॥ श्री० ॥ १७ ॥ समुद्रविजयसुत मुनि रह नेमि, ए सहु राजकुमाररी माई । केवल पामी मुक्ते पहोत्या, ते प्रणमुं बहुवाररी माई ॥ श्री० ॥ ॥ १८ ॥ आरज्यां जक्षणी आददे सिक्षणी, समणी सहस चालीसरी माई । साधव्यां सिद्धि तीन सहस ते, वंदु कुमति टालीसरी माई ॥ श्री० ॥ १९ ॥ पउमावई गौरी गंधारी, लखमणा सुसीमा नामरी माई । जम्बूवती सतभामा रुकमणी, हरि रमणी अभिराम री माई ॥ श्री० ॥ २० ॥ मूल सिरी मूल-दत्ता वेहुं संवकुमररी नाररी माई । अन्तगढ़ अंगे ए सहु भाषी, पामी भवजल पाररी माई ॥ श्री० ॥ ॥ २१ ॥ उत्तराध्ययन राजेमती सती, संयम सील निहालरी माई । प्रतिबोधी रहनेमी पाम्यो, सासता सुख निरवाणरी माई ॥ श्री० ॥ २२ ॥

॥ ढाल ८ मी ॥

गौतमसमुद्र सागर गम्भीरा ॥ ए देशी ॥

थावच्चासुत सुक सेलग आद, पंथक प्रमुख

मुनि पांचसे ए। मास संलेषणा करी तप अतिघणां, पुण्डरीकगिरि शिवपुर वसेए ॥ राय युधिष्ठिर भीम अतुलबली, अर्जुन नकुल सहदेवजी ए। राय श्री परिहरी सुध संयम धरी, साधुजी शिवपद्वी वरीए ॥१॥ चौद पूरवधरी थीवर धर्मघोष धर्मरुचि सीस सहु गुण भर्या ए ॥ नाग श्री माहणी, दत्त विष जे हणी, तुंवानो मास पारणो करायो ए ॥ सर्वार्थसिद्ध अवतरी तद नरभव करी, क्षेत्रविदेहमें शिवगयो ए। ते मुनी वंदतां कर्मवली नंदतां, जन्म जीवित सफलो थयो ए ॥ २ ॥ समणी गोवालिया जेण सुकुमालिया, दाखिया तास सहु गुण थुणु ए। तेम वली सुव्रता द्रौपदी संयता, नेमशासन नित गुण भणु ए ॥ विमल अनन्तजिन अन्तरे राय, महाबल देवी पद्मावती ए। तास ते अंगय कुमर वीरंगय, तरुण बत्तीस तरुणीपती ए ॥ ३ ॥ ताम सिद्धत्थ गुरु पास संयम वरु, ब्रह्मलोके सुर उपनो ए। चवी बलदेव घर रेवती

उदुंरवर, निसढ नाम सुत संपनो ए ॥ नेमपाय अनुसरी अथिरधन परिहरी, रमणी पचास तजी व्रत ग्रह्यो ए । करी बहु सम दम वरस नव संयम, पालीने सर्वार्थसिद्ध सुख लह्यो ए ॥४॥ क्षेत्र विदेहमें केवल संयम, सिद्ध होसी वली ते मुनि ए । इणपरिअनि* वह वेहप्रगति सहु, जुत्ति कहुं गुण थुणुए । दसरह दढरह महाधनु तेह, सतधनु गुण मुज मन वस्या ए। नवधनु दसधनु सयधनु मुनि एह, भाषिया सूत्र वण्हिदशाए ॥५॥ पूरव भव हरिगुरु नाम द्रुमसेण, ललित† तेराम ‡ पूरव भवे ए ॥ राम बलदेव वली नवमो हलधर ब्रह्मलोके सुख अनुभवे ए । चविजिण तेरमो नाम निकसाय, थायसी जिन सुरतरु समोए । बंधव केशव एक अवतार, अमम

---

* बारमा उपाङ्ग "वह्निदशा" के तेरह अध्ययनोंमें 'निसढ' से 'सयधणु' पर्यन्त १३ नाम कहे हैं ।

† नवमा बलदेवका पूर्वभव रायललिय (राजललित) नामसे प्रसिद्ध है (समवायाङ्ग सूत्र १५८) ।

‡ राम अर्थात् बलराम नामका नवमा बलदेव ।

होसी जिन बारमोए ॥६॥ सहस त्यांसिया सातसे भाषिया, बरस पचास इहां अन्तरोए। तिहां किण चित्त मुनि सिद्धसंपत तास, पाय वंदी कीरत करूं ए ॥ पूर्वभव बंधव चक्री ब्रह्मदत्त सातमी नरकमें संचर्या ए। इण अन्तरे वली नमुं बहु केवली, वेगे शिव सुन्दरी जे वर्याए ॥ ७ ॥

॥ ढाल ६ मी ॥

रामचन्द्रके बागमें चम्पो मोरी रह्योरी ॥ ए देशी ॥

तेवीसमा जिन तारक, पुरिसादाणीय पास।
मुनिवर सोले सहस वर गणधर आठ हुल्लास ॥
(अज्जदिन्न*) शुभ अज्जघोष, बांदु वसिट्ठनाम।

* पार्श्वनाथ स्वामीके प्रथम गणधर "अज्जदिन्न" (आर्यादत्त) थे ऐसा शास्त्रोंसे स्पष्ट ज्ञात होता है परन्तु स्थानाङ्ग-सूत्रमें 'शुभ' से 'जस' पर्यन्त आठ ही गणधरोंके नाम उपलब्ध होते हैं किन्तु इस सूत्रका टीकाकार अपनी टीकामें ऐसा लिखते हैं "आवश्यक सूत्रमें पार्श्वनाथ स्वामीके गण तथा गणधर दश सुने जाते हैं, यथा "दस नवगं गणाण माणं जिणिंदाणं" (तेवीसमे जिनके दश और चौवीसमें जिनके नवगुण हुए हैं) किन्तु अल्पायुष आदि कारणोंसे उन दो गणधरोंकी यहां विवक्षा नहीं की गई ऐसी सम्भावना है" ऐसी टीकाका भाव देख कर आठ गणधरोंकी गिनतीमें "अज्ज-दिन्न" का नाम न मिलनेपर भी यहां पुरानी छपी हुई तेरह ढालकी पुस्तकके अनुसार यहं नाम कोष्टकमें यथास्थित रक्खा गया है।

वली ब्रह्मचारी सोमने, श्रीधर करु प्रणाम ॥ १ ॥ वीरभद्र जस आदि सिद्धा सहस प्रमाण। तेह मुनिवर वंदता, होवे परम कल्याण। साध्वी संख्या सहु अड़तीस सहस वखाणुं ॥ पुष्पचूलादिक सहस दो सिद्धि ते मन आणु ॥ २॥ समणी सुपासा* सीझसीभाषी, धर्म चौजाम। ए अधिकार कह्यो श्रीठाणांग सुठाम ॥ चौदश पूर्वी वली, चौनाणी मुनि केसीकुमार। परदेशी प्रतिबोधियो कीधो बहु उपकार ॥ ३ ॥ वरस अठाईसो अन्तरो, सिद्धा साधु अनेक। तेह सहु विनयसे वंदिये, आणि चित्त विवेक ॥ मुनिवर चौदे सहस गुरु, प्रणमु श्रीमहावीर। सातसो केवली वंदिये, एकादश गणधर धीर ॥ ४ ॥ इन्द्रभूति अग्निभूति, तीजा वांदु वाउभूई। वियत्त सुधर्मा वंदता, मुझ मति निर्मल होई ॥ मंडिय मोरियपुत्त, अकंपित नित सिव्वासे। अचलभूई मेतारिय वंदु श्रीप्रभास

* सुपासाका अधिकार स्थानाङ्ग ठा० ९ मे कहा है।

॥ ५ ॥ वीरंगय* वीरजसनृप, संजय एणेयक राय। सेय सिव उदायण, नरपति संख कहाय ॥ वीर जिनेसर आठेइ, दीक्षा रायसुजाण। मुनि-वर पोटिल बांध्या गोत्र तीर्थंकरठाण ॥ ६ ॥ पालक श्रावकपुत्र ते, वांदु समुद्रपाल। पुन्यने प्राप बिहुंक्षय करी, सिद्धा साधु दयाल ॥ न-यरी सावत्थी बिहुं मिल्या, केशी गौतम स्वामी सिस्स संदेह परिहरी, पंच महाव्रत लिया शिर नामी ॥ ७ ॥

॥ ढाल १० मी ॥

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥

माहनकुण्ड नयरीनो अधिपति, माहणकुल नभ-चंदोजी। वीर जिनेसर तात सुगुण नीलो, ऋषभ-दत्त मुणींदोजी ॥ नि० ॥ १ ॥ नित नित वांदु मुनिवर ए सहु, त्रिकरण शुद्ध त्रिकालोजी। विधि सुं

* वीरंगय (वीराङ्गद) प्रमुख आठ राजा श्रीमहावीर स्वामीके पास दीक्षा ली। (स्थानाङ्ग-सूत्र, ठाणा ८)।

देई रे तीन प्रदक्षिणा, कर अंजलीनिज भालोजी ॥ ॥ नि० ॥ २ ॥ राय उदायण* सिंधु सो वीरजो, निरमल संजम धारोजी । सेठ सुदर्शन मुनि मुगते गया, सुणी महाबल अधिकारोजी ॥नि०॥३॥ कालासवेसिय† गंगेयमुणी पोग्गलने‡ शिवराजोजी॥ कालोदाई अइमुत्तमुनि, वंदता सीजे काजोजी ॥नि० ॥४॥ मंकाई × मुनिवर किकम वंदिये, अर्जुनमाली उल्लासोजी । कासव खेमने धृतिहर जाणिये, केवल रूप कैलासोजी ॥ नि० ॥ ५ ॥ मुनि हरिचंदण बारत्तय वली, सुदर्शन पूर्णभद्दोजी । साध सुमणभद्र समता आदरे, सुपइट्ठ समय सवंदोजी ॥ नि० ॥६॥ मेघमुनीश्वर अइमुत्त मुनि, रायऋषि अलक्खोजी । श्रीजिनसीस ए सहु मुगते गया, सेवे सुरनर सक्खोजी

* उदायनका अधिकार भागवती, श० ३, उ० ६ में कहा है ।

† कालासवेसियपुत्त (कालास्यवेशिक पुत्र) (भगवती, श०१उ०९)

‡ पोग्गलका अधिकार (भगवती, श० ११ उ० १२ में कहा है ।

× "मंकाई" से "अलक्खो" पर्यन्त १६ मुनियोंका चरित्र-अन्तकृद्दशा वर्ग ६ में कहा है ।

॥ नि० ॥ ७ ॥ सहस्र छत्तीसे समणीं चंदणा, आदे चौदसे सिधो जी, देवानंदा जननी वीरनी केवल-ज्ञाने संबंधोजी ॥नि०॥८॥ समणी जयवंती पढमसिं-ज्यातरी, सिद्धी केवल पामोजी । नंदा* नंदवती नंदोत्तरा, वली नंदसेणिया नामो जी ॥ नि० ॥९॥ मरुता सुमरुता महामरुना नमु मरुदेवा वली जाणो-जी । भद्रा सुभद्रा सुजाया जिनतणी, पाली निर्मल आणोजी ॥नि०॥१०॥ सुमणा समणी भूयदिन्ना नमुं, राणी श्रेणिकरायजी । मास संलेषणा तेरे सिद्ध थई, प्रणम्यां पातक जायजी ॥नि०॥११॥ कालीं† सुकाली महाकाली नमुं, कण्हा सुकण्हा तेमोजी । महाकण्हा वीरकण्हा साहूणी, रामकण्हा सुद्धनेमो जी ॥ नि० ॥ १२ ॥ पिउसेणकण्हा महासेणकण्हा ए दश श्रेणिकनारोजी निज निज नंदन कालसुणे

* "नन्दा" से "भुयदिन्ना" पर्यन्त १३ महासतियोंका चरित्र-अन्तकृद्दशा वर्ग ७ में कहा है ।

† "काली" से "महासेणकण्हा" पर्यन्त १० महासतियोंका चरित्र अन्तकृद्दशा वर्ग ८ में कहा है ।

करी, लीधो संजम भारोजी ॥ नि० ॥१३॥ एदस समणी तप रयणावली, आदे दस प्रकारोजी । लई केवल ए सहु मुगते गई,ते वंदु बहु वारोजी॥नि०॥१४॥

॥ ढाल ११ मी ॥

सुखकारण भवियण समरो नित्य नवकार ॥ ए देशी ॥

धर्मघोषमुनीश्वर, महाबल गुरु सुतधार । जिण पूछ्यो रोहे, लोकालोक विचार ॥१॥ वेसालियसावय, पिंगल नाम नियंठ। पडिवायक पुछ्या, खंधक समय पियंठ ॥२॥ कालियपुत्त* महेल, आणंदरक्खिय ज्ञानी । वली कासव चौथे, थिवरां पास संतानी ॥३॥ मुनि तीसग† कुरुदत्तपुत्र नियंठीपुत्त धननारदपुत्र-मुनि‡, सामहत्थी संजुत्त ॥४॥ सुणखत्त× सव्वाणभूई, खपकआणंद÷ । जिन औषध

* भगवती, श० २ उ० ५ । † भगवती श० ३ उ० १ ।

‡ भगवती श० ५ उ० ७ ।

×—भगवती, श० १५ उ० १ । ÷ खपक आणंद (क्षपकआनन्द) अर्थात् आनन्द नामका तपस्वी साधु ।

आण्यो, धन धन सिंहमुणिंद ॥ ५ ॥ वली पूछ्या जिनने लेश्यादिक बहुभेद । गुण गाउं महामुनि माकंदी पुत्र उमेद ॥६॥ हवे श्रेणिकसुत कहुं, जाली* कुंवर मयाली । उवयाली पुरिससेण, वारिसेण आपदा टाली ॥ ७ ॥ दीहदंतने लट्ठदंत, धारणी नंदण होय । वेहलने विहायस, चेलणा अंगज दोय ॥ ८ ॥ ईक नंदा नंदन, मुनिवर अभय महंत । दीहसेणने† महासेण, लट्ठदंतने गूढदंत ॥ ॥ ६ ॥ सुधदंत कुमर हल, द्रुमने वली द्रुमसेण । गुण गाउं महाद्रुमसेण, सिंहने सिंह सेण ॥ १० ॥ मुनिवर महासेन पुण्यसेन परधान । ए धारणी अंगज, तेजे तरणि समान ॥ ॥११॥ सहुश्रेणिकनंदन, इयदस तेरे कुमार । आठ आठ रमणी तजी, अनुत्तरसुर अवतार ॥ १२ ॥

---

* 'जाली' से 'अभय' पर्यन्त दश मुनियोंका अधिकार अनुत्तरोपपातिक-वर्ग१ में कहा है । † 'दीहसेण' से "पुण्यसेन" पर्यन्त तेरह मुनियोंका अधिकार अनुत्तरोपपातिक वर्ग २ में कहा है ।

तिण अवसर नयरी, काकंदी अभिराम ।
तिहां परिवसे भद्रा, सारथवाही नाम ॥ १३ ॥
तसु नन्दन धन्नो, * सुन्दर रूपनिधान ।
तिण परणी तरुणी, बत्तीस रंभा समान ॥ १४ ॥
जिनवयण सुणीने, लीधो संजम जोग । मुनि
तरुण पणेमें सहु, छण्ड्या रसना भोग ॥ १५ ॥
नित छठ तप पारणो, आंबीले उज्झित भात ।
जस समण थणीमग, कोई न वंछे भात ॥ १६ ॥
अति दुक्कर संयम, आराध्यो नवमास । करी
मास संलेषणा, सर्वार्थसिद्ध मांही वास ॥ १७ ॥
काकंदी, सुणक्खत्त, राजगृही इसिदास । पेलक्क
ए वेउ, एकण नगर हुल्लास ॥ १८ ॥ राम पु-
त्रने चन्द्रमा, साकेतपुर वर ठाम । पिट्ठिमाइया
पेढाल-पुत्त वाणियाग्राम ॥ १६ ॥ हत्थिणापुर
पोट्टिल, सहु ए धन्ना समान । तरुणी तप

* "धन्ना" से 'वेहल' पर्यन्त दश मुनियोंका अधिकार अनुत्त-
रोपपातिक वर्ग ३ में कहा है ।

जननी, संयम वरसी मान ॥ २० ॥ हवे वेहल्ल कुमर कहुं, राजगृही आवास। सर्वार्थ सिद्ध पहुंतो, धर संयम छई मास ॥ २१ ॥ ए एक भवे शिव-गामी जिनवर सीस। सहु नवमे अंगे भाख्या मुनि तेतीस ॥ २२ ॥ हवे पउम महापउम, भद्र सुभद्र वखाण। पउमभद्दने पउमसेण, पउमगुम्म मन आण ॥ २३ ॥ नलिणीगुम्म आणंद, नंदन एह मुनि जान। कालादिक दस सुत, कप्पवडंसिया * ठाण ॥ २४ ॥ मुनि उदये पूछ्या, गौतमने पच्चखाण। चउजाम थकी कीयो, पंचजाम परिमाण ॥ २५ ॥ जिणे जिनमत मंडी, खंडी कुमत अनेक। ते आर्द्रकुमर मुनि, धन तसु बुद्ध विवेक ॥ २६ ॥ गद्दभालि † बोहिय, संजय नृप अणगार। मुनि क्षत्री भा-

* कप्पवडंसिया कल्पावतंसिका) अर्थात् नवमा उपाङ्गमें 'पउम' से 'नन्दण' पर्यन्त १० मु नोंके नाम कहे हैं।

† गर्दभालि मुनिसे प्रतिबोध पाया संजय नृप, उत्तराध्ययन, अ०१८

रुया, बहुविध अर्थ प्रकार ॥ २७ ॥ महीमंडल विचरे, विगत मोह अनाथ* । गुणगावंता अह-नीस, संपजे शिवपुर साथ ॥ २८ ॥ नृप श्रेणिकनंदन, मुनिवर मेघ सुजाण । तजी आठ अंते-उर, उपन्यो विजय विमाण ॥ २९ ॥ अपमानी रयणा†, आदर्यों संयम जेह । जिनपालित ‡ मुनिवर, सोहम सुरथयो तेह ॥ ३० ॥ हरि चोर चीलाती, सुसमा तातं ते घन्नो । आराधी संयम सोहम सुर उववन्नो ॥ ३१ ॥ श्री वीर जिनेसर, सासण मुनिवर नाम । नित भक्त गाउं तेह तणा गुण ग्राम ॥ ३२ ॥

॥ ढाल १२ ॥

॥ वेसालियसावय पिंगल० ॥ एदेशी ॥

धर्मघोष गुरु शिष्य सुदत्त, मासने पारणे तेह

---

* अनाथ मुनि, उत्तराध्ययन अ० २०

† रयणा रत्नद्वीपमें रहने वाली देवी ।

‡ जिनपालितका अधिकार ज्ञाता १ श्रु० ९ अध्ययनमें कहा है ।

सुपत्त, प्रतिलाभ्यो सुभचित्त। सुमुख थयो भव बिय सुबाहु, सुर थयो संजम ग्रही साहु, गुण तसु गाऊं नित्त ॥ १ ॥ श्रीजुगबाहु जिणवर आवे बिजयकुमार प्रतिलाभे भावे, बीजे भवे भद्रनंद। भोग तजी थयो साधु मुणीन्द, करी सलेषणा लह्यो सुखवृन्द, गुण तसु गात आणंद ॥ २ ॥ ऋषभदत्त पहले भव संत, तिण प्रतिलाभ्यो मुनि पुष्पदंत, तिहांथी थयो सुजात। तृण सम जाणी सहु रिद्धिजात, आदरी आठे प्रवचन मात, भवियण तसु गुण गात ॥ ३ ॥ पहले भव नृपति धनपाल, वेसमणभद्रने दान रसाल, देई सुवासव थाय। संयम लेई ते मुनिराय, लहि केवल वली शिवपुर जाय, ते वंदु मन लाय ॥४॥ पूर्वभव मेघरथ राजान, सुधर्म मुनिने देई दान बीजे भव जिनदास। संवर पाली जे यथो सिद्ध, केवल दर्शन ज्ञान समिद्ध, वांदु तेह उल्लास ॥५॥ मित्रराया पूर्वभव जाण, संभूतिविजय मुनि

दान वखाण, कुमरते धनपति होई। वीर समीपे संयम लीधो, ततक्षण कर्महणीने सीधो, दिन प्रति वंदु सोई ॥ ६ ॥ पूर्वभव नागदत्त धनीसर प्रतिलाभ्यो इन्द्रपुर मुनीसर, महाबल नाम कुमार। संयम लेई कारज सार्या, भवसागरथी आतम तार्या, ते वंदु बहु वार ॥ ७ ॥ गृहपति पहले भव धर्मघोष, तिन प्रतिलाभ्यो अति संतोष,नाम मुनि धर्मसिंह। बीजे भव थयो भद्र-नंदी, मुक्ति गयो भव बंधन छंदी, ते वंदु निस-दीह ॥ ८ ॥ पहले भवजित शत्रु नरेश, प्रतिला-भ्यो धर्मवीर्य सुलेस, वली महचन्द नाम कुमार। तिण छंडी बहु राजकुमारी पांचसे अपछराने उणी-हारी, ते वंदु केवलधारी ॥ ९ ॥ विमल वाहन राजापूर्वभव, धर्मरुचि पडिलाभ्यो गुणस्तववरदत्त हुवो भवबीजे। संयम लेई सुरश्री पामी, कप्पंत-रियो जे शिवगामी, कीरति तेहनी कीजे ॥ १० ॥ पूर्वभव देई दान उदार, बीजे भव थया राजकुमार

र्या तजी पांच पांचसे नारी। सहु थया वीर जिनेश्वरशिष्य, सुखविपाके एह मुनीस, पंचमहाव्रतधारी ॥ ११ ॥ नमि *मातंगने सो मिल गाऊं, रामगुत्त सुदर्शन ध्याउं, नमुं जमाली भगाली। किंकम पेल्लक फाल यतीजी, अंतगड़ अंगे वाघणा बीजी, ठाणा अंग संभाली ॥१२॥ पूर्व भव महापउम ते बीजे, तेतलीपुत्र† मुनि प्रणमीजे, महापउम‡ पुण्डरीक तात। वली वन्दु जित शत्रु सुबुद्धी, कर्म हणी तिण करी विशुद्धी, ते मुनी वन्दु विख्यात ॥ १३ ॥ मुनि जयघोष विजयघोष वांदु, बलश्री × नाम मृगापुत्र वांदु, कमला

* 'नमि' से 'फाल' [अंबडपुत्र] पर्यन्त दश नाम ठाणांग ठा० १० में कहे हैं।

† तेतलीपुत्रका अधिकार ज्ञाता १ श्रु० १४ अध्ययनमें कहा है।

‡ महापउम जो पुण्डरीक कंडरीकका पिता था उसका अधिकार ज्ञाता १ श्रु० १९ अध्ययनमें कहा है॥

× सुग्रीव नगरके राजा बलभद्र रानी मृगावतीका पुत्र बलश्री जो कि मृगापुत्र इस नामसे प्रसिद्ध था इसका अधिकार उत्तराध्ययन अध्ययन १९ में कहा है।

थती* इषुकार पुत्र पुरोहित वली तसु नारी, नाम जसा संवेगे सारी, वंदता नित्य जयजयकार ॥१४॥

॥ ढाल १३ मी ॥

चतुर विचारिये रे ॥ ए देशी ॥

मुनि इसिदास† ने धन्नो वली वखाणीये रे, सुणक्खत्त कत्तिय संजुत्त। सट्ठाण शालिभद्र आणंद तेतली रे, दशार्णभद्र अइमुत्त ॥ १ ॥ मुनिगुण गाइये रे, गावंता परमाणंद। शिवसुख साध गुणे करी अहोनिस संपजे रे, भाजे भव भय दंद ॥ मुनि० ॥२॥ अणुत्तर अंग नी एहीज बीजी वाचना रे, ए दश मुनिवर नाम। नन्दीसूत्रमें साधु सुवुद्धि पणे कह्या रे, नन्दीसेण अभिराम ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ विषम नन्दी फल अधि-

* इषुकारपुर नगर इषुकार राजा कमलावती रानी भृगु पुरोहित वशिष्ठ गोत्रवाली जसा नाम भार्या और इनके दो पुत्र यह अधिकार उत्तराध्ययन अध्ययन १४ में कहा है।

† 'इसिदास' से 'अइमुत्त' पर्यन्त दश मुनियोंके नाम ठाणांगसूत्र ठा० १० में कहे हैं।

कार वली भन्नो मुनि रे, भन्नो देव धन तान। सुब्रता❀ समणी गुरुणी शिष्यणी पोटिल्ला रे, पुंडरीक† कुंडरीक भ्रात ॥ मुनि० ॥४॥ शिष्यणी सुभद्रा‡ केरी गुरुणी सुब्रतारे, पूर्णभद्र सुचंग। मणिभद्रने दत्त शिव बल मुनिरे, अणाढिय पु-प्फिया उपांग ॥ मु० ॥५॥ धन ते कपिल× जति अति निर्मल मति रे, तिण तज्या लोभ संताप। इन्द्रपरीक्षा अवसर उपशम आदरीरे, नमी न-माये आप ॥मु०॥६॥ सुरवरसेवित श्रीहरिकेश ÷ बलमुनि रे, संवर धार सुलेस। शक्रने प्रेख्यो

---

* सुब्रताका अधिकार ज्ञाता १ श्रु० १४ अध्ययनमें कहा है।

† पुंडरीक तथा कंडरीकका अधिकार ज्ञाता १ श्रु० १९ अध्य-यन तथा उत्तराध्ययन अध्ययन १० में कहा है।

‡ सुब्रताकी शिष्यणी सुभद्रा थी यह अधिकार पुष्फिया उपांग अध्ययन ४ में कहा

× कपिलका अधिकार उत्तराध्ययन अ० ८ में कहा है।

÷ हरिकेश नामसे प्रसिद्ध ऐसा बल नामका मुनि है, यह अधि कार उत्तराध्ययन अध्ययन १२ में कहा है।

परतिख संयम आदर्यो रे, दशार्णभद्र* नरेस ॥
॥मु०॥७॥ मुनि करकंडु† राजा देश कलिंग नो रे,
दुम्मुह पंचाल भूपाल । वली विदेही नामे नमि नर-
पति रे, नग्गई गंधार रसाल ॥ मु० ॥८॥ सिव ‡
बीजे ने महाबल × ए सहु राजवी रे, व्रत
लेई थया अणगार । काम कषाय निवारी शी-
तल आतमा रे, थिवर गंगेयो गणधार ॥ मु० ॥
॥ ९ ॥ हवे श्रीवीर जिनेश्वर शिष्य सुहम्म गणी
रे, तास परंपर एह । जंबू प्रभवने वली शय्यं-
भव जाणिये रे, मनगपिया मुनि तेह ॥ मु० ॥
॥ १० ॥ श्रीयशोभद्रने मुनि संभूति विजय वली
रे, भद्रबाहु थूलभद्र एम । अनेरा जिणवर आणा

* दशार्णभद्रका अधिकार उत्तराध्ययन अध्ययन १८ गाथा ४४ में कहा है।

† करकंडु आदि चार मुनियोंका अधिकार उत्तराध्ययन अध्ययन १८ गाथा ४५ में कहा है।

‡ शिवराजर्षिका अधिकार भगवती श० ११ उ०९ में कहा है।

× महाबलका अधिकार भगवती शतक ११ उ० ११ में कहा है

मांही जे हुवा रे, ते मुनि गाऊं सवंद ॥ मु० ॥
॥ ११ ॥ सूयगडांग में साधु दोय कह्या रे, ठाणा
अंग मांही चालीस। एकसोगुणंतर चौथे अंगे
कह्या रे, भगवती दोय तीस ॥ मु० ॥१२॥ पचास
मुनि ज्ञाता मध्ये रे, अन्तगड नेऊ होय। तेतीस
साधु नवमे अंगे कह्या रे, एकवीस विपाकमें
जोय ॥ मु० ॥ १३ ॥ रायपसेणी केसी समण
वली रे, जंबूदीवपन्नत्ति रे माय। एरवयक्षेत्र
तणा चक्री साधु सुहामणा रे, ते वंदू मनलाय
॥ मु० ॥ १४ ॥ दस साधु कप्पवडंसिया रे, पु-
प्फिया मांही मात। चवदे भिक्खू वहिदशा रे,
हूं वंदु दिन रात ॥ मु० ॥ १५ ॥ बयालीस साधु
उत्तराध्ययनमें रे, नन्दीसूत्रमें एक। आठ पाट
श्रीवीर ना रे, हूं गाऊं धरिय विवेक ॥ मु० ॥
॥ १६ ॥ सर्व साधु मिलने थया रे, पांच सो इक-
बीस। पन्नरे सूत्रमें जे कह्या रे, ते वंदू निस-
दीस ॥ मु० ॥ १७ ॥ काल अनंते मुनिवर मुक्ते

गया रे, संप्रति वरते जेह। नाण दंसण ने चरण करण धुरंधरा रे, श्री देव वंदे तेह ॥ मु०॥ ॥१८॥

॥ कलश ॥

चौवीस जिणवर प्रथम गणधर चक्री हलधर जे हुवा।
संसार तारक केवली वली समण समणी संथुआ।
संवेग श्रुतधर साधु सुखकर आगम वचने जे सुण्या।
दीपचन्द्र गुरु सुपसाये श्रीदेवचंद्रे संथुण्या ॥१॥

देवचन्दजीके गुरु दीपचन्दजी इनके गुरु ज्ञानधर्म गणि हुए यथा दोहा—पाठक ज्ञानधर्म गणि, पाठक श्रीदीपचन्द। तास शिष्य देवचन्द कृत, भणता परमाणंद ॥ २० ॥ यह दोहा प्रकरण रत्नाकर भाग प्रथम गत नयचक्र विवरण का प्रशस्तिका है।

पूज्य श्री श्री आचार्य मुनिराजोंका स्तवन

॥ दोहा ॥

श्री पूज्य गुण वर्णन करूं, सुणो सभी चितलाय।
छऊं पाटकी लावणी, जोडी चित्त लगाय ॥१॥

श्रीहुकुममुनि महाराज हुवे अवतारी। महाराज जैनका धर्म दिपाया जी। जाने भोग

छोड़ लिया जोग रोग करमोंका मिटाया जी ॥ ॥ टेर ॥ फिर दुतिय पाट शिवलाल मुनीको थाप्या ॥ म० ॥ क्रिया उद्धार करायाजी । कियो ज्ञान तणो उद्योत सभी कुं खोल सुणाया जी। फिर तृतिय पाट उदेसागरजी सोहे ॥ म० ॥ सभीको लागे प्याराजी । ज्याने चतुर्थ पाट मुनि चोथ-मल कुं दिया विठाईजी ॥ श्री० ॥ १ ॥ फिर पंचम पाट मुनि श्रीलाल तपधारी ॥ म० ॥ तेज सूर्य सम भारीजी । हुवे महा बड़े मुनिराज जिन्हों की जाऊं वलिहारीजी ॥ संवत उन्नीसे साल पिचंत्तर माहीं ॥म०॥ चैत वदी नम सुखकारी जी । रतनपुरी मंझार पूजने चादर ओढाई जी ॥ श्री० ॥ २ ॥ चतुर विध संग मिलीने महोत्सव कीनो ॥ म० ॥ सभीके आनन्द छाया जी। देश देशके आय जातरी उत्सव गावेजी ॥ फिर छठे पाट मुनी जवाहिरलालजी दीपे ॥ म० ॥ जैनमें वल्लभ लागेजी । ज्याने किया बहुत उद्योत भवी जीवन

कूंतारथाजी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ पंचमहाव्रतधारी परम उपकारी ॥ म० ॥ दोष बयालीस टालोजी । मुनि लावे सूजतो आहार । जाणे सब ही नर नारी जी । कल्पवृक्ष साक्षात महा मुनिराया ॥ म० ॥ चिन्तामणि चिन्ता चूरेजी । ये कामधेनु सम जाण जगतमें हैं सुखकारीजी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ गुरू भाई मोतीलालजी जारी ॥ म० ॥ तपस्या माहे भारी जी । लालचन्दजी सन्त सभीमें हिमतधारी जी राधालालजी महाराज बहु उपकारी ॥ म० ॥ सताइस गुणके धारीजी । सिरदारमल श्रीच-न्द उनोंका गुण कथ गाउंजी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चांदमलजी मुनि वेया बचधारी ॥ म० ॥ सुरजमल हैं सन्तोषीजी । करे ज्ञान ध्यान उद्योत रात दिन सीखण ताईजी। शहर बीकाणे मांही आप बिराजो ॥ म० ॥ सभीका पुन्य सवायाजी । जो नित करे आपकी सेव उसीका बेड़ा पारीजी ॥श्री०॥६॥ श्री रतनचन्दजी संत साथमें लाये ॥म०॥ सूरति मोहन

गारीजी। सिरेमलजी सन्त ज्ञानमें हैं भण्डारीजी। सिमरथमलजी महाराज बड़े हैं ज्ञाता॥ म०॥ सूत्रके हैं वे धारीजी। है पुनमचन्दजी शिष्य जिनोंकी महिमा न्यारीजी॥ श्री०॥७॥ ठाण दस तीजोजी महाराज विराजे॥ म०॥ जुमाजी हैं ब्रह्मचारीजी। सिलेकंवरजी औरजेठाजी सब गुणधारीजी। इन्द्र कंवरजी पानकंवरजी जाणो॥ म०॥ ज्ञानमें हैं ले लीनाजी। ज्याने किया ज्ञानका थोक उनोंकी महिमा भारीजी॥श्री०॥ ८॥ कालकंवरजी फकीरकंवरजी जुंजे॥ म०॥ तपमें जोर लगावेजी। ज्याने कीवी तपस्या बहुत आतमा कूंय सुधारीजी अणचकंवर महाराज बड़ जसधारी॥ म०॥ छोटाजी हैं गुणवन्ताजी। वाने दीवी रिद्ध छिटकाय ध्यान प्रभुसे लगायाजी॥श्री०॥६॥ ंबत उन्नीसे साल सीतंतर मांही॥ म०॥ आपने किया चौमासाजी। हुआ धर्म तणा उद्योत सभी जीवों हितकारीजी॥ भार्या बायांकी अरज आप सुण लीजो

॥म०॥ अरज कूं आन गुजारीजी। कल्पे सो चौमास आप थोंकाणे कीजोजी ॥श्री०॥१०॥ पहले श्रावण सुदी मासके मांई ॥ म० ॥ चतुरदसी तिथने गाई जी। या करी जोड सुध भाव आपका गुण मैं गावोंजी। मालु मङ्गलचन्द अरज करे सुण लीजो ॥ म० ॥ त्रिविधे शीश नमाइजी। जो भूल चूक इस मांय हुवे तो माफ करावोजी ॥श्री०॥११॥ इति॥

॥ अथ श्री सोलह सतियोंका स्तवन ॥

आदिनाथ आदि जिनवर वन्दू। सफल मनो-रथ कीजिये ए ॥ प्रभात उठी मंगलिक कामे। सोलह सतीना नाम लीजिये ए ॥ १ ॥ बाल कुमारी जग हितकारी। ब्राह्मी भरतनी बेनडी ए घट घट व्यापक अक्षररूपे। सोले सतीमा जेवडी ए ॥ २ ॥ बाहुबल भगिनी सती शिरोमणि। सु-न्दरिनामे ऋषभसुता ए ॥ अंक स्वरूपी त्रिभुवन माहे। जेह अनूपम गुणजिताए ॥ ३ ॥ चन्दन वाला वालपणेथी। शियल वन्ति शुद्ध श्राविकाए ॥

उद्धदना बाकला बीर प्रतिलाभ्यो । केवल लहिन्न भाविकाए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुया धारिणी नन्दन राजमती नेम वल्लभाए ॥ जोवन वयसे कामने जीत्यो । संयम लेई देव दुर्लभाए ॥ ५ ॥ पंच-भरतारी पाण्डव नारी द्रुपद तनया बखाणीए॥ एक सौ आठ चीर पुराणी शीयल महिमा तस जाणी ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारि निरूपम । कौशि-क्या कुल चन्द्रिका ए ॥ शीयल सलोनी राम जनेता । पुन्यतणी प्रणालिकाए ॥ ७ ॥ कौशम्बिक ठामे सन्तानक नामे । राजकरे रंगराजियो ए । तसघर घरनी मृगावंती सती । सुर भवने जस गाजियो ए ॥ ८॥ सुलसा साची शियल न काची राची नहीं विषय रस ए ॥ मुखडा जोतां पाप पलाए । नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥९॥ राम रघु-बंशी तेहनी कामिनी जनक सुता सीता सती ए ॥ जगसहु जाणे धीज करंता अनल शीतल थयो शियलथिए ॥ १० ॥ सुरनर बंदित शियल अख-

पिडत शिवा शिवपद गामिनी ए। जेहने नामे निर्मल थई ए बलिहारी तस नामनी ए ॥ ११ ॥ कांचे तन्त चालणी बान्धी। कूप थकी जल काढ़ियो ए ॥ कलंक उतारवा सतीय सुभद्रा। चम्पा पाप उघाड़ियो ए ॥ १२ ॥ हस्तिनापुरे पाण्डु रायनी। कुन्ता नामे कामिनीए ॥ पाण्डुमाता दशे दशारनी वहने पतिव्रता पद्मिनीए ॥ १३ ॥ शील वती नामे शीलव्रत धारिणी त्रिविध तेहने वंदिये एं ॥ नाम जपन्ता पातक जाये दरशने दुरित निकन्दिये ए ॥ १४ ॥ नीषध नगरी नल नरेन्द्रनी दमयन्ती तस गेहनी ए ॥ संकट पड़ता शीयलजराख्यो। त्रिभुवन कीरति जेहनीए ॥ १५ ॥ अनंग अजिता जग जन पूजिता। पुष्फचुलाने प्रभावती ए॥ विश्वविख्याता कामित दाता। सोलहमी सती पदमावती ए ॥ १६ ॥ वीरे भाषी शास्त्रे साखी। उदयरतन भाषे मुदा ॥ भाणु उवंता जे नर भणसे ते लेवे सुख सम्पदा ए। १७ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

पूज्य श्रीश्री १००८ श्री जवाहिरलालजी
महाराज कृत

सुदर्शन चरित्र

॥ चौपाई ॥

धन शेठ सुदर्शन शियल शुद्ध, पाली तारी आतमा ॥ टेक॥ सिद्ध साधु को शीश नमाके, एक करू अरदास ॥ सुदर्शन की कथा कहूं मैं, पुरो हमारी आस ॥ धन०॥१॥ चम्पापुरी नगरी अति सुन्दर, दधी वाहन तिहा राय ॥ पटरानी अभिया अति प्यारी, रूप कला शोभाय ॥ धन० ॥२॥ तिन पुर शेठ श्रावक दृढ धर्मी, यथा नाम जिन दास॥ अर्हदासी नारी अति खासी, रूप शील गुण खास ॥ धन० ॥३॥ दास सुभग बालक अति सुन्दर, गौवें चरावन हार ॥ शेठ प्रेमसे रखे नेम से, करे साल संभार ॥ धन० ॥ ४ ॥ एक दिन जंगल में मुनि देखे, तन मन उपज्यो प्यार ॥ खड़ा

सामने ध्यान मुनिमें, विसर गया संसार ॥धन०॥ ५ ॥ गगन गये मुनिराज मंत्र पढ़, बालक घरको आय ॥ शेठ पूछते मुनि दर्शनके, सभी हाल सुनाय ॥ धन० ॥ ६ ॥ प्रमुदित भावे शेठ कहे धन, मुनि दर्शन ते पाया ॥ अपूर्ण मंत्रको पूर्ण करके, शुद्ध भाव सिखलाया ॥ धन० ॥ ७ ॥ शिखा मंत्र नवकार बाल जब, मनमें करता ध्यान ऊठत बैठत सोवत जागत, बस्ती और उद्यान ॥ धन० ॥ ८ ॥ एक दिन जंगलसे घर आता, नदिया आई पूर ॥ पेली तीर जानेको बालक, हुआ अति आतुर ॥ धन० ॥ ९ ॥ धरके ध्यान नवकार मंत्रका, कूद पड़ा जल धार ॥ खेर खूंट घुस गया उदरमें, पीड़ा हुई अपार ॥धन०॥१०॥ छोड़ा नहीं नवकार ध्यानको, तत्क्षण कर गया काल ॥ जिन दास घर नारी कुंखे, जन्मा सुन्दर लाल ॥ धन० ॥ ११ ॥ कर महोत्सव रखा नाम सुदर्शन, वर्त्या मंगलाचार ॥ घर घर रंग वधावना

सरे, पुरमें जय जयकार ॥ धन० ॥ १२ ॥ पंच धाय हुलसावे लालको, पाले विविध प्रकार ॥ चंद्र कला सम बढ़े कुंवरजी, सुन्दर अति सुकुमार ॥ धन० ॥ १३ ॥ कला बहोत्तर अल्प कालमें, सीख हुआ विद्वान ॥ प्रौढ़ पराक्रमी जान पिताने, किया व्याह विधि ठान ॥ धन० ॥१४॥ रूप कला यौवन वय सरीखी, सत्यशील धर्मवान ॥ सुदर्शन और मनोरमाकी, जोड़ी जुड़ी महान ॥ धन० ॥ १५ ॥ श्रावक व्रत दोनोंने लीना, पौषध और पचखान॥ शुद्ध भावसे धर्म अराधे, अढलक देवे दान॥ धन० ॥ १६ ॥ किया शेठने काल कुंवरने, जब पाया अधिकार ॥ पर उपकारी परदुःखहारी, निराधार आधार ॥ धन० ॥ १७ ॥ नगर शेठ पदराय प्रजा मिल, दिया गुणो दधि जान ॥स्वकुटुम्ब सम सब की रक्षा, करते तज अभिमान ॥ धन० ॥ १८ ॥ कपिल पुरोहित विविध विद्याधर, सुदर्शनसे प्रीत। लोह चुम्बक सम मिल्या परस्पर, सरीखे सरीखी

रीति ॥ धन० ॥ १९ ॥ पुरोहित नारी महा व्यभि-
चारी, कपिला कुटिल कठोर ॥ शेठ कीर्ति सुन
सुन्दर तनकी, व्यापो मन्मथ जोर ॥धन०॥ २० ॥
पति गये परदेश शेठ पै, बोली कपट विशेष ॥
पति हमारा अति बीमारा, चलो चलो तज शेष ॥
धन० ॥ २१ ॥ प्रीति बंधाना शेठ सियाना, आया
कपिला साथ ॥ अन्दर लेकर हाव भावसे, बोली
मन्मथ बात ॥ धन० ॥ २२ ॥ महिषी सींगमें
डांस डंक सम, लगे न इसको बोल ॥ दाव उपाय
से यहांसे निकलूं, करले मनमें तोल ॥ धन०॥२३
अपछर सम तुम नारी प्यारी, मम नव यौवन काय॥
कोन चुके ऐसे अवसरको, मिल्यो योग सुखदाय ॥
॥ धन० ॥ २४ ॥ हतभागी हूँ मैं सुन सुभगे,
अन्तरायके जोर ॥ संढपना है मेरे तनमें, व्यर्थ
मनोरथ तोर ॥ धन० ॥ २५ ॥ हे दुर्भागी जा
दुर्भागी, धिक मैं खोई बात ॥ धिक मेरे अज्ञान
पतिको, रहता तेरे साथ ॥ धन० ॥ २६ ॥ देव

गुरुकी मुझे प्रतिज्ञा, करु न तेरी बात ॥ तुम भी निश्चय नियम करोरी, लाज मेरी तुम हाथ ॥धन०॥ २७ ॥ नियम कराया बाहर आया, मन पाया विश्राम ॥ बाघिनके मुखसे मृग बचके, पाया निज आराम ॥ धन० ॥ २८ ॥ लिया नियमपर घर जानेका, जहां रहती हो नार ॥ निज घर रह-के धर्म आराधे, शियल शुद्ध आधार ॥धन०॥२६॥ नृप आदेश इन्द्र उत्सवे, चले सभी पुर बाहर ॥ सज शृङ्गारी चली नृप नारी, कपिला उसकी लार ॥ धन० ॥ ३० ॥ पांच पुत्र संग मनोरमाजी, चली बैठ रथ मांय ॥ कपिला निरखी अति मन हर्षी, रानीको बतलाय ॥ धन० ॥ ३१ ॥ सती सावित्री लक्ष्मी गौरीसे, अधिकी इनकी काय ॥ किस घर यह नारी सुखकारी, शोभा वरनी न जाय ॥ धन० ॥ ३२ ॥ राणी कहे सुण पुरोहि-ताणी, शेठ सुदर्शन नार ॥ सत्य शियल और नियम धर्मसे इसका शुद्ध आचार ॥ धन० ॥३३॥

मुंह मचकोड़ी तनको तोड़ी, हँसी कपीला उस बार ॥ भेद पूछती अति हठ धरती, कहो हँसी प्रकार ॥ धन० ॥ ३४ ॥ नारी नपुंसककी व्यभिचारी, जन्म्या पुत्र इन पांच ॥ तुम जो बोलो शीयलवती है, यही हँसीका सांच ॥ धन० ॥ ३५ ॥ कैसे जाना हाल सुनावो, कही बीतक सब बात ॥ राणी बोली मतिमन्द तोरी, हारी सुदर्शन साथ ॥ धन० ॥ ३६ ॥ छलकर तुझको छली सुघड़ने, तू नहिं पाया भेद ॥ त्रियाचरित्रका भेदन समझी व्यर्थ हुआ तुझ खेद ॥ धन० ॥३७॥ मुझसे जो नहिं छला जायगा, वह नर सबसे शूर ॥ सुर असुर नागेन्द्र नारीसे टले न उसका नूर ॥ धन० ॥ ३८ ॥ अरि मूर्खा मत बोलो ऐसो, नारी चरित जो जाने ॥ सुर असुर योगिन्द्र सिद्धको, पलक डाल वश आने ॥ धन० ॥ ३९ ॥ व्यर्थ गर्व मत धरो रानीजी, मैं सब विधि कर छानी ॥ सुदर्शन नहिं चले शीलसे, यह बात लो मानी ॥ धन० ॥

४० ॥ जो मैं नारी हूँ हुशियारी, सुदर्शन वश लाऊं ॥ नहिं तो व्यर्थ जगतमें जी के, तुझे न मुंह दिखलाऊं ॥ धन० ॥ ४१ ॥ सुदर्शनको जो वश लावो, तो तुम रंग चढ़ाऊं ॥ नारी चरितकी पूरी नायिका, कहके मान बढ़ाऊं ॥ धन० ॥४२॥ करी प्रतिज्ञा हो निर्लजा, क्रीड़ा कर घर आई ॥ धाय पंडितासे वात सुनाई, लोभसे वह ललचाई धन० ॥४३॥ घाट घड़ा नाना विध जब मन, एक उपाय न आया ॥ कौमुदी महोत्सव निकट आवे जब, काम करूं मन चाया ॥ धन० ॥ ४४ ॥ काम देवकी करी प्रतिमा, महोत्सव खूब मंडाया ॥ बाहिर जावे अन्दर लावे, सब जनको भरमाया ॥ धन० ॥४५॥ कार्तिक पूर्णिमा कौमुदी महोत्सव, नृप पुर बाहिर जावे ॥ सुदर्शनजी नृप आज्ञासे पौषध व्रतको ठावे ॥ धन० ॥ ४६ ॥ कर प्रपंच अभिया मुर्छाणी, नृप बोले युँ वाणी ॥ कोन उपाधि तुम तन बाधा, कहो कहो महरानी ॥धन०

॥ ४७ ॥ हुंहुंकार करे नृपनारी, शब्द न एक उचारे ॥ धाय पंडिता कपट चरित्रा, खोटी जाल पसारे ॥ धन० ॥ ४८ ॥ महाराजा तुम युद्धसिधाये राणी देव मनाये ॥ जो आवे सुखसे महाराजा, तो प्रतीति तुम पाये ॥ धन० ॥ ४९ ॥ कार्तिक पूर्णिमा महोत्सव पूरा, बिन बाहर नहिं जाऊं ॥ विसर गई ऐ नाथ साथ तुम ताके फल दरशाऊं ॥ धन० ॥ ५० ॥ आप कहो अरदास नाथ यों, माफ करो तुम देव ॥ महारानीको भेजूं महलमें करे तुम्हारी सेव ॥ धन० ॥ ५१ ॥ त्रिया चरित वश होके राजा, हाथ जोड़ सब बोला ॥ त्रिया चरित को देव न जाणे, भेद ग्रन्थने खोला ॥धन० ॥ ५२ ॥ कपट छोड़ रानी जब जागी, दासी बात बनाई ॥ भूपतको भरमाई महल गई, रानी हर्ष भराई ॥ धन० ॥ ५३ ॥ धन्य पंडिता तब चतुराई अच्छी बात बनाई ॥ आज महल ले आवो शेठ को, जोग बना सुखदाई ॥ धन० ॥ ५४ ॥ मूर्ति

लेकर गई बाहरको, पहरेदार भरमाई ॥ पौषध-शाला शेठ सुदर्शन, मूर्ति फेंक ले आई ॥ धन०॥ ५५ ॥ पौषध मौन शेठ नहिं बोले, बैठा ध्यान लगाई ॥ अभियाकर शृङ्गार शेठके, खड़ी सामने आई ॥ धन० ॥ ५६ ॥ हाथ जोड़ अमृतसम मीठा बोले मुखसे बोल ॥ मैं रानी तुमपुर जनमानी, सरखे सरखी जोड़ ॥ धन० ॥५७॥ कल्पवृक्ष सम काया धारी, मैं अमृतकी वेली ॥ मौन खोल निरखो मुझ नयना, ध्यान ढोंग दो मेली ॥धन०॥ ५८ ॥ करूं जतन तुम जाव जीव लग, प्राण बरोबर मान ॥ तन धन यौवन तुमपर अर्पन, अबसे लो यह जान ॥ धन० ॥ ५९ ॥ व्यर्थ जन्म मुझ गया आज लग, खबर न तुमरी पाई ॥ आज सुदिन यह हुआ शेठजी धाय पंडिता लाई ॥धन०॥ ॥ ६० ॥ बोले नहिं जब शेठ रानीने, लिया नेत्र चढ़ाई ॥ नयन बानको मारे खेंचके, पाँव घुघर घमकाइ ॥ धन० ॥ ६१ ॥ पहना शील सनाह शेठ

ने धीरज मनमें लाई ॥ ज्ञान खडगसे छेदे बानको, रानी गई मुरझाई ॥ घन० ॥ ६२ ॥ वर्षा ऋतुसम बनी भामिनी, अम्बर बद्ल बनाई ॥ हुंकारकी ध्वनि गाज सम, तन दामन दमकाई ॥ घन० ॥ ॥ ६३ ॥ अमोघ धारा बचन बर्षाती, चाह भूमि भिजाई ॥ मंग शैल सम शेठ सुदर्शन, भेद न न सके कोई ॥ घन० ॥ ६४ ॥ करुणा स्वरसे रोवे कामिनी, पूरो हमारी आश ॥ शरणगत मैं आई तुम्हारे, मानो मम अरदास ॥ घन० ॥६५॥ अवसर देख सेठ तब बोला, सुनो सुनो बह मात ॥ पंच मातमें तुम अग्रेसर, तज दो खोटी बात ॥ घन० ॥ ६६ ॥ तजदे यह तोफान सुदर्शन, मै नहिं तेरी मात ॥ भूखी कपिला ते भरमाई, मुझे छला तू चाहत ॥ घन० ॥ ६७ ॥ मेरू डगे धरती धूजे सया, सूर्य करे अन्धकार ॥ तो पण शील छोडूं नहीं माता, सच्चा है निरधार ॥ घन० ॥६८॥ सुनकर बचन नयन कर राता, बाघिन जेम विफ-

राया ॥ माने नहीं तुम मेरे वचन को, यमपुर देउ पहुंचाय ॥ धन० ॥ ६९ ॥ बात हाथ है सुन रे बनिया, अब भी कर तू विचार ॥ रूठी कालकतरनी हुँ मैं, तू ठी अमृत धार ॥ धन० ॥ ७० ॥ महा बातसे मेरू न कंपे, अभियासेती शेठ ॥ ज्ञान वैराग्य आत्मबल बलिया, मैं यह सबमें जेठ ॥ धन० ॥ ७१ ॥ त्यागा तव शृङ्गार नारने, विकल करी निज काय ॥ शोर करी सामन्तको तेड़े, जुल्म महलके मांय ॥ धन० ॥ ७२ ॥ पुरजन सह नरनाथ बागमें, मुझे अकेली जान ॥ महा लम्पट मुझ तनपर धाया, मैं रखा धर्म अभिमान ॥धन० ॥ ७३ ॥ पुर मंडन यह शेठ सोभागी, घर अपछर सम नार॥ आंवे आंक न लागे कदापि, शेठ छोड़े किम कार ॥ धन० ॥ ७४ ॥ शोच करे सरदार रानी तब, बोली कठिन करार ॥ रे रजपूत रंक होय क्यों, करते ढीलमढाल ॥ धन० ॥७५॥ सुभट शेठ को पकड़ राय पै, लाये खास हजूर ॥ देख शेठकी

देह राय मन, हो गया चकनाचूर ॥ धन० ॥ ७६॥
कंचन ऊपर कीट लगे किम, सूर्य करे अन्धकार ॥
चन्द्र आग वर्षावे तथापि, शेठ चले न लिगार ॥
धन० ॥ ७७ ॥ पास बुला यों नरपति पूछे, कहो
किम बिगड़ी बात ॥ अगर सांच मैं बात कहूँ तो,
होवे मातकी घात ॥ धन० ॥ ७८ ॥ पुण्य पाप है
किया जो मैंने, वे हैं मेरे साथ ॥ मौन रहे नहीं
बोले शेठजी, नरपतिसे कुछ बात ॥ धन० ॥७६॥
बहुत पूछनेपर नहीं बोले, तब नृप जानी सांची ॥
आये महल निज नार देखने, वो सूती खूंटी
खांची ॥ धन० ॥ ८० ॥ बांह पकड़ नृप बैठी कीनी
ते बोली रीस भराय ॥ धिक है तुमरे राज कोष
जहाँ, लम्पट बणिक बसाय ॥ धन० ॥८१॥ देखो
यह मम गात वणिकने, कैसे नाखे हाथ ॥ शील
रख्यो मैं नाथ और तो,बिगड़ी सारी बात ।।धन०॥
८२ ॥ मैं जीवूं या शेठ जियेगा, निश्चय लेवो
जान ॥ सुन नारीके वचन रायके, मनमें आई तान॥

धन० ॥ ८३ ॥ कोप करि कहे राय शेठको, देवो शुलि चढ़ाय ॥ धिक् २ नारी जाल कोय कांइ, नृप को दिया फंसाय ॥ धन० ॥ ८४ ॥ सुभट शेठको पकड़ शुलिका, एहनाया श्रृङ्गार ॥ नगर चोवटे ऊभो करके, बोले यों ललकार ॥ धन० ॥ ८५ ॥ यों सुदर्शन शेठ नगरको, धर्मी नाम धराय ॥ पर तिरियाके पापसे सयो, शूली चढ़वा जाय ॥ धन० ८६ ॥ पड़ी नगर जब खबर लोग मिल, आये राय दरबार ॥ राख राख महाराज शेठको, विनवे वार-म्बार ॥ धन० ॥ ८७ ॥ दाता रा सिर सहेरो सरे, पुरजन जीवन सार ॥ सुदर्शन जो चढ़े शुली तो, जीना हमें धिक्कार ॥ धन० ॥ ८८ ॥ व्योम फूल सम बात बनी यह, सेठ न मूके शील ॥ नारीवश महाराज आज मत, डालो धर्मको पील ॥ धन० ॥ ८९ ॥ झूठा मुक्का वेन जगतमें, यह सच्चा लो जान विध २ से मैं पूछा शेठको उखलत नहीं जवान ॥ धन० ॥ ९० ॥ चार ज्ञान चउदे पूरव धर मोहं

उदय गिर जाय ॥ शेठ विचारो कौन गिनत-
में यों लो चित समझाय ॥ धन० ॥ ६१ ॥
तुमही पूछो सेठ कहे कुछ, उस पर करें विचार।
नहीं बोले तो शुली देनेका, सच्चा है निरधार ॥
धन० ॥६२॥ महा भाग तुम मुखड़े बोलो, जो है
सच्ची बात ॥ बिन बोल्या से सेठ सुदर्शन, होत
धर्मकी घात ॥ धन० ॥ ६३ ॥ सत्य धर्मका मर्म
जानके, रख्या मौनको धार ॥ हार खाय जन मनो-
रमा को, कहा सभी निरधार॥धन०॥६४॥तन सुर-
झाई मुर्च्छा आई, पड़ी धरणी कुमलाई ॥ पांचों
पुत्र तब मा-मा करते, पड़े गोदमें आई॥धन०॥६५॥
चेत लई चींते जब मनमें, हुई न होवे बात ॥
शील चुके नहीं पति हमारो, नियम धर्म विख्यात
॥ धन० ॥ ६६ ॥ नही निकली घर बाहर शेठानी,
धीरज मनमें धार ॥ दियो बोध पांचों पुत्रन को,
एक धर्म आधार ॥ धन० ॥ ६७ ॥ सत्य नमरता
सुनो पुत्र तुम, झूठ न मुझे सुहाय ॥ आज शेठ

सूलीसे उगरे, तो मैं निरखूं जाय ॥ धन० ॥९८॥ धर्म रूप पतिकी पत्नी मैं, उस पर चढ़ा कलंक ॥ सूर्य ग्रसा है आज राहुने, जगमें व्याप्या पंक ॥ धन० ॥९९॥ धर्मध्यान दो दान लालजी, पाप राहु टल जाय ॥ पिता तुम्हारे सुदर्शनजी, रवीरूप प्रगटाय ॥ धन० ॥ १०० ॥ माता पुत्र मिल ध्यान लगाया, प्रभु तेरो आधार ॥ धन बचे आज ये पिता हमारे, होवे जय जयकार ॥ धन० ॥ १०१ ॥ कोई प्रशंसे कोई निन्दे, शेठ शुलीपर जाय ॥ लाखों नर रहे देख तमाशा, शेठ न मन घबराय ॥धन०॥ ॥ १०२ ॥ सागारी अनशन व्रत लीनो पाप अठारह त्याग ॥ जीव खमाये शान्ति भावसे, द्वेष न किसमें राग ॥ धन० ॥ १०३ ॥ महा योगेश्वर धरे ध्यान त्यों, जिन मुद्राको धार॥ ध्यान धरे नवकार मन्त्रका, और न कोई विचार ॥ धन० ॥ १०४ ॥ इसी मन्त्रके ध्यान शेठने, तजे पूर्व भव प्राण ॥ डिगे देव सिंहासन उससे, महिमा मन्त्र की जान

॥ धन० ॥ १०५ ॥ शील सत्य अरु दया साधना, लगी मन्त्रके साथ ॥ हिए हुलसते देव गगनमें, आये जोड़े हाथ ॥ धन० ॥ १०६ ॥ सुभट शेठको धरे शूलीपर, हाहाकारका नाद ॥ शूली स्थान पै हुआ सिंहासन, बजे दुन्दुभी नाद ॥धन०॥१०७॥ छत्र धरे और चामर विजे, वर्षें कुसुमा धार ॥ ध्वजा उड़त है बीज्या जयन्ती, सुर बोले जयकार ॥ धन० ॥ १०८ ॥ मनमें सोचे शेठ सुदर्शन, शीलवन्त शिरताज ॥ धिक् धिक् है अभिया रानी को, निपट गमाई लाज ॥ धन० ॥ १०९ ॥ जग जन मुखते करते कीर्ति, गई रायके पास ॥ दधिवाहन नृप आया दौड़के, धर मनमें हुल्लास ॥ धन० ॥ ११० ॥ खमो खमो अपराध हमारा, बार बार महा भाग ॥ धर्म मर्म नहीं जाना तुम्हारा, नारी चाले लाग ॥ धन० ॥ १११ ॥ सुनी बात जब मनोरमाने, पुलकित अङ्ग माय ॥ पांच पुत्र संग पति दर्शनको, शीघ्र चाल कर आय ॥धन०॥११२॥

राय प्रजा मिल पतिव्रताको, सिंहासन बैठाय
दम्पति जोड़ा देख देव नर, मनमें अति हर्षाय ॥
॥ धन० ॥ ११३ ॥ जय जय हो सुदर्शन शेठको,
जय मनोरमा मात ॥ धर्म तीर्थकी जुड़ी जातरा,
पुरजन बहु हर्षात ॥ धन० ॥ ११४ ॥ शाह घरे
सब आये बधाये, मोती चौक पुराय ॥ देव गये
निज स्थान रायजी, बोले मंगल वाय ॥धन०॥११५॥
धर्म मंडना पाप खंडना, तुम चरणे सुपशाय ॥
हुई न होवे इस जग मांहि, सब जन साख पुराय
॥ धन० ॥ ११६ ॥ नहीं चीज जगमें कोइ ऐसी,
चरन चढ़ाऊं लाइ ॥ तथापि मुझ पै मेहर करीने,
मांगो तुम हुलसाइ ॥ धन० ॥ ११७ ॥ राय तुम्हारे
रहते राजमें, मिला धर्मका सहाय ॥ और कामना
मुझे न कुछ भी, माता साता पाय ॥धन०॥११८॥
सुनी शेठके बैन सभी जन, अचरज अधिको पाय॥
शत्रुको समभाव दिखाया, महिमा वर्णी न जाय ॥
धन० ॥ ११९ ॥ एक सभासद् कहता सुनिये, शेठ

गुणोंकी खान ॥ नम्र भाव और दया भावसे सबका रखता मान ॥ धन० ॥ १२० ॥ जो अपनेको लघु समझता, वो ही सबमें महान ॥ गुरुता की अकड़ाइ रखता, वो सबमें नादान ॥ धन० ॥१२१॥ स्वारथ रत हो करे नम्रता, यही कुटिल की बान ॥ बिना स्वार्थही करे नम्रता, सज्जन जन गुणवान ॥ धन० ॥ १२२ ॥ यद्पि रानी महा अज्ञानी, कीना महा अकाज ॥ तथापि शेठ तुम्हारे खातिर, अभय देऊंगा आज ॥ धन० ॥१२३॥ सुनी बात अभिया हुई सभिया, पापका यह परिणाम ॥ गले फांस ले तजे प्राणको, गमाया अपना नाम ॥धन०।१२४॥ धांय प्राण ले भगी महलसे, पटना पहुंची जाय ॥ वेश्या घरमें नीच भावसे, रहके उदर भराय ॥ धन०॥१२५॥ अवसर देख शेठ मन दृढ़ कर, लीनो संयम भार ॥ उग्र विहार विचरतां आया, पटना शहर मजार ॥ धन० ॥ १२६ ॥ देख मुनिको धाय-पंडिता, मन में लाई रोष ॥ हीरनी वेश्या करी

समीक्षा, बहकाई भर जोष ॥ धन० ॥ १२७ ॥ कलाकुशल जबही तुम जानुं, इससे बिलसो भोग। ऐसा नर नहीं इस दुनिया में, रूप कला गुन योग ॥ धन० ॥ १२८ ॥ बनी कपट श्राविका वेश्या, मुनि भिक्षा को आया ॥ अन्दर ले के तीन दिवस तक, नाना विधि ललचाया ॥ धन० ॥१२९॥ ध्यान ध्रुव जब रख्या मुनीश्वर, वेश्या तज अभिमान ॥ बन्दन कर मुनीजीको छोड़े, बनमें ठाया ध्यान ॥ धन० ॥ १३० ॥ अभियाव्यंतरी आय मुनिको, बहुत किया उपसर्ग ॥ प्रतिकूल अनुकूल रीतिसे, अहो कर्मका वर्ग ॥ धन०॥१३१॥ मुनी रंगमें रंगी गणीका, पाई सम्यक् ज्ञान॥ शुद्ध हृदयसे कृतपापों का पश्चाताप महान॥धन०॥१३२॥ धाय पंडितासे कहती वेश्या, मुनी गुण अपरम्पार ॥ दम्भ मोह अब हटा है मेरा, पाई तत्वका सार ॥ धन० ॥ ॥१३३॥ अब ऐसा शृङ्गार सजूंगी, तज आभूषण भार ॥ सोना चांदी हीरा मोतीका, लूंगी नहीं

आभार ॥ धन० ॥ १३४ ॥ कज्जल टीकी पान तजूंगी मेहदी प्रेम हटाय ॥ सत्य प्रेमके रङ्गमें रङ्गकर, दिल मुनीजी में लगाय ॥ धन० ॥ १३५ ॥ जग-तारक जिस पथसे गये है, लूंगी धुली उठाय ॥ तन पे मलके पावन बनके, सज्ज करूंगी काय ॥ धन० ॥ १३६ ॥ मुनि विरहमें आंसु बहाऊं, येही मुक्ताहार ॥ ऐसी सजीली बनके रंगीली, पाऊं भव जल पार ॥ धन० ॥ १३७ ॥ सम्यक सहन किया मुनिजीने, धरतां शुकल ध्यान ॥ क्षपकश्रेणी मोह नाश कर, पाया केवल ज्ञान ॥ धन० ॥ १३८ आये देवता महोत्सव करने, करते जय जयकार ॥ देवे देश ना प्रभु सुदर्शन, भवी जीव हितकार ॥ धन० ॥ १३९ ॥ सुलट गई अभियाव्यंतरी भी, पाई सम्यक ज्ञान ॥ छुरी छेदने गई पारसको, कनक रूप हुई जान ॥ धन० ॥ १४० ॥ हाथ जोड़ बन्दना कर बोले, धन्य धर्म अवतार ॥ खमो-खमो अपराध हमारा, मै दुर्भागन नार ॥ धन० ॥१४१॥

नीचोंमें अति नीच कर्ममें, कीना पातिक पूर ॥ दिया दुख मैंने महामुनिको, कर कर कर्म करूर ॥ धन० ॥१४२॥ मंगल गावे देवी देवता, मुनि गुन अपरंपार ॥ महा पातकी सुधरी व्यन्तरी, पाई समकित सार ॥ धन० ॥ १४३ ॥ ग्राम नगर पुर पाटन विचरत, किधा धर्म उद्धार ॥ भव जीव उद्धार मुनिजी, पहुंचे मोक्ष मुजार ॥धन०॥१४४॥

१९८० संवत्सरे घाटकोपरे चातुर्मास्ये
पूज्य श्री जवाहिराचार्येण निर्मितमिदं चरित्रं
॥ समाप्तम् ॥

चौवीसी लावणी ।

अरिहन्त सिद्ध आचार्य्य उपाध्याय, साधु समरणा, तीर्थंकर रतनारी माला सुमरण नित्य करणा ॥ समरिये माला मेरी जान समरिये ॥ ज्यों कटे कर्मका जाला, ए जीवतणा रखवाला, ध्यान तीर्थंकरका धरना रे, ॥ध्यान०॥ पाँच पद चौवीस जिणन्दका, नित्य लीजे सरणा ॥१॥ ए आंकड़ी ॥

श्रीऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, अति आ-
नन्द करना। सुमति पद्म सुपार्श्व चन्द्रप्रभ, दास
रहूं चरणा। चरण नित्य बन्दू मेरी जान चरण नित्य
बन्दू॥ ज्यों कटे कर्मका फन्दा, तुम तजो जगतका
धन्दा, दीठा होय नयन अमी तो ठरनारे ॥दीठा०॥
पाँच पद० ॥२॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य
हृदय माहे धरना॥ विमल अनन्त धर्मनाथ शान्ति
जी दास रहूँ चरणा॥ जिनन्द मोहि तारो, मेरी
जान जिनन्द मोहि तारो॥ संसार लगे मोहिखारो
वैराग्य लगो मोहि प्यारो, मैं सदा दास चरणारो,
नाथ जी अब कृपा करणारे ॥नाथ०॥ पाँच पद०
॥३॥ कुन्थु और मल्लि मुनिसुव्रतजी, प्रभु तारण
तरणा॥ नमि नेम पार्श्व महावीरजी, पाप परा
हरणा॥ तरे भव्य प्राणी मेरी जान तरे भव प्राणी॥
संसार समुद्र जाणी, सुणो सूत्र सिद्धान्तकी वाणी,
पाप कर्मसे अब तो डरणारे ॥पाप०॥ पांच पद०॥
॥४॥ इग्याराजी गणधर विहरमान वान्याशुं मिटे

मरणा॥ अनन्त चौवीसीको नित्य २ वान्दू, दुर्गति नहिं पडणा॥ मिथ्या अन्ध मेटो, मेरी जान मिथ्या-अन्ध मेटो॥ रहो धर्म ध्यानमें सेंठो, जिनराज चरण नित भेंटो॥ दुख दारिद्रय सब तो हरणा रे॥दुख०॥ पांच पद०॥ ५॥ जैन धर्म पाया विन प्राणी पाप सुं पिण्ड भरना॥ नीठ नीठ मानव भव पायो धर्म ध्यान करना॥ करो शुद्ध करनी, मेरी जान करो शुद्ध करनी, निर्वाणतणी निसरनी, तुम तजो पराई परणी, एक चित धर्म ध्यान करना रे॥ एक०॥ पांचपद०॥ ६॥ विहरमान तीर्थंकर गणधर, मनमा शुद्ध करणा॥ पलपारधी कहे कल्याणी किया तवन वरणा वरण, गुण कीना। मेरी जान वरण गुण कीना। जैसा अमृत प्याला पीना॥ एक शरण धर्मका लीना एक लाल चन्द गुण कीना, करो नवतत्वका निरणा रे॥ करो०॥ पांच पद०॥ ७॥ इति॥

श्रीलघुसाधु वन्दनानी सज्झाय।

साधुजीने बन्दना नित्य नित्य कीजे, प्रह उगन्ते सूर रे प्राणी। नीच गतिमाते नही जावे, पामे ऋद्धि भरपूररे प्राणी ॥सा०॥ १ ॥ मोटा ते पंच महाव्रत पाले छकायारा प्रतिपाल रे प्राणी। भ्रमर भिक्षा मुनि सूजति लेवे, दोष बयालिस टाल रे प्राणी ॥सा०॥२॥ ऋद्धि सम्पदा मुनि कारमी जाणे, दीधी संसारने पूठ रे प्राणी॥ एरे पुरुषांरी वन्दना करतां आठ कर्म जाय टूटरी प्राणी ॥३॥ एक एक मुनिवर रसना त्यागी, एक एक ज्ञान भण्डार रे प्राणी। एक एक मुनिवर वैयावच्च वैरागी, एनागुणनो नावे पार रे प्राणी ॥सा०॥४॥ गुण सत्ताविश करीने दीपे, जीता परिसा बावीश रे प्राणी। बावन तो अनाचरण टाले, तेने नमावु मारुं शीशरे प्राणी। ॥ सा० ॥ ५ ॥ जहाज समान ते सन्त. मुनीश्वर भव्य जीव बेसे आयरे प्राणी। पर उपकारी मुनि दाम न मांगे देवेते मुक्ति पहुंचाय रे प्राणी ॥सा०॥६॥

ए चरणे प्राणी सातारे पावै, पावे ते लील विलासरे प्राणी ॥ जन्म जरा एने मरण मिटावे नावै फिरि गर्भांवासरे प्राणी ॥ सा० ॥ ७ ॥ एक वचन ए सतगुरुकेरो, जो वेसे दि्लमांथ रे प्राणी । नर्कगति मां ते नहि जावे, एक कहै जिनरायरे प्राणी ॥सा० ॥ ८ ॥ प्रभात उठीने उत्तम प्राणी, सुणो साधांरो व्याख्यान रे प्राणी । ए पुरुषां री सेवा करतां, पावे ते अमर विमान रे प्राणी ॥सा०॥६॥ संवत अठारने वर्ष अड़तीसे बुसीते गाम चौमास रे प्राणी मुनि आशकरणजी एंणी पेरे जम्पै, हुंतो उत्तम साधारो दासरे प्राणी साधुजीने बन्दना नित नित कीजै० ॥ १० ॥

दोहा-अक्षर पद हीणो अधिक, भूलचूक कहिं होय।
अरिहन्त आतम साखसे मिच्छामि दुक्कड़ मोय ॥
पोथी जतने राख जो तेल अग्नि सुं दूर ।
मूर्ख हाथ मत दीजिये जोखम खाय जरूर ॥

इति सम्पूर्णम् ॥